मार्च 2010 ■ Rs.20/-

चन्दामामा

Visit : www.chandamama.com/parle

PARLE
कच्चे आम का झेरॉक्स
Kaccha
mango bite
पारले कच्चा मैंगो बाइट से पाइए कच्चे आम का खट्टा-मीठा स्वाद. असली कच्चे आम के स्वादवाली कैण्डी, जो है असली कच्चे आम का झेरॉक्स. इसका मुंह में पानी लोनेवाला स्वाद चुटकियों में खट्टे-मीठे कच्चे आम की चाहत को पूरा करे. सिर्फ़ पारले कच्चा मैंगो बाइट के साथ पाइए असली कच्चे आम की मस्ती.
Kaccha™
mango bite®
everest /PP/92-10 hin
Visit : www.chandamama.com/parle

सम्पुट-६१ मार्च २०१० सञ्चिका-३

अपनी पत्रिका का मूल्यांकन कीजिए!

विषम के पास दी गयी बॉक्स को टिक कीजिए, बिन्दु रेखाओं से काटिए और अपना फीडबैक हमें भेजिए।

नाम.................................... आयु ....

पता...

....

....

फोन................. ई-मेल...............................

उत्कृष्ट	सर्वोत्तम	बेहतर	अच्छा	सामान्य
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐

Editor, CHANDAMAMA INDIA LTD.,
B-3, Lunic Industries, Cross Road 'B',
MIDC, Andheri (East), Mumbai-400093.

H

अंतरंग

चन्दामामा

०६ पाठकों का पन्ना

क्लासिकी

०८ सिद्धार्थ का गणित
०९ चंदन का ऋण
१५ आर्मे -२
१९ उत्तरकाण्ड
२५ मित्र भेद-४

क्रियाकलाप

२९ चित्र कैप्शन प्रतियोगिता
३० तेज़ फार्मूला
३१ मूरेका
३२ चन्दामामा सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी-१४

लघु कथाएँ

३३ अचूक वाणी
३७ नालायक़ नहीं, लायक़ है
४२ सास बहु के झगड़े
४६ अजीब सपना
४९ विनय का शास्त्र ज्ञान
५० सुधीर शहर गया !

भारत निर्देशिका

५३ भारत दर्शक
५४ वारिस
५८ चूँ चूँ का डिब्बा

धारावाहिक

६० पाताल दुर्ग
६६ वापसी

समाचार

७२ समाचार झलक
६३ उदीयमान सितारा

विविध

७४ हँसते-हँसते हो जा लोटपोट

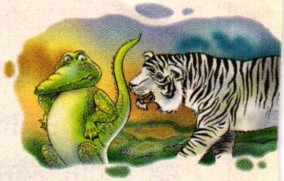

© The stories, articles and designs contained in this issue are the exclusive property of the Publishers. Copying or adapting them in any manner/ medium will be dealt with according to law.

छुट्टियों के स्वागत में

हैलो दोस्तो !

व्रूम ....कुछ इस तरह दिन गुज़र रहे हैं! परीक्षाओं की दृष्टि हम पर है और छुट्टियाँ हमारे इंतज़ार में कोने में खड़ी हैं कि कब हम उनका आनंद उठाएँगे। महीने की शुरुआत हम रंगों की फुहार से करते हैं क्योंकि हम होली मनाते हैं। एक तरह से यह त्योहार स्वयं भारत - एक अद्वितीय देश जो विभिन्न रंगों तथा आभाओं का एक मेल है, का प्रतिनिधित्व करता है।

इस महीने २४ मार्च को हम भगवान श्री राम तथा ३० मार्च को श्री हनुमान की जयंती मनाते हैं। रामायण अभी भी प्रासंगिक है तथा हम आज भी इससे बहुत कुछ सीख सकते हैं। हम इस माह में बहुत से अंतर्राष्ट्रीय दिवस भी मनाते हैं - महिला अधिकार तथा अंतर्राष्ट्रीय शांति हेतु संयुक्त राष्ट्र दिवस, जातीय भेदभाव बहिष्करण हेतु अंतर्राष्ट्रीय दिवस, विश्व जल दिवस, विश्व मौसम दिवस, विश्व तपेदिक दिवस तथा विश्व रंगमंच दिवस।

अपने वादे के अनुसार हम कला पुस्तक जो एक लंबे समय से हमारे महान कलाकारों द्वारा रचित विभिन्न कलाकृतियों का एक संकलन है, प्रकाशित करने जा रहे हैं। अब अपनी साँसें थाम कर बैठिए ...हम आपकी छुट्टियों के मौसम के लिए लोककथाओं का एक वार्षिकांक भी लाने वाले हैं!! आप इस अंक के लिए पहले से क्रयादेश करके एक विशिष्ट छूट प्राप्त कर सकते हैं।

अब छुट्टियाँ नज़दीक हैं और हम अपने नियमित ग्राहकों को आनंद उठाने के और अधिक मौके देना चाहते हैं। वे सभी जो इस माह नियमित ग्राहक बनेंगे उन्हें चन्दामामा की ओर से एक विशिष्ट उपहार प्राप्त होगा। अगर आप पहले ही एक नियमित ग्राहक हैं तथा आप एक और पत्रिका के नियमित ग्राहक बनते हैं तो आपको एक विशिष्ट छूट तथा उपहार प्राप्त होगा। रोमांचकारी है न? अपनी कलम उठाइए और फॉर्म भरना शुरू कीजिए!

हम पत्रिका तथा हमारी प्रकाशित पुस्तकों के विषय में आपके विचारों की कद्र करते हैं। कृपया हमें लिखते रहिए। तब तक इस माह का खज़ाना आपके अभियान के लिए बिखरा पड़ा है . - ***सम्पादक***

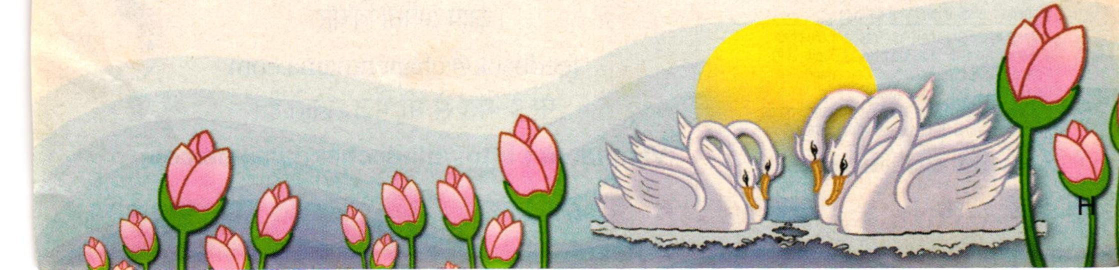

मार्च २०१० Rs. 20/-
Founded by **B. Nagi Reddi and Chakrapani**

Editor & Publisher : Prashant Mulekar
Associate Editors : Sowmya Rajendran, R. Vaasugi, A. Prem Kumar
Senior Artists: K.C. Sivasankaran (Sankar), Gandhi Ayya, P. Mahesh
Artist : T. Venkatesan
Creative Writer : R. Rama
Layout Designer : B. Thirumal, K. Narendra
Sanjay B Thorat : ***Head - Sales and Circulation***
CHANDAMAMA INDIA LTD.,
B-3, Lunic Industries, Cross Road 'B', MIDC, Andheri (East), Mumbai-400093
Phone +91 22 28312872 / 28311849
Mobile +91 9821017787
email : sanjay.thorat@chandamama.com
Rajendra K Jadhav : ***Asst. Manager - Circulation***
Mobile +91 9320565048
email : rajendra.jadhav@chandamama.com
Subhankar Rej, ***Asst. Manager - Sales & Circulation (East)***
Email: subhankar.rej@chandamama.com
Mobile +91 9474916267
Bengaluru :
CHANDAMAMA INDIA LTD., 18, 10th Cross, Mayura Street, Papanna Lay Out, Outer Ring Road, RMV 2nd Stage, Bangalore-560094,
Phone +91 80 6655 1000
Chennai : **K. Ravishankar,** ***Sales Officer - Circulation,*** Mobile +91 98414 00981
email : ravishankar.k@chandamama.com
Business Development : **Ananth Prakash**
Mobile +91 98362 82202, 98351 82202
email : ananth.prakash@chandamama.com
Content Head - Online : **Sowmya Bharadwaj**
email : online@chandamama.com
Marketing Enquiries :
email : marketing@chandamama.com
Advertisement :
email : sales@chandamama.com
Subscription Queries:
e-mail : subscription@chandamama.com
Customer Cell : A B Sairam
Mobile: +91 9841983774
e-mail : sairam.ab@chandamama.com
Head Office : **CHANDAMAMA INDIA LTD.,**
B-3, Lunic Industries, Cross Road 'B', MIDC, Andheri (East), Mumbai-400093
Phone +91 22 28312872 / 28311849
Email : chandamama@chandamama.com
Website : www.chandamama.com

Printed and Published by Prashant Mulekar at Shruti Art Pvt. Ltd., Unit No.1, Gupta Mills Estate, Devidayal Industrial Compound, Darukhana, Reay Road (East), Mumbai - 400 010 on behalf of Chandamama India Limited, B-3, Lunic Industries, Cross Road 'B', MIDC, Andheri (East), Mumbai-400093. Editor : Prashant Mulekar

पाठकों का पन्ना

चन्दामामा पत्रिका मुझे अत्यंत प्रिय है। मेरे छात्र जीवन में इसने न केवल मेरा मनोरंजन किया अपितु मेरे शब्द ज्ञान को बढ़ाया। अब मेरा बेटा इससे लाभान्वित हो रहा है। इसकी कहानियाँ न केवल मानव मूल्यों के संवर्धन में सहायक हैं अपितु भारतीय संस्कृति की परिचायक भी हैं। यह अपने देश की भाँति ही हमारे हृदय के अत्यंत निकट है। इस के अनिर्वचनीय योगदान के लिए चन्दामामा का बहुत-बहुत धन्यवाद। **- स्नेहलता गौड़, रुड़की।**

चन्दामामा मेरी बहुत ही पसंदीदा पत्रिका है। मुझे इसमें प्रकाशित लोक कथाएँ बहुत ही अच्छी लगती हैं। हिमाचल की लोक कथा सिंह मित्र मुझे बहुत रोचक लगी। रामायण की ही भाँति यदि महाभारत की कथा अगर पढ़ने को मिलेगी तो बहुत ही अच्छा लगेगा। इससे हमें अपने देश की पौराणिक कथाओं को जानने व समझने का मौका मिलता है। वर्तमान जीवन की खामियों को दिखाने वाली कहानी अनुनिर्वा एक बहुत ही शिक्षाप्रद कथा है जिससे हम सबक ले सकते हैं। काश चन्दामामा इसी प्रकार हमेशा हमारा मार्ग प्रशस्त करता रहे। **- ईशान शर्मा, फरीदाबाद**

चन्दामामा मुझे बहुत पसंद है। वेताल कथाएँ, लोक कथाएँ, अकबर बीरबल की हास्य कथाएँ तथा समय-समय पर प्रकाशित अन्य कथाएँ तर्क शक्ति को बढ़ाने वाली तथा परंपरा से परिचय कराने वाली हैं। यदि चन्दामामा (हिन्दी) पत्रिका का आकार थोड़ा बड़ा कर दिया जाए तो पत्रिका अधिक उपयोगी सिद्ध होगी।

- अतुल कुमार, रुद्र प्रयाग।

आप अपना विचार
feedback@chandamama.com
पर ई-मेल से भी भेज सकते हैं।

Visit us at : http://hindi.chandamama.com

फेबर कैसल

1761 से

छोटा कलाकार

फैब्रिक कलर और त्रिआयामी आउटलाइनर

प्रतियोगिता - ३ (चमचमाते गिफ़्ट टैग)

खुद ही अपने चमचमाते गिफ़्ट टैग बनाओ और उन्हें अपने दोस्तों और परिवार के लिए खास रुप दो!

निर्देश:

एक मोटा सफेद काग़ज़ लेकर उस पर अपनी मनपसन्द डिज़ाइन बनाओ

एक छेद करके उसमें साटन का रिबन डालो

उसपर कुछ आकृतियाँ बनाओ और काग़ज़ के निचले भाग को फेबर कैसल के फैब्रिक रंगों (जो क्लासिक, पर्ल, मेटैलिक और फ्लोरेसेंट के पैक्स में उपलब्ध हैं) से रंग दो।

इसे पूरी तरह सूखने दो और फिर आउटलाइन बनाकर फेबर कैसल के त्रिआयामी आउटलाइनर्स से उसमें रंगों के प्रभाव डालो। साटन के रिबन को भी उनसे सजाओ।

त्रिआयामी आउटलाइनर्स से तुम अपना व्यक्तिगत संदेश भी लिख सकते हो।

अपनी कल्पना का उपयोग करो और तीन अलग-अलग प्रकार के गिफ़्ट टैग बनाकर अपनी प्रविष्टियाँ भेजो

खुशियाँ गिफ्ट करते रहो !!!

फैबर कैसेल प्रमाण पत्र केवल 20 सर्वश्रेष्ठ प्रविष्टियों को दिए जाएँगे।

विजेताओं के फोटोग्रॉफ्स पत्रिका में प्रकाशित किए जाएँगे।

केवल फैबर कैसेल रंगों तथा श्री डाइमेंशनल आउटलाइनर्स के डिब्बे को (सामने का पैनल) चित्र पर चिपकाइए।

गिट हैम्पर्स जीतें
प्रथम पुरस्कार : 1500 रुपए
द्वितीय पुरस्कार : 500 रुपए
तृतीय पुरस्कार : 150 रुपए

10 सांत्वना पुरस्कार 100 रुपए

सभी ६ प्रतियोगिताओं में भाग लो और एक मेगा पुरस्कार जीतो !!

Email : info@faber-castell.co.in
website : www.faber-castell.co.in

Fill in Your complete details. Only completely filled forms are entitled for participation

Name: ______________________ Std: ________ School Add.: ______________________

Add. (Res.) : ______________________ Telephone: ______________

Mention any Faber-Castell products you use: ______________________

Send your entries to **Chandamama India Pvt. Ltd.,** B-3, Lunic Industries, Cross Road 'B', MIDC, Andheri (East), Mumbai-400093, Phone +91 22 28312872 / 28311849. Last Date: 27th Feb 2009
Judging of winners is at the sole discretion of Faber-Castell. Structure of gift hampers will be decided by **Faber-Castell (I) Pvt. Ltd.** Entries received will be the sole property of Faber-Castell
Paste the cartons (Front Panel) of the Faber-Castell Fabric colours & 3-Dimensional Outliners only. Kindly send your photographs with your entries

सिद्धार्थ का गणित

गौतम हेलापुरी का निवासी था। उसके एक बेटा और एक बेटी थी। बेटा सिद्धार्थ छः साल का था तो बेटी पावनी तीन साल की थी। कहते थे कि सिद्धार्थ पढ़ाई -लिखाई में बड़ा ही तेज़ है।

एक दिन, सुगंधिपुरी से उसका मामा माणिक अपने बहनोई, दीदी व बच्चों को देखने उनके घर आया। वह अपने साथ रे वड़ी के गोले ले आया। थैली में से उसने दस गोले निकाले और उन्हें सिद्धार्थ को देते हुए कहा। ''अरे सिद्धार्थ, समझ लो कि इनमें से आधे गोले तुमने अपनी बहन को दिये, तो कितने गोले बच जायेंगे?'' अपने भानजे की अक़्लमंदी की परीक्षा के उद्देश्य से उसने पूछा।

सिद्धार्थ ने फ़ौरन कहा, ''सात और होंगे मामाजी।'' माणिक को इस बात पर आश्चर्य हुआ कि उसके भानजे ने इतने साधारण गणित में भी ग़लती कर दी। उसने सिद्धार्थ से कहा, ''लगता है, तुमने मेरा सवाल ठीक तरह से समझा नहीं। तुम्हारे पास जो दस गोले हैं, उनमें से आधे, अगर तुम अपनी बहन को दोगे तो तुम्हारे पास कितने और गोले बच जायेंगे।''

''मामाजी, मैंने कहा न, मेरे पास सात और गोले होंगे,'' सिद्धार्थ ने मुस्कुराते हुए जोर देकर कहा।

''तुम तो बेवकूफ़ निकले। मैंने समझा कि तुम बड़े अक़्लमंद हो। तुम गणित जानते ही नहीं।'' माणिक ने चिढ़ते हुए कहा। ''गणित मैं बखूबी जानता हूँ, मामाजी। मेरी बहन बिल्कुल जानती नहीं है न,'' मुस्कुराते हुए उसने कहा।

माणिक का चेहरा फीका पड़ गया, पर अब उसे विश्वास हो गया कि उसका भानजा गणित में सिद्धहस्त है और लोगों का कहना भी सही है।

- रामकुमार

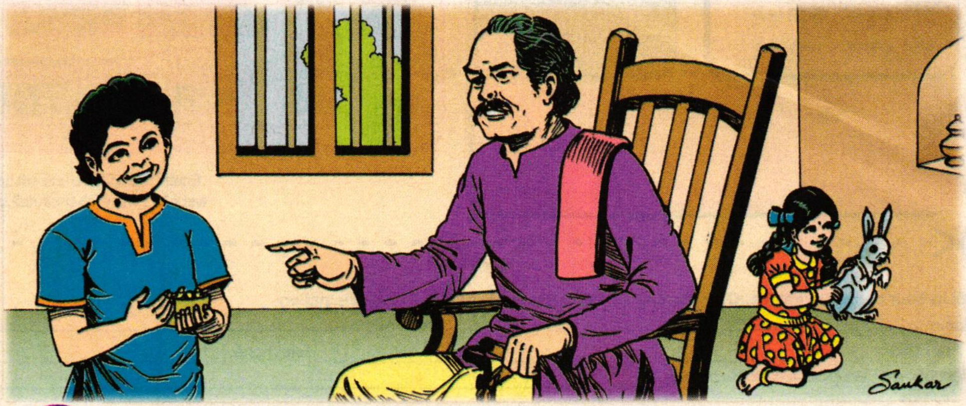

वेताल कथाएँ

चंदन का ऋण

धुन का पक्का विक्रमार्क पुनः पेड़ के पास गया। पेड़ पर से शव को उतारा और उसे अपने कंधे पर ड़ाल किया। फिर चुपचाप श्मशान की ओर धीरे-धीरे बढ़ने लगा। तब शव के अंदर के वेताल ने कहा, ''राजन, अनेक कष्ट झेल रहे हो, कड़ी मेहनत कर रहे हो, पर हर बार तुम अपने लक्ष्य में असफल हो रहे हो। फिर भी तुममें आग्रह रत्ती भर भी कम नहीं हुआ। कहीं ऐसा तो नहीं कि बिना सोचे - विचारे, दया भाव से प्रेरित होकर किसी अयोग्य की मदद करना चाहते हो। उदाहरण के लिए मैं तुम्हें चंदन की कहानी सुनाने जा रहा हूँ । अपनी थकावट दूर करते हुए उसकी कहानी ध्यानपूर्वक सुनो ।'' फिर वेताल चंदन की कहानी यों सुनाने लगाः

भाग्यनाथ, श्वेतास्य नामक गंधर्व राजा के यहाँ काम करता था। उसने सुप्रिया नामक एक अप्सरा से प्रेम किया । सुप्रिया ने उसे दंत से बनी एक सुंदर संदूकची देते हुए कहा, ''श्वेतास्य

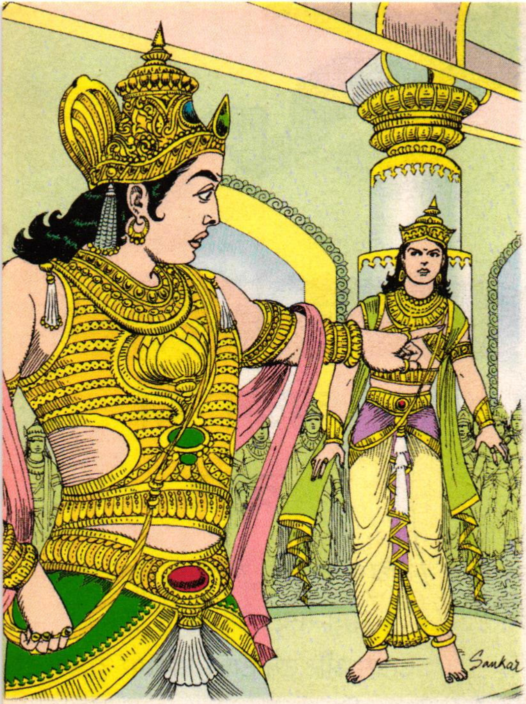

के कोषागार के कीमती पत्थरों को भरकर इसे मुझे दोगे तो मैं तुमसे विवाह करूँगी।''

भाग्यनाथ ने, यह बात श्वेतास्य से बतायी । उसने सोच-विचारने के बाद उससे कहा, ''मैं अपने कोषागार के क़ीमती पत्थरों से तुम्हें मारता रहूँगा। जितने पत्थरों की चोटों को तुम सह पाओगे, उतने पत्थर तुम्हारे हो जाएँगे।''

भाग्यनाथ ने शर्त मान ली। परंतु, पहली चोट को भी वह सह नहीं पाया । उससे दर्द सहा नहीं गया और रोक देने की विनती की । तब श्वेतास्य ने हँसते हुए कहा, ''मैं किसी भी हालत में अपनी संपदा किसी के सुपुर्द नहीं करता। तुम्हारा प्रेम अगर सचमुच ही सच्चा होता तो अवश्य ही तुम्हारी मदद करता ।''

''तुमने मुझे धोखा दिया । मेरे प्रेम की परीक्षा की यह पद्धति नहीं है । तुम्हारे पत्थर जो दर्द पहुँचाते हैं, वह कोई भी प्रेमी सह नहीं सकता।'' भाग्यनाथ ने दर्द-भरे स्वर में कहा ।

श्वेतास्य क्रोधित हो उठा । उसने फ़ौरन कह डाला, ''ग़लती तुम्हारी है और उल्टे मुझे धोखेबाज़ कह रहे हो। मैं क़ीमती पत्थरों से भरकर यह संदूकची तुम्हें दूँगा।

जब तक तुम उससे छुटकारा नहीं पाओगे, तब तक इस लोक में तुम्हारे लिए स्थान नहीं है।'' उसने भाग्यनाथ को शाप किया।

भाग्यनाथ, श्वेतास्य के पैरों पर गिरकर गिडगिडाने लगा, ''इस शाप को सह पाना मेरे लिए संभव नहीं है। मुझे विमुक्ति का मार्ग सुझाइये।''

श्वेतास्य को उसपर दया आ गयी। उसने कहा, ''भू लोक प्रेममय है। वहाँ जाओगे तो ऐसे महान प्रेमी तुम्हें मिलेंगेजो तुम्हें इस शाप से मुक्त कर सकेंगे।''

भाग्यनाथ संदूकची सहित भूलोक आया। वैरागी का वेष धारण कर लिया और सच्चे प्रेमी की खोज में लग गया। वह बहुत दिनों तक घूमता रहा। एक दिन उसे जनकपुर के चंदन के प्रेम के बारे में जानकारी मिली। चंदन खेती का काम करनेवाले राम का आख़िरी बेटा था।

राम हर दिन सबेरे-सबेरे ही खेत चला जाता है। उसके पिता, माँ और पत्नी घर के काम-काज संभालते हैं। राम के बड़े बेटे वीर ने गांव में ही किराने की दुकान खोली। यों उस परिवार

के सब लोग कोई न कोई उपयोगी काम करते रहते हैं। परंतु चंदन अव्वल दर्जे का सुस्त है।

शहर के निवासी विशाल नामक एक संपन्न व्यक्ति की इच्छा है कि अपनी बेटी मल्लिका का विवाह वीर से किया जाए। उसके बुलावे पर राम परिवार सहित शहर गया। वीर को मल्लिका अच्छी लगी। विवाह का मुहूर्त भी निश्चित हो गया।

तब चंदन ने, मल्लिका की बहन मनोहरी को देखा। चंदन को वह बहुत पसंद आयी। पर, जब मनोहरी को मालूम हो गया कि चंदन अव्वल दर्जे का सुस्त है, तो वह भूलकर भी उसे देखने नहीं लगी। इससे चंदन ने ठान लिया कि किसी भी हालत में उससे शादी करके ही रहूँगा।

एक दिन एकांत में वह उससे मिला और कहा, ''मैं तुमसे विवाह करना चाहता हूँ। क्या तुम्हें मंजूर है?'' मनोहरी ने तुरंत कहा, ''अगर तुम मेरे लिए एक नया घर खरीदकर दोगे तो अवश्य ही तुमसे विवाह करूँगी।'' निःसंकोच उसने कह डाला।

''ठीक है, नया घर खरीदकर दूँगा। तब तक तुम्हें किसी और से शादी करनी नहीं चाहिये,'' चंदन ने शर्त रखी।

''नया घर खरीदने में कितना समय लगेगा, साफ़-साफ़ बता देना,'' मनोहरी ने पूछा।

चंदन ने सोचकर कहा, ''तुम यहीं रहो। अपने दादा से पूछकर जवाब दूँगा।'' ''मेरे लिए घर खरीदने के लिए क्या तुम्हें अपने दादा की

अनुमति की ज़रूरत है?'' मनोहरी ने पूछा।

''अनुमति की बात नहीं। इसके लिए मुझे धन राशि की भी ज़रूरत है न?'' चंदन ने कहा।

''ऐसा कदापि नहीं हो सकता। मेरे लिए तुम्हें अपनी मेहनत के धन से घर खरीदना होगा।'' मनोहरी ने कहा।

चंदन पेशोपेश में पड़ गया। तब वह चुप रह गया, पर भाई की शादी के बाद उसने अपना दुखड़ा अपनी भाभी को सुनाया।

चंदन का कहा सुनकर मल्लिका चकित रह गयी। उसे मालूम था कि तीन चार संपन्न युवक उसकी बहन से शादी करने आगे आये, पर उनमें से कोई भी उसे पसंद नहीं आया।

मल्लिका ने यह विषय चंदन से कहा और कहा, ''इससे स्पष्ट हो जाता है कि मल्लिका धन

मुश्किल काम बताऊँगा। उन्हें पूरा करो। एक दिन में ही करोड़पति बन जाओगे।''

चंदन, बैरागी के पीछे-पीछे गया। गाँव के बाहर की एक पहाड़ी गुफ़ा में दोनों ने प्रवेश किया। अंदर अंधेरा ही अंधेरा था । बैरागी ने चंदन से कहा, ''यहाँ पद्मासन लगाकर बैठ जाओ। हनुमान का नाम जपते रहो। क्षण भर के लिए भी बिना सोये पूरा एक दिन गुज़ारो। तब मैं आकर तुम्हें बुलाऊँगाऔर बताऊँगा कि आगे क्या करना होगा।''

चंदन ने तुरंत दीक्षा शुरू कर दी। उस समय वहाँ उसे बिकट अट्टहास सुनायी पड़े। लगता था कि उसे कोई ज़ोर से मार रहा है। फिर भी चंदन पद्मासन लगाकर बैठा रहा। दूसरे दिन जब बैरागी ने अंदर प्रवेश करके उसे बुलाया, तभी उसने आँखें खोलीं।

के पीछे पागल नहीं है। तुमसे घर खरीदकर देने को कहा तो इसका यह मतलब हुआ कि वह तुम्हें चाहती है। मेरी बहन से ही शादी करने का निर्णय तुमने ले लिया हो तो तुम्हें मेहनत करके धन कमाना होगा। कोई और रास्ता नहीं दीखता।''

अब चंदन ने ठान लिया कि धन कमाऊँगा, नया घर खरीदकर मनोहरी को दूँगा। अब वह इस सोच में पड़ गया कि धन कमाने का क्या मार्ग है। ठीक इसी समय पर, गंधर्व भाग्यनाथ बैरागी के वेष में आया। उनके घर में उसने स्वादिष्ट भोजन किया और सबको आशीर्वाद दिया। चंदन ने उससे अपनी समस्या सविस्तार बतायी।

प्यार से उसे देखते हुए बैरागी ने कहा, ''वाह, तुम सच्चे प्रेमी हो। मेरे साथ चलो। तीन

जैसे ही उसने आँखें खोलीं, गुफ़ा प्रकाश से भर गयी। बैरागी ने उसकी प्रशंसा करते हुए कहा, ''शाबाश, चंदन, शाबाश! सामने की दीवार पर राक्षस की जो तस्वीर है, उसके पास जाओ। वह तस्वीर जो कहेगी, वैसा करना।''

राक्षस की तस्वीर बड़ी ही भयंकर थी। पर निर्भय होकर जब चंदन तस्वीर के निकट गया, वह ज़ोर से हँसती हुई कहने लगी। ''अपना दायाँ हाथ मेरे मुँह में रखो।''

बिना संकोच के चंदन ने उस तस्वीर के मुँह में अपना दायाँ हाथ रख दिया। तस्वीर ने अपना मुँह बंद कर लिया। चंदन को लगा कि

कोई उसके हाथ को चबा रहा है। उसे बहुत दर्द होने लगा। पर, उसने सह लिया। थोड़ी देर बाद तस्वीर ने मुँह खोलकर कहा, "मेरे पेट में तुम्हें एक चाभी मिलेगी। उसे मेरी नाभि में रख दो।"

चंदन ने चाभी निकाली और तस्वीर के कहे अनुसार किया। तुरंत गुफ़ा की दीवार बड़ी आवाज़ करती हुई दो भागों में टूट गयी। बैरागी, चंदन दोनों अंदर गये। वहाँ उन्हें लोहे की एक पेटी दिखायी पड़ी। बैरागी ने चंदन से कहा, "इस पेटी में करोड़ अशर्फियों के मूल्य के रत्न, वज्र आदि हैं।

इसका ढक्कन तुम्हें खोलना हो तो तुम जिसे बहुत चाहते हो, उसपर तुम्हें क़सम खानी होगी। अपनी मुट्ठी बंद करके अपना पूरा बल लगाकर पेटी को ज़ोर से धक्का देना होगा। इस प्रयत्न में हो सकता है, तुम्हारी ऊँगलियाँ टूट जाएँ, रक्त बहे, पर तुम्हें पीछे हटना नहीं चाहिये।"

चंदन ने, मनोहरी पर क़सम खायी, मुट्ठी कसकर बंद की और पेटी को ज़ोर से धक्का दिया। पर ढक्कन नहीं खुला। पर निराश हुए बिना चंदन पाँच छे बार पेटी को हाथों और पाँवों से धक्का देता रहा। उंगलियों में चोट आयी और रक्त बहने लगा। रक्त देखते ही वह बेहोश हो गया।

दूसरे ही क्षण पेटी का ढक्कन खुल गया। तब बैरागी, भाग्यनाथ के रूप में बदल गया और उसने चंदन को स्पर्श किया। चंदन को होश आ गया।

भाग्यनाथ ने अपनी कहानी सुनाते हुए कहा, "बेटे, तुम्हारे प्रेम की वजह से मुझे मुक्ति मिल गयी। प्रतिफल स्वरूप इस पेटी में जो भी संपदा है, तुम्हें दे रहा हूँ।"

उसकी कहानी सुनकर चंदन आश्चर्य में डूब गया। फिर अपने को संभालते हुए उसने पेटी के अंदर झांका। वहाँ उसे फुफकारते हुए सर्प दिखायी पड़े। जब उसने यह बात भाग्यनाथ से बतायी तो उसने कहा, "पेटी के ढक्कन को खोलने में तुम कामयाब हुए। इसमें अब कोई संदेह नहीं रह गया कि तुम निस्संदेह ही महान प्रेमी हो। पर लगता है कि तुम किसी के ऋणी हो, इसीलिए तुम संपदाएँ देख नहीं पा रहे हो। तुरंत जाओ और अपने परिवार के सब सदस्यों को यहाँ ले आओ।"

थोड़ी देर बाद चंदन के साथ-साथ उसके

परिवार के सभी सदस्य भी वहाँ आये। पर उनमें से कोई भी चंदन के ऋण के बारे में बता नहीं सके। भाग्यनाथ ने उनसे कहा, ''आप सब लोग एक एक करके पेटी में झांककर देखो। आपमें से कोई चंदन से बढ़कर प्रेमी हो तो उसे यह संपदा दिखायी पड़ेगी।''

एक- एक करके वीर के सिवा सबने पेटी के अंदर झांककर देखा। उन सबको फुफ़कारते हुए सर्प ही दिखायी पड़े। पर अंत में जब वीर ने पेटी में झांककर देखा तो उसे सोना, वज्र, रत्न दिखायी पड़े।

भाग्यनाथ ने वीर की प्रशंसा करते हुए कहा, ''तुम लोगों का परिवार मिला-जुला परिवार है। यह संपदा सब की है,'' यह कहकर भाग्यनाथ ग़ायब हो गया।

वेताल ने कहानी सुना चुकने के बाद विक्रमार्क से पूछा, ''राजन्, चंदन मनोहरी को कितना चाहता है, इसे जानने के लिए भाग्यनाथ ने उसकी कठोर परीक्षाएँ लीं। उनसे स्पष्ट है कि चंदन इन परीक्षाओं में उत्तीर्ण होता आया। ऐसे समय पर, उसे पेटी में फुफकारते हुए सर्पों का दिखना और वीर को करोड़ के मूल्य की संपदा का दिखना क्या असंगत व अटपटा नहीं लगता? कहीं ऐसा तो नहीं कि गंधर्व ने मायाजाल का प्रयोग किया हो?

मेरे इन संदेहों के समाधान जानते हुए भी मौन रह जाओगे तो तुम्हारे सिर के टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे।''

विक्रमार्क ने कहा, ''जो हुआ है, उसमें असम्बद्धता, असंगति या अटपटापन के लिए कोई गुंजाइश ही नहीं है। प्रेम जिससे किया जाता है, उसके लिए प्राण भी त्याग करने के लिए सन्नद्ध प्रेमियों से भी उत्तम व श्रेष्ठ वे होते हैं, जो अपने परिवार की जिम्मेदारियों को सक्रम रूप से निभाते हैं। ऐसे सामान्य व्यक्ति का प्रेम कितना ही महान होता है। इसी कारण पेटी के अंदर की संपदा केवल वीर को ही दिखायी पड़ी।''

राजा के मौन भंग में सफल वेताल शव सहित गायब हो गया और फिर से पेड़ पर जा बैठा। - (आधार-सुभद्रा देवी की रचना)

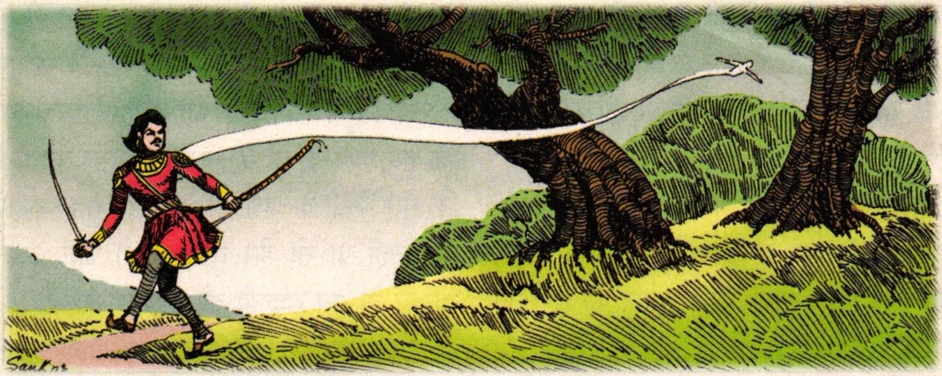

Sunday रविवार ରବିବାର Oriya रविवार

14
आर्य
लाल मणि की खोज
चित्रः गाँधी अय्या
धर्म पिता बिसरे हुए बच्चों के बदले में मारिघा को पकड़ने में थार्विक की सहायता करने के लिए तैयार हो जाता है । वह आर्य को यह भी बताता है कि वास्तव मे उसका मंत्री प्रभात ही थार्विक है ।
अगर वह आपका पुत्र है तो आप मेरी मदद यों कर रहे हैं ?
अपने पापों के प्रायश्चित के लिए
जब मैं जवान था, मैं एक मारेक स्त्री से प्रेम कर बैठा ...
...हम साथ-साथ बेहद खुश थे लेकिन हमारे संबन्धी नहीं। मैं एक भार्द पुरुष था।
आपने कहा था?
हाँ । इस घटना के बाद मैं अपने संबन्धियों द्वारा निष्कासित कर दिया गया । वह भी कर दी गई ।

हम जंगल छोड़ने के लिए मजबूर थे जिसे हम अपना समझते थे । हमारा एकमात्र साथी क्लौ, उसका पालतू डोम पक्षी था ।
कुछ समय में ही हमें एक सुन्दर बेटी हुई ।
लेकिन एक दूसरे के लिए हम ही थे और हमने इन गुफाओं में अपना घर बनाया ।
मेरी पत्नी ने उसे एक कीमती तोहफा अवश्य दिया ... स्वर्णद्वीप की लालमणि ।
उसे लालमणि कैसे मिली ?
उसने चलने से पहले इसे अपने परिवार की पुजारिन से चुरा लिया ।

लालमणि मौत से ही हासिल होती है ?
मैं उससे बहुत नाराज़ हुआ । लालमणि डरावनी वस्तु थी और मुझे विश्वास था कि इससे कुछ अच्छा नहीं होने वाला । लेकिन वह ज़िद्दी थी ।
मैंने कुछ गलत नहीं किया ।
हाँ । क्लौ उसका संरक्षक था ।
मैंने भीख मांगी और विनती की पर कुछ असर न हुआ । अंत में मैं छोड़ दिया । लेकिन मैं चाहता था कि मैं ऐसा न करूँ ।
तुम्हारे अब बहुत देर हो चुकी है ।
उस रात साधू , जो तुम्हें रानी के सपनों के बारे में आगाह करता है, मेरे सपने में आया ।
मैंने कभी उसके शब्दों की अवहेलना नहीं की और मैं अपनी जिंदगी के लिए भयभीत हो उठा । एक कायर की भाँति, बिना एक शब्द कहे मैंने गुफा छोड़ दी ।

मुझे इस पर गर्व नहीं है ।
तुमने अपनी पत्नी और नवजात बच्ची परित्याग कर दिया ?
मैंने अपने पापों का प्रायश्चित करने की आशा में पूरी दुनिया घूमते हुए गरीबों की सहायता और बीमारों की सेवा की ।
पर मेरा हृदय को शांति न मिली । आखिरकार, वर्ष के अंत में मैं घर वापस आया ।
लेकिन वे जा चुकी थीं ।
आपकी पुत्री का नाम क्या था ?
मारिघा ।
आगे है

उत्तरकाण्ड

अगस्त्य ने राम को सुग्रीव की कथा इस प्रकार सुनाई। मेरु पर्वत का मध्य शिखर देवताओं के लिए भी पवित्र है। उस पर विशाल ब्रह्म सभा है। चतुर्मुख ब्रह्मा हमेशा वहीं रहते हैं।

एक बार जब ब्रह्मा योगाभ्यास कर रहे थे तो उन्होंने आंख के पानी को हटाया, तो उसमें से एक वानर पैदा हुआ। ब्रह्मा ने उस वानर को कुछ समय तक, मेरु पर्वत के कन्द मूल, फल खाते रहने के लिए कहा। इसके बाद वानर दिन-भर पेड़ों पर घूमा करता और शाम को अच्छे फल और फूल लेकर ब्रह्मा के पास आया करता। इस प्रकार बहुत समय गुजर गया। एक बार उस वानर को प्यास लगी। वह मेरु पर्वत के शिखर पर गया। जिसमे बहुत-से पक्षी थे। वानर अपना शरीर झाड़कर पानी के पास बैठा और तभी उसे पानी में अपनी परछाईं दिखाई दी। उसने सोचा पानी में उसका कोई शत्रु है, वह उसकी खबर लेने पानी में कूदा। बहुत खोजा, जब उसे कोई न मिला, तो वह फिर किनारे पर फिर किनारे पर चला आया। किनारे पर पहुँचते ही वह एक सुन्दर स्त्री बन गया। सुन्दर स्त्री बनकर, जब वह

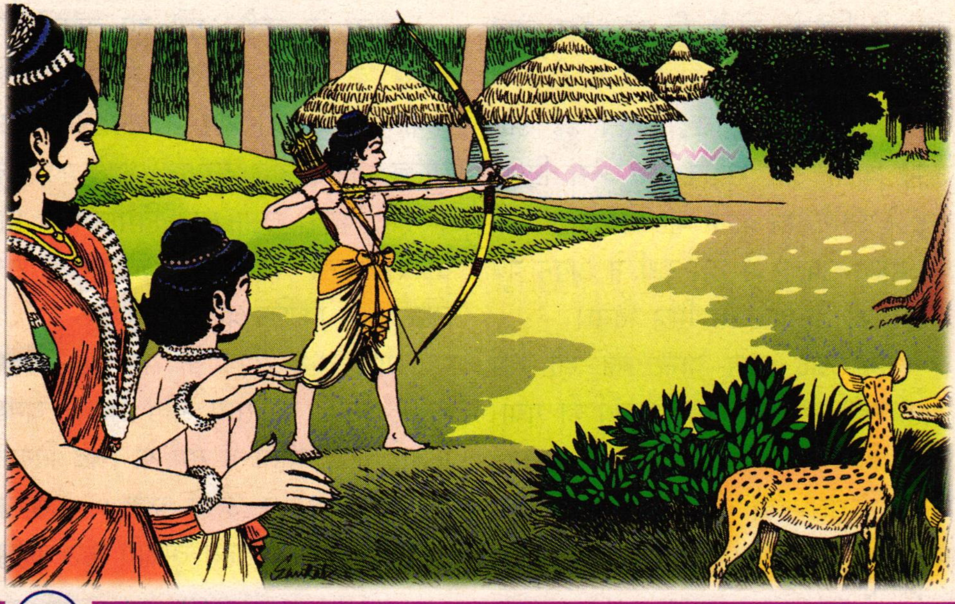

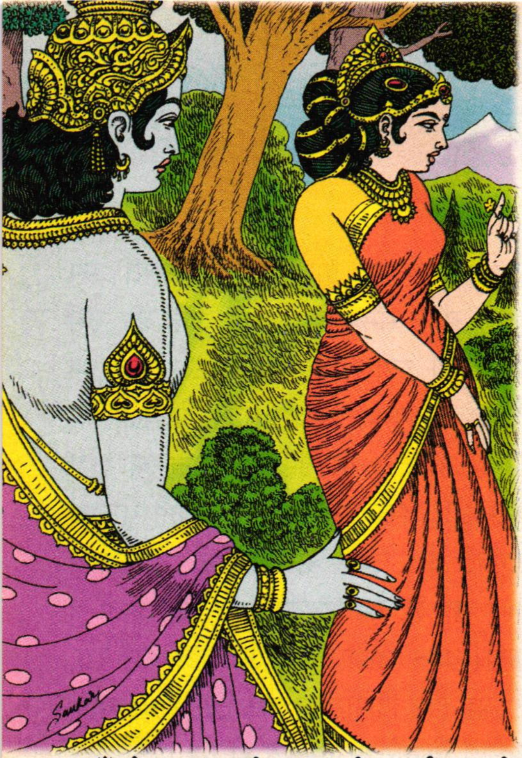

वहाँ बैठा था, तो ब्रह्मा के दर्शन करके, इन्द्र और सूर्य ब्रह्मा के दर्शन करके उस तरफ़ से निकले। दोनों की नज़र एक साथ उस पर पड़ी। दोनों उस पर मुग्ध हो गए। वह उन दोनों के द्वारा गर्भवती हुई और उसने बाली और सुग्रीव को जन्म दिया। इन्द्र ने अपने पुत्र बाली को सोने के कमलों की माला उपहार में दी। सूर्य ने अपने पुत्र सुग्रीव को हनुमान-सा मित्र दिया।

इसके बाद, उस वानर का स्त्री रूप जाता रहा और वह फिर यथापूर्व हो गया। उसने ही अपने दोनों लड़कों का पालन-पोषण किया। उसी का नाम ऋक्षरचस था। ब्रह्मा की आज्ञा पर ऋक्षरचस, अपने दोनों पुत्रों को लेकर वानरों की नगरी किष्किन्धा चला गया। वहाँ उसने अपना राज्याभिषेक करवाया और वह सप्त द्वीपों के वानरों का राजा कहलाया।

''राम, बाली और सुग्रीव का पिता और माता भी ऋक्षरचस था।'' कहकर, उसने कहानी समाप्त की।

राम के पट्टाभिषेक के बहुत दिनों तक अतिथियों का समय सुख से कटता रहा। फिर एक-एक करके लोग जाने लगे। राजा ने सबके प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्ति की और उनका यथोचित सत्कार करके, उनको भेज दिया। महाराजा जनक भरत के साथ और कैकेय महाराज लक्ष्मण के साथ गए। भरत के निमंत्रण पर आए काशी के राजा प्रतर्धन आदि अपने अपने देश चले गए।

राजा के साथे आये हुए वानर और राक्षस दो मास अयोध्या में आराम से रहकर, चले गये। राम ने उन वीरों का, सुग्रीव, अंगद और हनुमान आदि का खूब सत्कार किया। उसी तरह विभीषण ने भी, अपने राक्षसों का सम्मान किया। वे सब लंका और किष्किन्धा चले गए।

फिर राम, सीता के साथ वन विहार करते, मित्रों के साथ गप्प करते, समय बिताने लगे। सीता में गर्भ के चिह्न दिखाई देने लगे। राम ने उससे कहा - ''सीता, तुम गर्भवती लगती हो। तुम्हरी कुछ इच्छा

हो तो बताओ। मैं तुम्हारी इच्छा पूरी करुँगा।''

सीता ने मुस्कुराकर कहा - ''मैं गंगा के तट पर ऋषियों के आश्रम देखकर वहाँ के कन्द-मूल खाकर वहाँ के पेड़ों के नीचे घूमना चाहती हूँ।''

राम ने कहा-''तो ऐसा ही करो। कल ही मैं तुम्हें वहाँ भिजवा दूँगा।''

सीता से यह कहकर, वे अपने मित्रों के बीच आए और हास्य कथाएँ कहने और सुनने लगे। इतने में वहाँ भद्र को देखकर उन्होंने पूछा- ''भद्र! मेरे बारे में, सीता के बारे में और मेरी माताओं के बारे में, भाइयों के बारे में लोग क्या सोच रहे हैं?''

भद्र ने हाथ जोड़कर कहा-''लोग तरह-तरह की बातें कर रहे हैं। वे अधिकतर तो रावण संहार की ही बातें करते हैं।''

राम को सन्देह हुआ कि भद्र कुछ छुपाने का प्रयत्न कर रहा था। उन्होंने कहा-''भद्र, जो कुछ है बताओ, अच्छी बात हो या बुरी।''

''प्रजा आपकी बड़ी प्रशंसा कर रही है कि आपने समुद्र पर पुल बँधवाया। रावण को नष्ट कर दिया। पर रावण अपनी गोदी में बिठाकर सीता को ले गया था। उन्हें वहाँ काफी समय तक रखा भी था। मगर फिर आप उन्हें ले आए हैं इसलिए लोग कह रहे हैं कि आपको अच्छे बुरे का ध्यान नहीं है। कल अगर आपकी पत्नी को कुछ हो गया तो आप ही उसके जिम्मेवार होंगे। कहते भी है यथा राजा तथा प्रजा। जहाँ देखो, वहीं लोग जमा होकर यही बातें कर रहे हैं।''

राम को यह सुनकर बड़ा दुःख हुआ। उन्होंने अपने और मित्रों से पूछा- ''क्या यह ठीक है?'' सबने सिर झुकाकर कहा- ''यह ठीक है।''

लक्ष्मण और भरत, शत्रुघ्न को बुलाकर लाओ। जल्दी ही तीनों राम के पास आए। आँसू बहाते हुए राम ने अपने तीनों भाइयों का आलिंगन किया। उनको बिठाकर, सीता के बारे में, जो उन्होंने बदनामी सुनी थी,

Sunday रविवार ഞായർ Malayalam न्जयार

जंगल में छोड़ आओ। मेरी बात का विरोध न करो। सीता को भी इस बारे में न बताओ। शपथ करो कि नहीं कहोगे। सीता ने ऋषियों के आश्रम देखने के लिए कहा था। मैं उसकी इच्छा ही पूरी कर रहा हूँ।'' राम ने कहा और फिर वे लम्बी साँसें लेते, अन्त:पुर में चले गए।

अगले दिन सवेरे, लक्ष्मण सुमन्त्र के पास गए। उन्होंने अजीब सा चेहरा बना रखा था। मुख सूखा जा रहा था। उन्होंने सुमन्त्र से कहा - ''भैया की आज्ञा है कि सीता को मुनियों के आश्रम ले जाया जाए। तुरन्त रथ तैयार करो। राजमहल से अच्छे गद्दे लाकर रथ में रखो।''

सुमन्त्र के रथ तैयार करके लाते ही लक्ष्मण सीता के पास गए। ''राजा ने कहा है कि आप आश्रम देखना चाहती हैं। राजा की आज्ञा हो गई है। चलिए, गंगा तट के आश्रमों में चलें। भाई की आज्ञा के अनुसार मैं भी आपके साथ आऊँगा।''

सीता यह सुनकर बड़ी खुश हुई। मुनि पत्नियों के लिए बहुमूल्य वस्त्र, रत्न, गहने साथ लेकर, रथ में निकल पड़ीं। रथ तेज़ी से जा रहा था कि सीता को अपशकुन दिखाई देने लगे। लक्ष्मण से उन्होंने इस बारे में कहा भी - ''सास वगैरह सब सकुशल हैं न?'' यद्यपि लक्षमण अन्दर ही अन्दर भयभीत थे। तो भी उन्होंने ऊपर से

वह बताई।

''सीता निर्दोष है- अग्नि और अन्य देवताओं ने कहा। मेरी आत्मा भी यही कहती है। लक्ष्मण, यह सब तुम्हारे सामने ही तो हुआ है। इसलिए सीता को अयोध्या लाया था। परन्तु यह बदनामी सहना बहुत मुश्किल हो रहा है। मैं, प्राण छोड़ सकता हूं, तुम्हें छोड़ सकता हूँ। परन्तु अपकीर्ति नहीं सह सकता। फिर सीता को छोड़ना कौन-सी कठीन बात है? इस बदनामी से अधिक, मुझे कोई भी चीज़ दुःखी नहीं कर सकती। इसलिए लक्ष्मण कल सवेरे तुम, सीता को रथ में ले जाकर, तमसा नदी के किनारे, वाल्मीकी के आश्रम प्रान्त में,

Sunday रविवार ᱵᱟᱨᱮᱱ Santali सिंगे

कहा - "वे सब तो सकुशल हैं।"

रात होते होते वे लोग गोमती के तट पर जा पहुँचे। वह रात वहाँ बिताकर, वे सवेरे फिर चल पड़े और दोपहर तक गंगा के किनारे पहुँचे। गंगा को देखते ही लक्ष्मण अपना दु:ख काबू में नहीं रख सके। यह देख सीता ने पूछा-"लक्ष्मण! क्यों रो रहे हो? कितने ही दिनों बाद आज मेरी इच्छा पूरी हो रही है और तुम मेरे आनन्द को रोकर कम क्यों कर रहे हो? मुझे जल्दी, गंगा पार करके मुनियों के आश्रमों में ले चलो। मैं मुनियों की पत्नियों को ये सब उपहार में दूँगी। वहाँ रात काटकर कल सवेरे अयोध्या चलेंगे। राम को फिर से देखने के लिए मैं उतावली हो रही हूँ।" सीता ने कहा।

लक्ष्मण ने आंखें पोंछीं। पास खड़े किश्तीवाले को बुलवाया। किश्ती की व्यवस्था करके, उन्होंने उसमें सीता के साथ गंगा पार की। सुमन्त्र रथ के साथ इस किनारे पर ही रह गए।

उस पार पहुँचकर, लक्ष्मण ने सीता के सामने हाथ जोड़कर कहा - "मेरे भाई ने मेरे हृदय में मानों भाला चुभा दिया है। इतना बुरा काम करने से तो अच्छा था कि मैं मर जाता।" यह कहते हुए वे दु:ख में मानों ढह से गए।

सीता उनकी स्थिति देखकर घबराई।

"लक्ष्मण, मुझे तो तुम्हारी बातें बिल्कुल समझ में नहीं आ रही हैं। तुम किसी प्रकार के आवेश में मालूम होते हो। तुम्हारी क्या शिकायत है ज़रा साफ़ साफ़ बताओ। नहीं तो..."

तब लक्ष्मण ने सीता से कहा - "मेरे भाई अपने मित्रों से बातें कर रहे थे कि तभी उन्होंने आपकी निन्दा सुनी। ऐसी निन्दा कि वह आपके कानों तक नहीं पहुँचना चाहिए। उस निन्दा के कारण, उन्होंने आपको छोड़ दिया। मैं जानता हूँ और मेरे भैया भी जानते हैं कि आप निर्दोष हैं। परन्तु निन्दा के भय से वे यह कर रहे

हैं। मुझे आपको यहीं छोड़कर अयोध्या वापस जाना है। यह राजा की आज्ञा है। आप अधिक दु:ख न करके इस पुण्य आश्रमों के प्रदेश में रहिए। महामुनि वाल्मीकि हमारे पिता के सन्निहित मित्र हैं। आप उनके पास सुख से रहेंगी।''

सीता यह सुनकर सुन्न रह गई। फिर वे सम्भली और धीमे धीमे रोते रोते कहा - ''लक्ष्मण, मैं कष्ट उठाने के लिए ही पैदा हुई हूँ। शायद मैंने पिछले जन्म में कोई गलती की होगी, किसी दम्पत्ति को अलग किया होगा। वनवास में, यद्यपि राम, मेरे पास थे फिर भी मैं दु:खी थी। अब यह कल्पना करो कि बिना राम के साथ के वनवास कितना भयंकर होगा। मैं अपना रोना किसके सामने रोउं? जब मुनि पूछेंगे कि तुम्हारे पति ने तुमको क्यों छोड़ दिया, तो मै क्या जवाब दूंगी? इस गंगा नदी में डूबकर मरा जा सकता है, पर उससे तुम्हारे वंश का उपहास होगा। तुमने भाई की आज्ञा पूरी कर दी। अब तुम जाओ भाई। सासों को मेरा प्रणाम कहना। राजा को साष्टाङ्ग नमस्कार कहना और कहना कि मैंने उनका कुशल-क्षेम पूछा था। उनकी निन्दा को दूर करना मेरा कर्तव्य है। उनसे कहना कि धर्म पूर्वक राज्य करते, भाइयों और प्रजा को एक ही तरह देखते, वे अमर कीर्ति पायें, यही मेरी इच्छा है।''

लक्ष्मण ने कुछ न कहा। रोते रोते, उन्होने उनको साष्टाङ्ग नमस्कार किया। उनकी प्रदक्षिणा की और किश्ती में सवार होकर नदी के उत्तरी तट पर गए। फिर रथ पर सवार होकर, दुसरे किनारे पर अनाथ की तरह खड़ी सीता को रह रहकर देखते हुए चल पड़े।

सीता कुछ देर तक रथ की ओर देखती रहीं फिर बिलख-बिलख कर रोने लगीं। उनके रोने की आवाज़ से सूना जंगल गूँजने लगा।

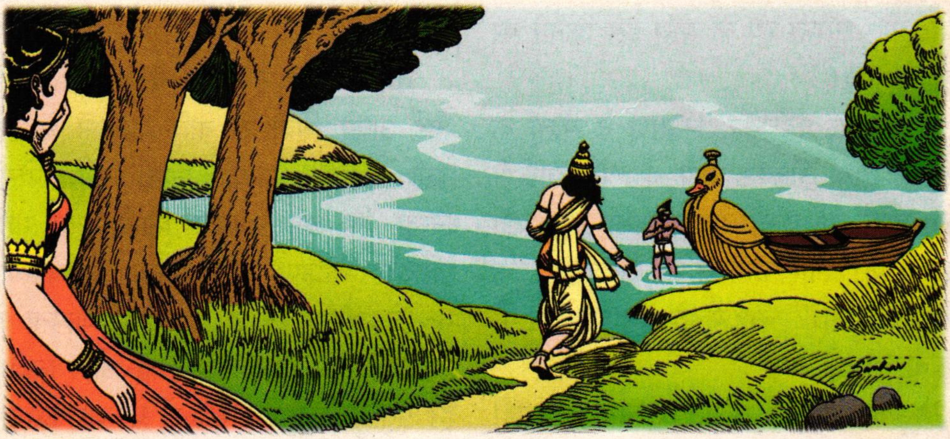

मित्र भेद-४

सन्जीवक को दमनक ने दन्तिल की कहानी यों सुनाई: वर्धमान नगर में दंतिल नामक एक मशहूर व्यापारी था। वह नगर पालक के पद पर रहते नगर से संबंधित सारे कार्य देखा करता था। वह राजा के निजी खर्च का भी हिसाब रखा करता था। कहा जाता है कि राजा के स्नेह पात्र व्यक्ति से प्रजा द्वेष करती है और प्रजा के हितैषी और स्नेहपात्र व्यक्ति के साथ राजा द्वेष करता है। राजा और प्रजा के हित और श्रेय में वैरुध्य होने के कारण दोनों को सन्तुष्ट करना अत्यन्त कठिन है। लेकिन दंतिल दोनों के ही लिए प्रिय पात्र व्यक्ति था।

एक बार दंतिल ने अपने पुत्री का विवाह किया। उस विवाह में दंतिल ने नगर के नागरिकों और राज-कर्मचारियों को निमंत्रण दिया, सबको दावत दे, कीमती वस्त्र देकर भेजा। विवाह के समाप्त होने पर दंतिल ने राजा और रानी को इसलिए निमंत्रण दिया ताकि वे दोनों आकर वधू को आशीर्वाद दें। वे दोनों दंतिल के घर आने को तैयार हो गए। उनसे पहले दरबार से कई अधिकारी व कर्मचारी आए उनमें राजमहल में झाड़ू देने वाला गोरभ नामक नौकर भी था। गोरभ राज-पुरोहित के लिए सुरक्षित आसन पर जा बैठा।

समझाने पर भी उसने उठने से इंकार किया, इसलिए दंतिल ने उसे नौकरों द्वारा गर्दन पकडकर निकाल दिया। इसके बाद राजा अपनी रानियों के साथ आए। उन्होंने

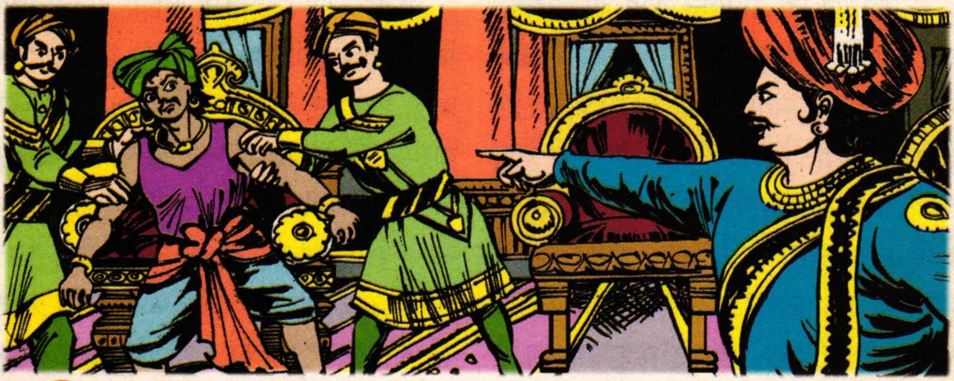

दंतिल की बेटी को आशीर्वाद दिया और विवाह के सम्पूर्ण आयोजन की बहुत तारीफ की।

दंतिल ने राजा और सभी रानियों, खासकर बड़ी रानी का बहुत सत्कार किया। सत्कार पाकर राजा अपने महल को लौट गए।

गोरभ का जो अपमान हुआ था, उसकी याद उसके मन को कुरेद रही थी। उसने सोचा - ''इस अपमान का बदला कैसे लूँ? दंतिल के प्रति राजा के मन में क्रोध पैदा करके उसका अपमान करा सकता हूँ? बदला लिए बिना क्रोध करने वाला व्यक्ति बेशर्म होता है। तवे पर राई चाहे कितना भी उछल पड़े, तवे का कुछ बिगाड़ नहीं सकती। मैं झाड़ू देने वाला हूँ। दंतिल करोड़पति है, नगर शासक है और राजा के ख़जाने का ख़जांची है। फ़िर भी मैं उसे यह दिखा दूँ कि मेरा अपमन करके वह बच नहीं सकता।''

राजा के जागने से पहले ही गोरभ का उनके शयनकक्ष में झाड़ू देने का रिवाज था। इस घटना के दूसरे दिन राजा नींद से जागकर बिस्तर पर ही लेटा हुआ था। गोरभ कमरा साफ़ करते हुए बुदबुदाने लगा - ''वाह, दंतिल का बड़ी रानी के साथ आलिंगन करना कैसे साहस की बात है!''

ये बात सुनते ही राजा झट से उठ बैठा और गोरभ से पूछा - ''अरे, तुम जो बुदबुदा रहे हो, क्या वह सच है? दंतिल ने बड़ी रानी के साथ आलिंगन किया है?''

''महाराज, मैं रात को बड़ी देर तक पाँसे खेलता रहा था, नींद की खुमारी में मैंनें क्या कह दिया मुझे ही नहीं मालूम।'' गोरभ ने जवाब दिया।''

राजा ने अपने मन में सोचा - ''रानियों के कमरों में दंतिल और गोरभ को छोड़कर कोई भी पुरुष प्रवेश नहीं करता। इसलिए गोरभ ने दंतिल को बड़ी रानी के साथ आलिंगन करते देख लिया होगा। कल संध्या को दंतिल ने अन्य रानियों की अपेक्षा बड़ी रानी के प्रति विशेष आदर दिखाया, अधिक निकटता प्रकट की, लेकिन गोरभ की बातों से लगता है कि

इसमें कोई रहस्य है। कहा जाता है कि शराबी और निद्रालु के मुँह में कोई रहस्य गुप्त नहीं रहता।

यह बात सही है कि कई पत्नियाँ होने के कारण मैं बड़ी रानी के प्रति लापरवाह हूँ। इसलिए वह दंतिल के प्रेम की कामना करती होगी। ''यह सोचकर राजा दंतिल के प्रति क्रोध से भर उठा और द्वारपालों को आदेश दिया कि दंतिल को आज से राजमहल में कदम न रखने दिया जाए।''

उस दिन सवेरे दंतिल सदा की भाँति राजमहल में आया। द्वारपालों ने उसे भीतर जाने से रोका। तब उसने आश्चर्य से पूछा - ''मुझे भीतर जाने से रोकने की हिम्मत तुम लोगों में कैसे आ गई?''

''सरकार, आप हम पर नाराज़ न हों। यह तो राजा का आदेश है।'' नौकरों ने समझाया।

''राजा का आदेश है? वे तो ऐसा आदेश कभी दे ही नहीं सकते।'' दंतिल ने आश्चर्य में आकर कहा।

''हो सकता है किसी कारण से राजा आप पर नाराज़ हुए हों, पर उनके आदेश का पालन करना हमारा कर्तव्य है।'' द्वारपालों ने कहा।

राजा को उस पर अकारण ही क्रोध आ गया है इस बात पर दंतिल चकित रह गया।

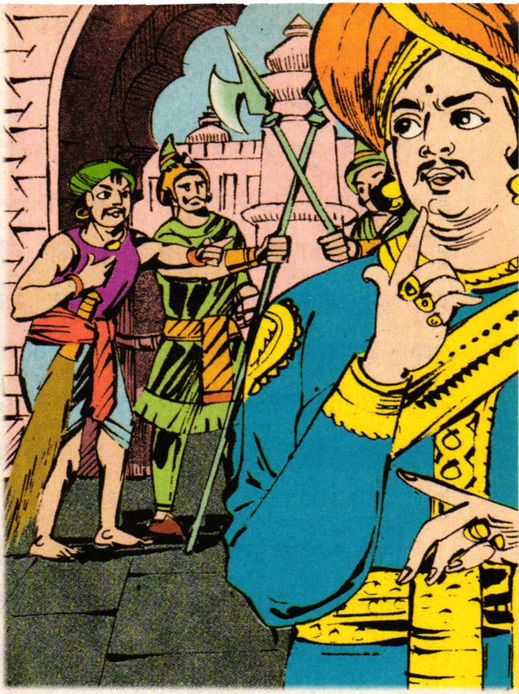

उसने सोछा - ''बुजुर्ग कहा करते हैं कि धन के प्राप्त होने पर घमण्ड न करने वाला, भोग लालसा के कारण आफ़त में न फँसने वाला, राजा के स्नेह का सचमुच पात्र बना हुआ व्यक्ति, मौत से अपने को बचाने वाला, आदर पाने वाला याचक कभी अपमानित नहीं होता। इसके अलावा, कौए में सफ़ाई, जुआरे में सत्यवचन, शराबी में दर्शन, राजा में स्नेहभाव को किसने देखा है? मैंनें स्वप्न में भी राजा तथा राजपरिवार की कोई हानि न की है। ऐसी हालत में मेरे प्रति राजा का क्रोध क्यों?''

दंतिल इस प्रकार सोच ही रहा था कि गोरभ ने द्वारपालों से कहा - ''जैसे इन्होंने मुझे अपने घर से निकलवा दिया था, ऐसे ही

इन्हें भी निकाल दो।''

ये बातें सुनकर दंतिल ने सोचा कि गोरभ ही इस घटना का कारणभूत है। उस रात को दंतिल ने गोरभ को अपने घर बुला भेजा और उसे अच्छे वस्त्र देकर कहा - ''भाई, मैंनें घमण्ड में आकर तुम्हारा अपमान नहीं किया। तुम राजपुरोहित के आसन पर बैठे, और उतरने से इनकार करके तुमने अपमान मोल लिया है।''

गोरभ अच्छे वस्त्र पाकर बड़ा खुश हुआ और बोला - ''वह अपमान तो तभी जाता रहा जब आपको द्वारपालों ने रोका था। अब आप देखेंगे कि आपको कैसे राजा का अनुग्रह प्राप्त होगा!'' ऐसा कहकर गोरभ चला गया।

दूसरे दिन सवेरे राजा नींद से जाग उठा, जागकर भी बिस्तर पर लेटा रहा। तब गोरभ कमरा साफ़ करने आया और बुदबुदाने लगा - ''राजा में थोड़ा भी शिष्टाचार नहीं है। शौच के समय ककड़ी खाते हैं।''

राजा ने ये बातें सुनकर गोरभ को निकट बुलाया और पूछा - ''अरे, तुम झूठ क्यों बोलते हो? दूसरा होता तो मैं उसे अब तक मार डालता। क्या तुमने मुझे ऐसे ककड़ी खाते देखा है?''

''महाराज, रात को बड़ी देर तक पाँसे खेलता रहा। नींद में मैंनें क्या कह दिया मुझे ही नहीं मालूम। कृपया क्षमा कीजिए।'' गोरभ ने कहा।

राजा को मालूम हो गया कि गोरभ की बातों में कोई तथ्य नहीं है। उसने सोचा - ''मैंनें दंतिल के साथ बड़ा अन्याय किया है। यह बुजुर्ग है।

अलावा इसके एक दिन दंतिल को दरबार और कचहरी में आने से रोकने से दरबार और नगर के सारे काम अस्त-व्यस्त हो गए हैं।'' इसमिए राजा ने दंतिल को बुला भेजा और अच्छे-अच्छे वस्त्र तथा उपहार देकर फिर उसी पद पर नियुक्त कर दिया।

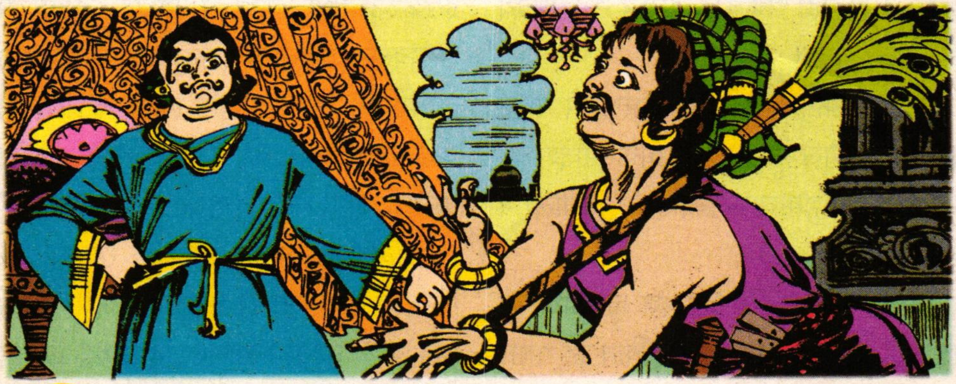

चित्र कैप्शन प्रतियोगिता

क्या तुम कुछ शब्दों में ऐसा चित्र परिचय बना सकते हो, जो एक दूसरे से संबंधित चित्रों के अनुकूल हो?

NARAYANAMURTHY TATA

BALASUBRAMANYAM

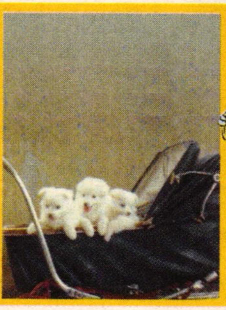

Editor, CHANDAMAMA INDIA LTD.,
B-3, Lunic Industries, Cross Road 'B', MIDC, Andheri (East), Mumbai-400093.

जो हमारे पास इस माह की २० तारीख तक पहुँच जाए । सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर १००/- रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा, जिसका प्रकाशन अगले अंक के बाद के अंक में किया जाएगा ।

बधाइयाँ

अपेक्षा शर्मा,
वंदना नगर, इलाहाबाद

विजयी प्रविष्टि

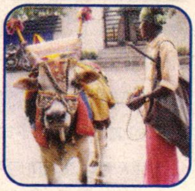

गो-वत्स है शान्त मनोहर!
माता जग में जैसे ईश्वर!!

चन्दामामा सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी-१२ जनवरी २००९ उत्तर:

1. 1857, 2. एनी बेसेंट, 3. केसरी, 4. डॉ बी आर अम्बेडकर, 5. भारत छोड़ो आन्दोलन, 6. ऐलन ओक्टावियन ह्यूम, 7. जवाहरलाल नेहरु, 8. 24 लकीरें.

नोटः कोई भी पूर्णतः सही प्रविष्टि नहीं मिली अतः किसी को पुरस्कार नहीं दिया जा रहा है।

तेज फार्मूला

इस महीने का प्रश्न :

श्रेया पहली बार यूके आयी है। वह महीने के लिए रोज़मर्रा का सामान खरीदने बड़ा बाज़ार जाती है। वह देखती है कि सभी सामानों का वज़न किलोग्राम की बजाय lbs में लिखा है! उसके पास £100 हैं। कुल योग जल्दी पता लगाने में उसकी मदद कीजिए। क्या यह उसके पास मौजूद धनराशि से कम है या अधिक?

श्रेया की सूची है : चावल - ५ किलो; नूडल्स - ३ किलो; भंडारित सब्ज़ियाँ - ३ किलो; वाशिन्ग पाउडर - ३ किलो; चिकन - २ किलो; दही - २ किलो।

दाम सूची : चावल - £2 / lb, थाई नूडल्स- £1 / lb, भंडारित सब्ज़ियाँ - £4 / lb, वाशिन्ग पाउडर - £2 / lb, चिकन - £3 / lb, दही - £1 / lb.

इसका हल मई २०१० महीने के अंक में प्रकाशित किया जाएगा।

सबसे तेज़ सूत्र (फॉर्मूला) देने वाले को ५००/- रुपए का इनाम मिलेगा। एक से अधिक सही प्रविष्टियाँ होने पर सफल प्रतिभागियों में प्रत्येक को १००/- रुपए दिए जाएँगे।

अपने प्रवेश फॉर्म ३१ मार्च के पहले इस पते पर भेजें :

Editor, CHANDAMAMA INDIA LTD.,

B-3, Lunic Industries, Cross Road 'B',MIDC, Andheri (East), Mumbai-400093

or e-mail your entries to:contests@chandamama.com

यहाँ प्रस्तुत है जनवरी'10 महीने की समस्या को हल करने का सही तरीका :

एक नीला फीता चुनने की संभावना है: नीले फीतों की कुल संख्या/फीतों की कुल संख्या = 34/34 + 29+29 = 34 / 92

एक हरा फीता चुनने की संभावना है

: हरे फीतों की कुल संख्या/फीतों की कुल संख्या = 29/34+29+29 = 29/92

चूँकि दोनों स्वतंत्र घटनाएँ हैं = 34 x 29/ 92

जब भी दो इकाइयों की संख्याएँ को गुणित किया जाता है तो इन स्टेप्स का अनुसरण करते हैं :

स्टैप १: एक के नीचे दूसरी करके दो संख्याएँ लिखिए

: 3 4

2 9

स्टैप २: दहाई के स्थान वाली इकाइयों को गुणित कीजिए तथा हल का LHS लिखिए : 3 X 2 = 6

स्टैप ३: तिरछा गुणन कीजिए ; (3X9 तथा 2X4) तथा परिणामों का योग कीजिए : 27 + 8 = 35

इसे अपने हल के मध्य भाग के रूप में लिखिए लेकिन पहली इकाई को हासिल की तरह लिखें : $_35$

स्टैप ४: इकाई के स्थान वाली इकाइयों को गुणित कीजिए तथा हल का RHS लिखिए : 4 X 9 = 36.

लेकिन पहली इकाई को हासिल की तरह लिखें : $_35$

अब आपका हल इस प्रकार पढ़ा जाएगा = 6_35_36

हासिलों को उनसे पहले वाली इकाइयों में जोड़ दीजिए : 6+3 = 9 तथा

5+3 = 8 यह आपके हल का मध्य भाग है

इस भाग का अंतिम हल पढ़ा जा सकता है 986.

92 का वर्ग है : LHS = 92–(92 से 100 तक का अंतर)

RHS = 92 – (92 से 100 तक का अंतर) का वर्ग = 8^2 = 64 इसलिए 92 का वर्ग है : 8464.

नीले फीते तथा हरे फीते के चुने जाने की संभाव्यता 986/8464 है।

जनवरी प्रतियोगिता की विजेता :

राजवी बड़जात्या, सुखलिया, इन्दौर

कागज की आकृतियाँ

कागज़ अभियांत्रिकी को एक वृहद तौर पर सीखने के लिए छोटे-छोटे प्रयोगों को अमल में लाइए।

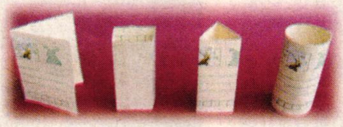

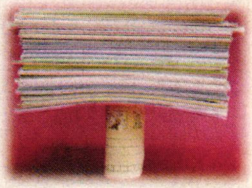

आपको क्या चाहिए :

- मोटा कागज़
- वज़न के रूप में भारी किताबें

कैसे करें :

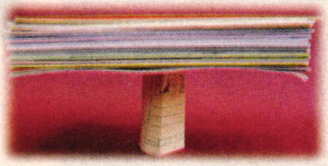

- कागज़ के एक पन्ने को v आकार में मोड़ें और इसे किनारों पर खड़ा करें। उसके ऊपर एक किताब रखें। क्या यह एक किताब का वज़न उठाएगा?
- कागज़ इसका वज़न उठा पाया लेकिन और अधिक वज़न बढ़ाने पर यह मुड़ जाता है।

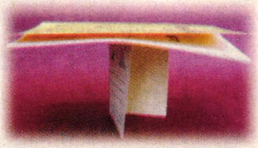

- दूसरा पन्ना मोड़िए जोकि एक किताब का वज़न उठा सके। चित्र में यह करने के कई तरीके दिए गए हैं।
- कई आकृतियों पर कोशिश कीजिए और सबसे मज़बूत आकृति का पता लगाइए। इसके लिए आपको आकृतियों के मुड़ने तक किताबों का वज़न बढ़ाना होगा।

अवधारणा :

यह प्रक्रिया आकृति की मज़बूती का एक आभास देती है। आप पाएँगे कि कुछ आकृतियाँ बाकियों से कहीं अधिक मज़बूत होती हैं। तो आप अधिक और अधिक किताबें रखते जाइए जब तक आकृति उठा पाती है। आप एक पोस्टकार्ड (१४ सेमी x ९ सेमी) को एक ९ सेमी के बेलनाकार में मोड़ सकते हैं। आपको आश्चर्य होगा कि पोस्टकार्ड बेलनाकृति बिना मुड़े ४ किलो तक वज़न उठा सकती है! क्या तुम्हें कभी आश्चर्य हुआ है कि पेड़ के तने की अनुप्रस्थ काट गोल क्यों होती है तिकोनी या चौकोर क्यों नहीं होती? प्रकृति सबसे बढ़िया रेखाकार है। एक समान परिमाप में वृत्त सबसे अधिक क्षेत्र घेरता है। प्रकृति यह मानव से कहीं पहले से जानती है।

(यह पृष्ठ श्री अरविन्द गुप्ता, अतिथि वैज्ञानिक, इंटर यूनिवर्सिटी सेन्टर फॉर ऐस्ट्रॉनॉमी एण्ड ऐस्ट्रोफिज़िक्स, पुणे ने लिखा है।)

चन्दामामा सामान्य ज्ञान पहेली - १४

(१६ वर्ष से कम आयु के बच्चों के लिए)

Co-sponsored by FOUNDATION, Bangalore

जो सही उत्तर देंगे, उनमें से एक को २५० रुपये दिये जायेंगे।*

****यदि सर्वशुद्ध प्रविष्टि एक से अधिक हों तो सफल प्रतियोगियों में से प्रत्येक को रु.५० की राशि मिलेगी।***

तुम्हें क्या करना चाहिये:

१. एक कागज पर उत्तरों को लिखो।

२. अपना नाम, आयु तथा पिन कोड के साथ घर का पूरा पता लिखो।

३. लिफाफे पर **चन्दामामा सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी-१४** लिखो।

४. तुम्हारे उत्तर ३१ मार्च तक हमें मिल जाने चाहिये।

५. सही उत्तर मई २०१० के अंक में प्रकाशित होंगे।

अंतरिक्ष के बारे में

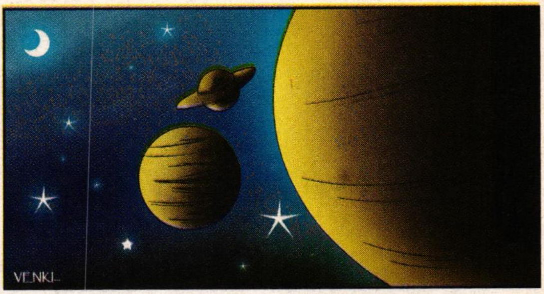

१. हमारे सौरमंडल के इर्द-गिर्द कितने ग्रह परिक्रमा करते हैं?

२. सौरमंडल में कौनसा ग्रह सबसे बड़ा है?

३. चाँद पर पहुँचने वाला सबसे पहला अंतरिक्षयात्री कौन था?

४. दूरबीन से देखा जाने वाला सबसे पहला ग्रह कौन सा था?

५. सबसे पहला अंतरिक्ष अड्डा किस देश का है?

६. अंतरिक्ष में भेजा जाने वाला जीवित प्राणी कौन है? नाम बताइए।

७. सौरमंडल में कौन सा ग्रह सूर्य से सबसे दूर है?

८. किस ग्रह की कक्षा सूर्य के सबसे नज़दीक है?

चन्दामामा को अपनायें!

आप अपने न्यूज़पेपरवाले से चन्दामामा को नियमित रूप से देने के लिए अनुरोध करें। आप इसे आम न्यूज़-स्टैंड या प्रधान बुकशॉप से भी पा सकते हैं। चन्दा के लिए www.chandamama.com लॉग करें।

Monday सोमवार തിങ്കൾ Malayalam थिन्गाल

अचूक वाणी

हरि और गिरि दोनों युवक हैं। दोनों पड़ोसी हैं। दोनों बेरोज़गार हैं। परंतु दोनों की व्यवहार शैली में आकाश-पाताल का अंतर है। हरि घर में माँ की मदद करता है और पिता का बाहर का काम भी निबटाता है। गाँव के लोगों के साथ शिष्टतापूर्वक पेश आता है। अपनी उम्र के युवकों के साथ भी उसका बरताव बड़ा ही दोस्ताना होता है। सब के सब हरि की प्रशंसा करते हुए थकते नहीं। सब माँ-बाप यही कहते हैं कि बेटा हरि जैसा हो।

गिरि का व्यवहार तो इससे बिलकुल ही भिन्न होता है। कोई सहायता मांगे भी तो वह नहीं करता। अधिक समय तक वह सोता रहता है। बड़ों का आदर नहीं करता। जब देखो, अनावश्यक ही किसी न किसी से झगड़ा मोल लेता है। सब गिरि की भर्त्सना करते हैं। सब माँ-बाप यही कहते हैं कि गिरि जैसा बेटा किसी का न हो।

गिरि बखूबी जानता है कि वह बदनाम है, पर वह यह मानने के लिए तैयार नहीं कि इसका कारण उसकी व्यवहार शैली है। वह सबसे यही कहता है कि हरि की वजह से ही वह बदनाम है। वह हरि को गालियाँ देता रहता है और उसके अनर्थ की कामना करता है। फिर भी हरि गिरि से नाराज़ नहीं है। कोई अगर कहे कि गिरि बुरा है तो वह कहता है, "सब का व्यवहार एक समान नहीं होता। गिरि की तुलना मुझसे करके उसका अपमान किया जाता है। इसी से वह मुझसे नाराज़ रहता है, अन्यथा हम दोनों अच्छे दोस्त हैं।"

एक दिन गिरि का मामा शंकर उसके घर आया। थोड़ी देर तक इधर-उधर की बातें करने के बाद शंकर ने गिरि से कहा, "बेटे, तुम बड़े होशियार हो। हमारे गाँव के ज़मींदार को दो फुर्तीले जवानों की ज़रूरत है। एक काम करेगा और दूसरा ख़बरें सुनाता रहेगा। तुम ज़मींदार को ख़बरें सुनाते रहोगे तो तुम्हारा पड़ोसी हरि काम करता रहेगा। परंतु ज़मींदार की एक शर्त है। दोनों साथ-साथ जाओगे, तभी यह नौकरी

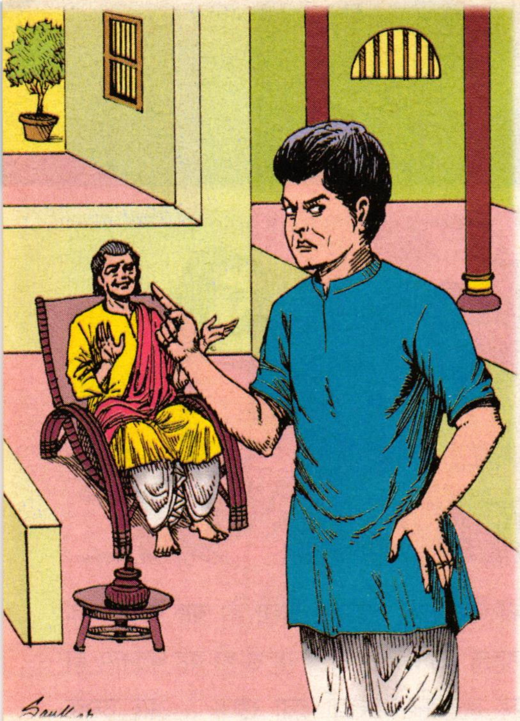

''हरि तो बहुत अच्छा जवान है। तुम उससे इतना जलते क्यों हो?'' शंकर ने पूछा।

''उसका ख्याल है कि मेरे साथ उसकी तुलना करके सब लोग मुझे बुरा ठहरायें। इसलिए मेरी तरक़्क़ी हो या न हो, उसकी तरक़्क़ी होनी नहीं चाहिये।''

शंकर को यह समझने में देर नहीं लगी कि गिरि ईर्ष्यालु है। उसने उसी दिन हरि से मिलकर पूरा विषय बताया और कहा, ''तुम दोनों के लिए यह सुनहरा अवसर है। किसी तरह तुम गिरि को समझा-बुझाकर उसे मनाना।''

हरि ने इसके लिए 'हाँ' कर दिया और गिरि से मिलने गया। हरि की बातें उसने ध्यान से सुनीं और कहा, ''मैं बहुत लोगों से सुन चुका हूँ कि ज़मींदार अच्छा आदमी नहीं है। कुछ दिनों के बाद मुझसे काम करने के लिए कहेगा और तुम्हें ख़बरें सुनाने का काम सौंपेगा। फिर हम पर यह दोष मढ़ेगा कि मैं ठीक तरह से काम नहीं कर रहा हूँ और तुम ख़बरें भी सही-सही सुना नहीं रहे हो। देखते-देखते हमें नौकरी से हाथ-धोना पड़ेगा। इसीलिए मैंने यह प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया।''

''मुझे लगता है कि यह केवल तुम्हारा भ्रम है। एक और बार सोच कर, देखो '' हरि ने कहा।

इसपर चिढ़ते हुए गिरि ने कहा, ''ठीक है, समझ लेना कि यह मेरा भ्रम है या मेरी कल्पना मात्र है, पर याद रखना, मेरी वाणी अचूक है। जो कहता हूँ, होकर रहता है। मेरे घर के सब लोग भी यही कहते रहते हैं कि मेरे मुँह से जो

मिलेगी। वे अच्छा-ख़ासा वेतन भी देंगे।''

''अगर मैं अकेले ही जाऊँ तो क्या आपके ज़मींदार मुझे नौकरी नहीं देंगे?'' गिरि ने पूछा।

''नहीं। जमींदार उन जवानों को ही काम पर लगायेंगे, जो वेतन के मामले में एतराज जाहिर नहीं करते। तुम्हारा दोस्त हरि बड़े ही अच्छे स्वभाव का है। तुम दोनों मिलकर जाओगे तो अवश्य ही तुम दोनों को एकसाथ नौकरियाँ मिलेंगी। मुझे पूरा विश्वास है कि तुम दोनों का भविष्य उज्ज्वल होगा।'' शंकर ने यों गिरि को समझाया।

''मुझे नौकरी मिले या न मिले, मुझे इसकी परवाह नहीं है, पर किसी भी हालत में हरि को नौकरी मिलनी नहीं चाहिये।'' आवेश-भरे स्वर में गिरि ने कहा।

बात निकलती है, वह होकर ही रहती है। एक हफ्ता पहले मुझे पेयूष खाने की इच्छा हुई। मैंने कहा कि दूध फट जाए तो अच्छा होगा।

बस, उस दिन का दूध फट गया। तीन दिन पहले माँने ज़ोर डाला कि मैं पिछवाडे के पौधों को पानी दूँ, पर मेरे मुँह से निकल पड़ा कि बारिश हो तो अच्छा होगा। सचमुच ही ज़ोर की बारिश हुई। अब मैंने कहा कि ज़मींदार दुष्ट है। मेरी यह बात भी सच निकलेगी। मेरी बात का विश्वास करना।''

''तुम्हारी कल्पना सच है या नहीं, यह तो मैं नहीं जानता, पर मुझे इस बात का दुख है कि नौकरी का मौका मेरे हाथ से फिसल गया,'' परेशान हरि ने कहा।

''मौक़ा तो मेरे हाथ से भी फिसल गया। तुम्हारा यह समझना है कि मेरी वजह से तुमने अच्छा अवसर खो दिया। परंतु यह सच नहीं है। तुम्हें बहुत ही जल्दी निकट भविष्य में इससे भी बेहतर मौक़ा मिलेगा। तब इस मौक़े को खोने पर तुम्हें चिंता के बदले बड़ा ही आनंद होगा। एक और बार जोर देकर कहता हूँ, सुनो, मेरी वाणी अचूक है, मेरी बात होकर रहेगी।'' यो गिरि ने अपना उद्देश्य स्पष्ट रूप से बता दिया।

सचमुच चार ही दिनों में एक आश्चर्य - भरी घटना घटी। हरि के दूर के रिश्तेदार केशव ने ख़बर भिजवायी कि वह उससे आकर मिले। केशव नगर में रहता है। समुद्री यात्रा करते हुए उसने अनेक प्रकार के व्यापार किये और बहुत बड़ी संपत्ति कमायी। पर उस बेचारे की कोई संतान नहीं थी। बूढ़ा हो जाने के कारण वह

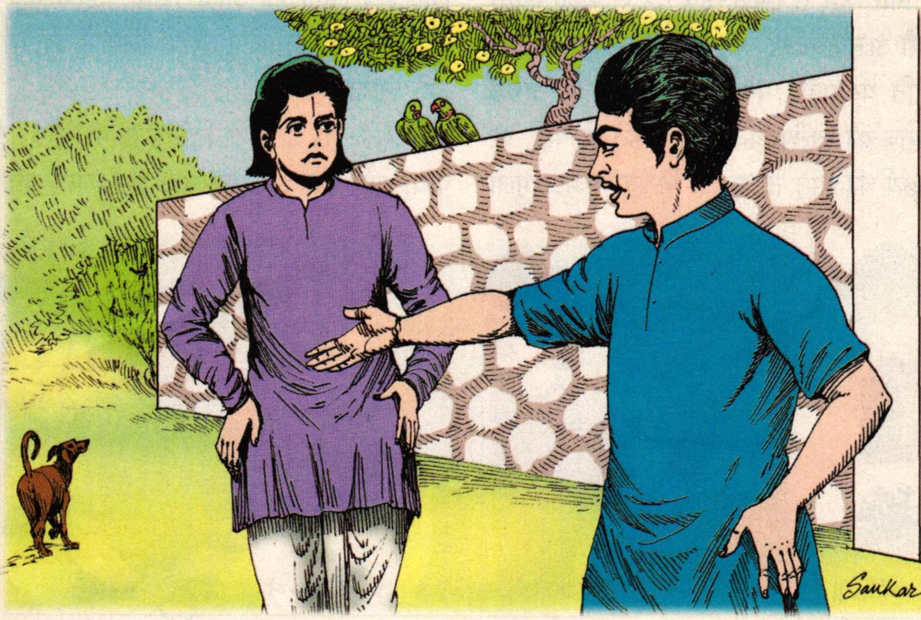

अपने ही घर में आराम कर रहा है। उसकी अदम्य इच्छा है कि अपनी संपत्ति का उपयोग परोपकारी कार्यों के लिए करूँ। इसके लिए समर्थ और सुशील युवक की ज़रूरत है तो किसी ने हरि का नाम सुझाया। वह चाहता है कि हरि को अपनी संपत्ति के चौथे हिस्से का हकदार बनाऊँ, उसे अपने ही साथ रखूँ और शेष संपत्ति का उपयोग उसके द्वारा परोपकार के लिए करूँ। ख़बर मिलते ही हरि, केशव से मिलने नगर गया। केशव को हरि बहुत अच्छा लगा। फिर कुछ समय बाद हरि अपना गांव आया और उन सबको मूल्यवान भेंट दीं, जिन्होंने उसकी सहायता की थी। भेंट पानेवालों में माता-पिता, भाई-बहन, गुरु और मित्र थे, पर गिरि नहीं था।

गिरि, हरि से मिला और गर्व से कहने लगा। ''मेरी अचूक वाणी के कारण ही तुम इस उन्नत स्थिति पर पहुँच गये। लोग तो तुम्हारे अच्छे स्वभाव की तारीफ़ करते हुए थकते ही नहीं, पर आश्चर्य की बात तो यह है कि तुमने मुझे भुला दिया और मुझे कोई भेंट नहीं दी।''

यह सुनते ही हरि ने अप्रसन्न स्वर में कहा, ''तुम चाहते थे कि मुझे नौकरी नहीं मिले। इसी लिए तुमने अपनी नौकरी का मौक़ा भी हाथ से जाने दिया। वाणी अचूक होती हो तो इसके लिए हृदय का पवित्र और निर्मल होना नितांत आवश्यक है। वह तुममें है ही नहीं। उस दूध का फटना, बारिश का होना- एक तुम्हारे स्वार्थ के लिए और दूसरा काम से बचने के लिए कहे गये शब्द मात्र हैं। एक और बात है; अगर किसी के कहे बुरे काम सफल होते हों तो ऐसे लोग अचूक वाणी के नहीं कहलाते। लोग यही कहेंगे कि उसकी जीभ पर काला धब्बा है।

अब रहा, भेंट का विषय। तुम्हें भेंट देने का मतलब है अयोग्य का सम्मान करना। इससे मैंने जिन शेष लोगों का आदर किया, उनके महत्व को घटाना है। इसीलिए तुम्हारे लिए मैं कोई भेंट नहीं लाया।''

उसके इस उत्तर पर गिरि कुछ भी बोल नहीं पाया और सिर झुकाकर वहाँ से चलता बना।

नालायक़ नहीं, लायक़ है

शंकर, शीतल का बेटा था। उसे पक्का विश्वास था कि उसका बेटा एकदम निकम्मा है और वह किसी काम के लायक़ नहीं है। इसलिए वह हर छोटी-सी बात पर उसे कोसता था, उसे हुक्म देता था, जिसके कारण वह अपनी तरफ़ से कुछ भी सोच नहीं पाता था। सच कहा जाए तो उसके निकम्मेपन का कारण उसका पिता ही था।

पिता के इशारे पर ही नाचनेवाला शंकर एकदम निठल्लु व मूर्ख बना। जैसे-जैसे उसकी उम्र बढ़ती गयी, वैसे-वैसे उसका दिमाग़ भी बिलकुल बिगड़ता गया। उसे एकमात्र विद्या जो मालूम थी,वह यह थी किवह गाँव के तालाब में डुबकी लगा कर सांस को नियंत्रित करता था और बहुत देर तक पानी में बैठा रहता था। चूँकि उसका पिता शीतल इस विषय में हस्तक्षेप करता नहीं था, इसलिए उसने इस विद्या में दक्षता पायी। पिता जो भी काम उसे सौंपता था, वह उसे किसी न किसी तरह से बिगाड़ डालता था।

शीतल इस उम्मीद पर ही जीवित रहने लगा कि हो सकता है, शादी के बाद इसकी बुद्धि ठिकाने आ जाए और लायक़ बन जाए। उसकी पत्नी बहुत पहले ही मर चुकी थी। घर का सारा काम उसे ही करना पड़ता था। उसे लगा कि बहू के आ जाने से घर का काम भी वह खुद संभालेगी और उसे पर्याप्त विश्राम मिलेगा। परंतु गांव का कोई भी निवासी अपनी बेटी की शादी शंकर से करने के लिए तैयार नहीं था।

एक दिन पहले ही उसे मालूम हुआ कि पास ही के गाँव में एक रिश्ता है। वहाँ जाने के पहले उसने बेटे शंकर से बताया, ''देखो, उनके घर पहुँचते ही चप्पल दरवाज़े के पीछे छोड़ दो।

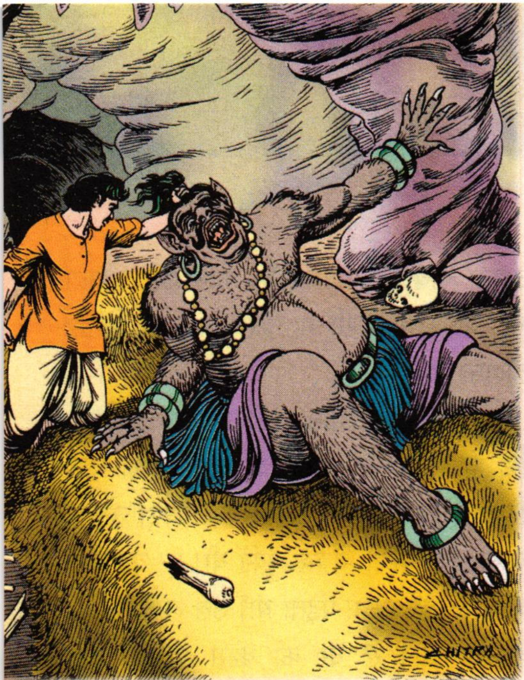

अंदर जाने के बाद कुर्सी पर बैठ जाओ। सवाल पूछने पर ही जवाब देना।''

पिता का कहा उसने ध्यान से सुना। सिर हिलाया, मानों वह सब कुछ समझ गया हो। पिता की कही बातें अपने ही आप वह दोहराने लगा। इस प्रक्रिया में उन बातों में हेर-फेर हो गया।

जब वे दुलहिन के घर पहुँचे तब शंकर ने अपने चप्पल कुर्सी में रख दिये और वह दरवाज़े के पीछे बैठ गया।

शंकर को देखते ही लड़की के पिता को उसकी असलियत मालूम हो गयी। उसने लड़की को दिखाने से साफ-साफ इनकार कर दिया और कहा, ''ऐसे पागल से हमें शादी नहीं करानी है। इसी पल यहाँ से चले जाओ।''

घर पहुँचने के बाद शीतल ने चिल्लाते हुए शंकर से कहा, ''मैंने जो कहा, उसके बिलकुल विपरीत तुमने कर डाला। इस जन्म में तुम्हारी शादी नहीं होगी। कोई सिरफिरा ही अपनी बेटी की शादी शायद तुमसे कराये।''

शंकर ऐसे सिरफिरे की खोज में लग गया। उसी रात वह घर से निकल पड़ा तीन दिनों के बाद चौथे दिन शाम को वह एक पहाड़ी क्षेत्र में पहुँचा। वहाँ की गुफा से उसे एक अजीब आवाज़ सुनायी पड़ी। उस गुफा में एक राक्षस सो रहा था। उसी का खर्राटा उसने सुना था।

शंकर गुफ़ा के अंदर गया। उसे लगा कि उसके पिता ऐसे ही सिरफिरे की बात कर रहे थे। वह अपने आप कहने लगा, ''अच्छा हुआ, मैं सही जगह पर आ गया। इसे शायद मालूम हो गया होगा कि मैं आ रहा हूँ, इसीलिए डरकर यहाँ छिप गया होगा।'' उसने राक्षस के बाल कसकर पकड़ लिये और उसे ज़ोर से हिलाने - डुलाने लगा।

राक्षस जंभाई लेते हुए उठा और चिल्लाने लगा, ''किसने मुझे जगाने की जुर्रत की?''

अरे सिरफिरे, अपनी बेटी की शादी मुझसे कराये बिना कहां भागोगे? दहेज देकर तुरंत मेरी शादी करा दो,'' कहते हुए उसने राक्षस का कान मरोड़ा।

राक्षस आग-बबूला हो उठा। वह शंकर का शरीर तोड़कर निगल डालने ही वाला था कि इतने में राक्षस की पत्नी बाहर आयी। उसने शंकर की बातें सुन लीं। उसकी एक बेटी थी, जो बहुत ही मोटी थी। कई कोशिशों के बावजूद

अब तक वह बेटी की शादी कराने में नाकामयाब ही रही। इसलिए राक्षसी जैसे ही बाहर आयी, वह पति राक्षस से कहने लगी, ''तुम्हारा दिमाग क्या कहीं घास चरने गया है? दामाद आये हुए हैं, उनका आदर-सत्कार करना हमारा फर्ज़ नहीं?.''

''ठीक है, ठीक है, पर लड़की है कहाँ?'' कहते हुए शंकर ने इर्द-गिर्द देखा।

''वह घूमने गयी है। आने में दो चार घंटे लग जायेंगे। बहुत थके लगते हो। थोड़ा-बहुत खा लो और विश्राम कर लो,'' राक्षसी ने कहा। शंकर ने राक्षसी के दिये फल खाये, दूध पी लिया और अंदर की गुफ़ा में जंतुओं के चर्मों पर लेट गया।

शंकर हट्टा-कट्टा था। राक्षस खा जाना चाहता था। परंतु राक्षसी उसे ऐसा करने से रोकने के लिए दोनों गुफाओं के बीच में जमकर बैठ गयी।

राक्षसी की बेटी आधी रात को आयी और होहल्ला मचाने लगी। इससे शंकर जाग उठा और माँ-बेटी की बातचीत सुनने होगा।

''इतने लंबे अर्से के बाद तेरा पति तुझे ढूँढ़ता हुआ आ गया,'' माँ राक्षसी ने आनंद-भरे स्वर में कहा।

''कहाँ है? कहाँ है?'' कहली हुई बेटी राक्षसी गुफ़ा के अंदर आयी, जहाँ शंकर लेटा हुआ था।

शंकर ने आँख की कोर से राक्षसी की बेटी को देखा और डर गया। वह माता-पिता से भी अधिक विकृत थी।

शंकर को देखने के बाद राक्षसी की बेटी ने कहा, ''मक्खन की तरह है।''

''कहीं उसे तोड़-मरोड़कर खा जाने का इरादा तो नहीं है न? इसके सिवा कोई और पति नहीं मिलेगा।'' उसने बेटी को सावधान किया।

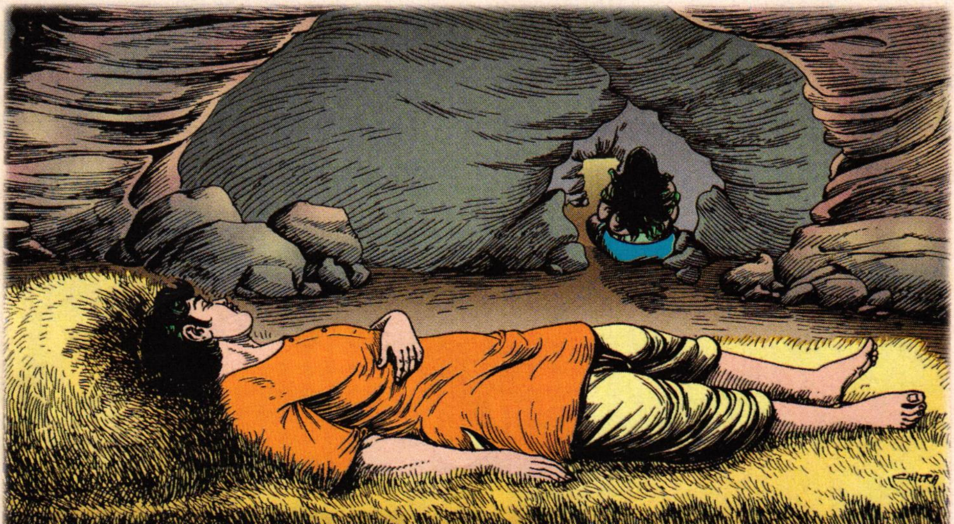

Tuesday मंगलवार ಮಂಗಳವಾರ Kannada मंगलवार

"ठीक है, मैं इसका कुछ नहीं बिगाड़ूँगी। पर पिता इसे खाये बिना रह सकेगा?"

"इसीलिए इसकी रखवाली करने यहाँ बैठी हूँ। मैं थोड़ी देर तक घूम-फिरकर आऊँगी। इस का ख्याल रखना," कहकर राक्षसी बाहर चली गयी।

राक्षसी की बेटी जैसे-जैसे शंकर को देखती जा रही थी, वैसे-वैसे उसे खा जाने की प्रबल इच्छा उसमें तीव्र होने लगी। सोचा, इसे गुफा में ही खा जाऊँगी तो माँ ज़िन्दा नहीं छोडेगी। इसलिए उसने शंकर को जगाया और कहा, "चलो, शादी के सारे इंतज़ाम पूरे हो गये।"

शंकर ने उसकी कुटिल चाल भांप ली। उसने कहा, "पहले दहेज का धन यहाँ रखो, तभी शादी होगी।"

राक्षसी की बेटी अंदर गयी और चमड़े की एक थैली में रत्न, जवाहरात व सोना भरकर ले आयी और थैली शंकर को सौंपने के बाद दोनों बाहर आये। गुफ़ा से बाहर आते ही शंकर ने राक्षसी की बेटी से कहा, "बिना नहाये शादी करनी नहीं चाहिये। पहले नहाना होगा।"

राक्षसी की बेटी उसे एक सरोवर के पास ले गयी। थैली सहित वह सरोवर में कूद पड़ा और नीचे ही बैठा रहा।

राक्षसी की बेटी बहुत देर तक इंतज़ार करती रही, पर वह बाहर आया ही नहीं। उसे पानी से बेहद डर था । उसने सोचा कि वह पानी के अंदर ही मर गया होगा और सबेरे तक लाश तो बाहर आयेगी ही। तब जमके खा जाऊँगी। यों सोचकर वह गुफ़ा के अंदर चली गयी।

उसके चले जाने के बाद शंकर ने अपना सिर पानी से ऊपर उठाया और जब इतमीनान हो गया कि वह चली गयी है तो वह सरोवर के बाहर आया और थैली सहित घर पहुँचा।

धन सहित लौटे शंकर की शादी अब पक्की हो गयी। शीतल अब जान गया कि उसके कठोर नियंत्रण के कारण ही उसका बेटा इतना निकम्मा बन गया था। वास्तव में वह नालायक नहीं, लायक है।

अपने को योग्य साबित करने में शंकर को ज्यादा समय नहीं लगा।

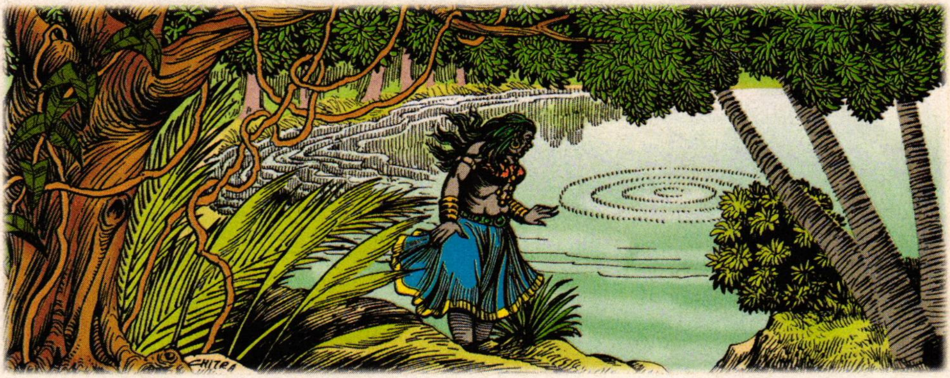

Tuesday मंगलवार ମଙ୍ଗଳବାର Oriya मंगलवार

Log onto www.chandamama.com

Your Chandamama is available in many avatars!

Rs.20/-

Regional Chandamama

(9+ age group):

Read your favourite stories in your own language! Chandamama takes you closer home even as your imagination soars!

Your Language, Your Chandamama.

* Ramayana
* Vikram-Vetal
* Panchatantra
* Arya

Available in 12 Languages:
Telugu, Hindi, Marathi, Oriya, Kannada, Bengali, Tamil, Malayalam, Gujarati, Assamese, Sanskrit, Santali

Rs.25/-

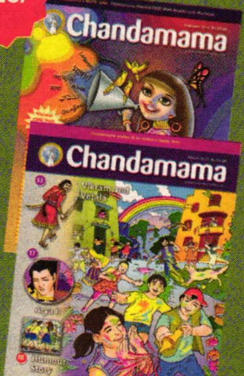

Chandamama English

(9+ age group):

A children's magazine that has adapted itself to the changing needs of children across decades, Chandamama English offers you a delectable mix of the classic and the contemporary in 72 pages that value fun!

* Sports * Technology * Contemporary stories * Classics

Revamped. Redesigned. Relevant. Read it!

Rs.15/-

Junior Chandamama

(4+ age group):

A magazine for the little ones peppered with activities, pictures, and stories that will grip their imagination.

Make friends with Mintoo, Gooba, and a host of other whacky characters!

* Picture story
* Puzzles & Crosswords
* Colouring
* Rebus

You name it and it's got it!

सास बहु के झगड़े

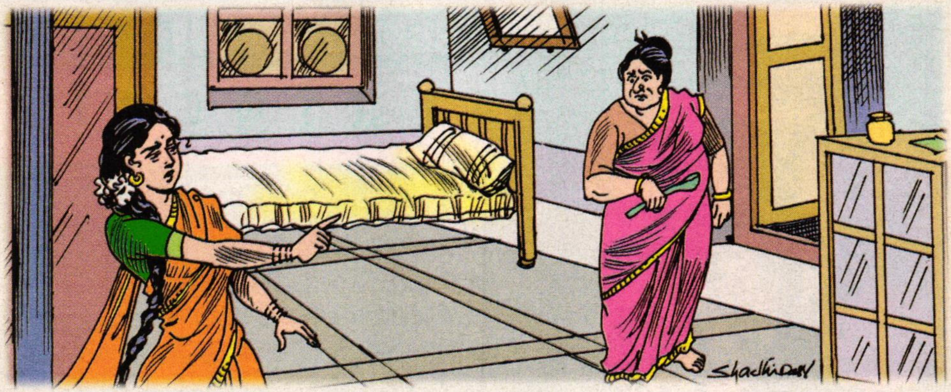

पता नहीं, किस मुहूर्त पर असंघती ने ससुराल में क़दम रखा, उसके और उसकी सास पार्वती के बीच में तू तू मैं मैं चलता ही रहा। एक भी क्षण ऐसा नहीं होता, जब कि वे आपस में किसी बात को लेकर झगड़ती न हों। सास कुछ कहती तो बहू उसका खंडन करती, बहू कोई प्रस्ताव रखती तो सास अपना पूरा बल लगाकर उसका विरोध करती। किसी दिन बहू नयी साड़ी पहनती और बालों में फूल गूँथकर अपनी सहेलियों से मिलने जाने लगती तो बस, सास की बकबक शुरू हो जाती, अनाप-शनाप सुनाने लगती। कहने लगती, ''यह घर है या बाज़ार? बहुएँ अपने को कहीं यों सजाती हैं? अपनी सुंदरता को प्रदर्शित करने का यह पागलपन घर को बरबाद करके छोड़ेगा।''

''मैं सजधज कर जाने लगती हूँ तो तुम्हें इतनी ईर्ष्या क्यों होती है? मैं जो चाहती हूँ, करके रहूँगी। तुम कौन होती हो, मुझे रोकनेवाली?'' निस्संकोच वह कह देती और बाहर चली जाती।

पार्वती किसी दिन मीठा बनाने को कह देती तो असंघती जमकर उसका विरोध करती और कहती कि ''मेरे पति को खट्टा ही पसंद है।'' उसके स्वर में कड़ुवापन भरा हुआ होता था।

बेचारा अमर दिन भर खेत में कड़ी मेहनत करता था और शाम को ही घर लौटता था। पर सास-बहू के ये झगड़े उसके मन को अशांत कर देते थे। सहज ही वह कोमल स्वभाव का था, इसलिए पत्नी को या न ही अपनी माँ को समझा पाता था। उसकी स्थिति दयनीय थी।

एक दिन शाम को खेत के किनारे बैठ गया और सोचने लगा कि क्या करूँ? सन्यासी बन जाऊँ या कहीं भाग चलूँ। तब उसी रास्ते से गुज़रते हुए उसके मित्र भीम और राम ने उसे देख लिया। वे उसके पास आये और पूछा, ''अमर, क्या हुआ? इतने उदास क्यों हो? अभी-अभी तो शादी हुई है। घर गये बिना यहाँ क्यों बैठे हो?''

अमर ने उन्हें अपनी स्थिति समझायी और

Tuesday मंगलवार મંગળવાર Gujarati मंगलवार

कहा, ''यह सब मेरा दुर्भाग्य है। इससे बचने का कोई रास्ता भी तो नहीं है। मैं तो तंग आ गया हूँ। कर भी क्या सकता हूँ। मेरी बात छोड़ो, यह तो बताओ, दोनों कहाँ जा रहे हो?''

राम ने कहा, ''पड़ोस के गांव में नाटक प्रदर्शन हो रहे हैं। हम भी उनमें वेषधारी हैं। श्रीराम नवमी के अवसर पर यह कार्यक्रम हो रहा है।''

भीम ने उसे आश्वासन देते हुए कहा, ''पत्नी और माँ के झगड़ों को लेकर इतना परेशान क्यों हो रहे हो? जल्दी ही तुम्हारी समस्या का परिष्कार हो जायेगा। धीरज रखो।''

''हाँ, हाँ, भीम का कहा होकर रहेगा। निश्चित होकर घर जाओ।'' राम ने कहा।

एक हफ़्ता गुज़र गया। पूर्णिमा की रात थी। अमर गाढ़ी निद्रा में था। पिछवाड़े में कुएँ के पास अचानक ज़ोर की ध्वनि हुई।

सास और बहू चौंककर उठ बैठीं। दोनों दरवाज़ा खोलकर तेज़ी से पिछवाड़े में गयीं।

कुएँ के किनारे जटाओंवाले दो भूत बैठे हुए थे। वे गहनों की गठरी को हिलाते हुए आपस में ज़ोर-ज़ोर से बातें कर रहे थे। यह दृश्य देखकर सास-बहू चिल्लाने ही वाली थीं, पर उनके गलों से आवाज़ निकल नहीं पायी। उन दोनों को देखकर दोनों भूत कुएँ के किनारे से उतरे और कहने लगे, ''डरो मत। जिस तरह से मनुष्यों में अच्छे मनुष्य होते हैं, उसी तरह से भूतों में भी अच्छे भूत होते हैं। असल में हम एक ऐसे घर की तलाश में हैं, जहाँ सास-बहू आपस में झगड़ती

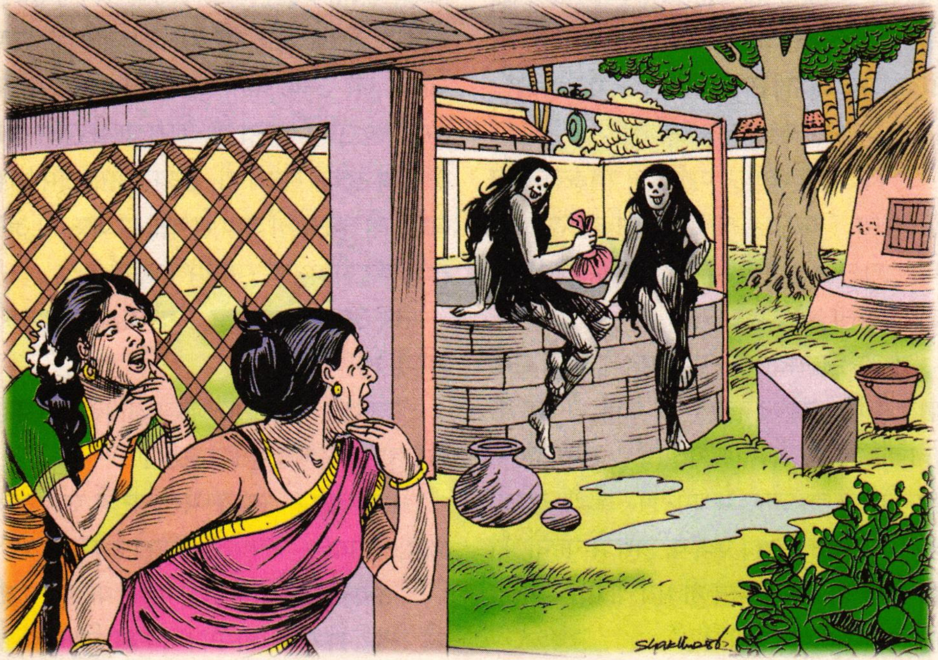

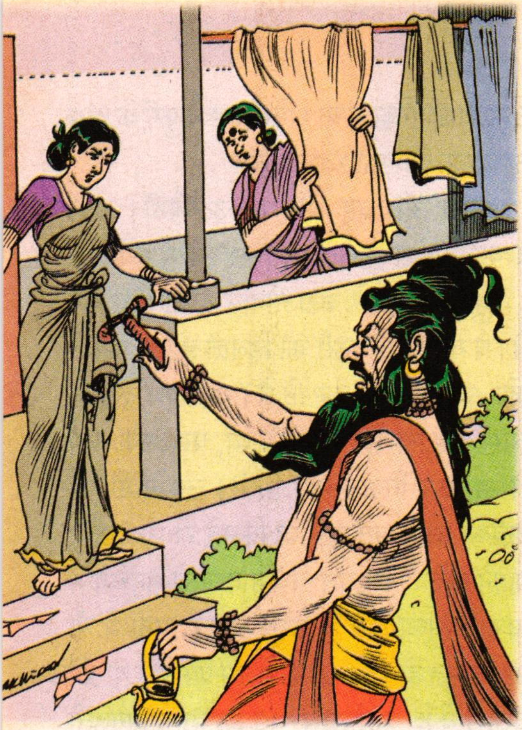

न हों। उन्हें गहनों की यह गठरी देना चाहते हैं। गाँव भर में हमने बहुत ढूँढ़ा, पर ऐसा एक भी घर दिखायी नहीं पड़ा। लगता है, इस घर में भी सास-बहू के बीच अच्छे संबंध नहीं हैं।''

उनकी बातें सुनकर पार्वती ने साहस बटोरा और कहा, ''पर यह तो बताओ कि गहनों की यह गठरी तुम्हें कहाँ से मिली?'' एक-एक क़दम आगे बढ़ाती हुई उसने पूछा।

उसके इस सवाल पर छोटे भूत ने अपने दोनों हाथों से सिर को खुजलाते हुए कहा, '' यह तो लंबी कहानी है। संक्षेप में बताता हूँ, सुनो, परसों रात को जब हम जंगल में घूम-फिर रहे थे, तब दो चोरों को हमने देखा। एक के हाथ में गहनों की यह गठरी थी। हमें देखते ही भय के मारे वे गठरी वहीं छोड़कर भाग निकले।''

यह सुनते ही पार्वती कुछ और पूछने ही वाली थी कि असंघती ने इशारे से उसे रुकने को कहा और भूतों से पूछा, ''तुम्हारी कही बातें अक़्लमंदों को विश्वास योग्य लगती हैं। पर तुम लोगों को ये गहने गरीबों को दान में देने चाहिए। परंतु तुम उन सास-बहू को ही देना क्यों चाहते हो, जो आपस में झगड़ती नहीं हैं ?''

इसके जवाब में लंबी जटाओं के भूत ने चिंता भरे स्वर में कहा, ''बहू, तुमने तो बड़ा ही जटिल प्रश्न पूछ डाला। हम दोनों भी तुम दोनों की ही तरह फालतू बातों को लेकर झगड़नेवाली सास-बहू थीं। हमारे घर के सामने एक प्रार्थना मंदिर हुआ करता था। उसमें एक जटाधारी मुनि ध्यान में मग्न रहता था। हमारी चिल्लाहटों व झगड़ों के कारण उनके ध्यान में भंग पड़ता था। वे हमपर क्रोधित हो उठे और हमें भूत बन जाने का शाप दिया। हम उनके पांवों पर गिरकर क्षमा माँगने लगे। तब उन्होंने कहा कि जिस घर में सास-बहू के बीच अच्छे संबंध हों, उनका अगर तुम भला करोगे तो तुम दोनों शाप से मुक्त हो जाओगे और तुम्हें फिर से मनुष्य रूप मिल जायेगा।''

तब असंघती ने कहा, ''गहनों की यह गठरी हमें दे दोगे न?''

''अवश्य देंगे। इसके बदले आपको हमें कुछ देना होगा,'' छोटे भूत ने कहा।

सास-बहू ने आशा-भरे स्वर में एक साथ कहा, ''अवश्य, कहिये, आपको हम क्या दें?''

''अगली पूर्णिमा के दिन गहनों की इस गठरी को लेकर फिर से आयेंगे। हमको विश्वास हो

Tuesday मंगलवार ചൊവ്വ Malayalam चोवा

जाना चाहिये कि गहनों की इस गठरी के लिए नहीं, बल्कि सचमुच ही तुम दोनों के बीच अच्छे संबंध हैं, तुम एक-दूसरे का आदर करते हो। हम अदृश्य रहेंगे, पर हम तुम दोनों पर नज़र रखेंगे। सबेरा होने जा रहा है, जाओ और अपने-अपने काम में लग जाओ।'' दोनों भूतों ने कहा।

सास-बहू ने खुश होते हुए सिर हिलाया और एक-दूसरे का हाथ पकड़े अंदर चली गयीं। भूत भी दीवार फांदकर आंखों से ओझल हो गये।

दूसरे ही दिन से सास-बहू, माँ-बेटी की तरह रहने लगीं। अब उनमें किसी प्रकार का मन-मुटाव नहीं था। एक-दूसरे की बात टालते नहीं थे। उनमें हुए परिवर्तन को देखकर अमर चकित रह गया और उसे आनंद भी हुआ। यों तीस दिन बीत गये।

वह पूर्णिमा की रात्रि थी। चांदनी बिछी हुई थी। सास-बहू बड़ी बेचैनी से भूतों का इंतज़ार करने लगीं। बिना सोये वे उनकी प्रतीक्षा में थीं। सूर्योदय होने को था, पर भूतों का पता नहीं।

सास पार्वती ने बहू असंघती से दुख-भरे स्वर में कहा, ''भूतों ने हमसे कहा था कि बिना किसी प्रकार के स्वार्थ के हमें एक दूसरे के साथ प्रेमपूर्वक व्यवहार करना चाहिये। परंतु कभी-कभी मेरे मन में स्वार्थ उभर आया और मैंने तुमसे प्रेम का नाटक किया। भूतों ने यह जान लिया होगा। इसीलिए वे आये नहीं।''

''तुम्हारी ही तरह मेरे मन में भी बुरे विचार आये। गहनों की बात छोड़ो। हम आगे से क्यों न अच्छे बने रहें; एक-दूसरे की इज़्ज़त क्यों न करें? एक महीने तक हमारे संबंध बड़े ही मीठे रहे। इसी तरह झगड़ा किये बिना भविष्य में भी रहेंगी। तब, आपका बेटा भी खुश होगा।'' असंघती ने गंभीर स्वर में कहा।

''हाँ, हाँ, तुमने ठीक कहा। छोटी हो, फिर भी तुमने कितना ठीक सोचा।'' कहती हुई पार्वती ने बहू की भरपूर प्रशंसा की।

बगल के कमरे में लेटे अमर ने उन दोनों की बातें सुन लीं। सास-बहू में हुए परिवर्तन को देखकर उसे बहुत आनंद हुआ। पर उसे यह मालूम नहीं था कि उसके दोनों दोस्त भूतों के रूप में आये और सास-बहू का यह झगड़ा ख़त्म कर दिया।

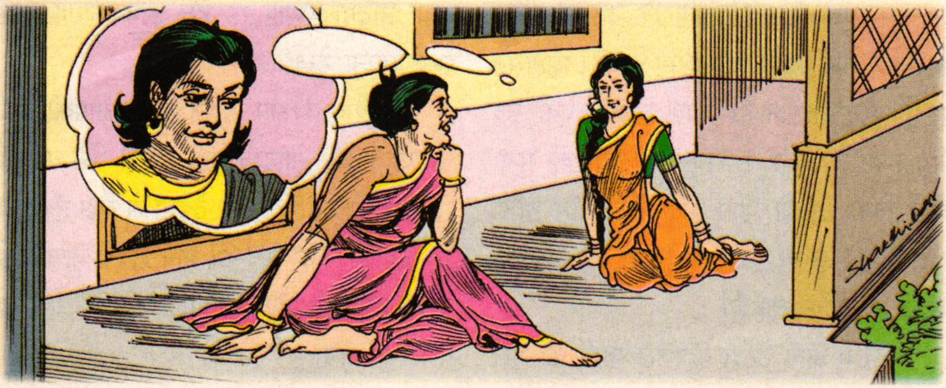

Tuesday मंगलवार Santali बाले

अजीब सपना

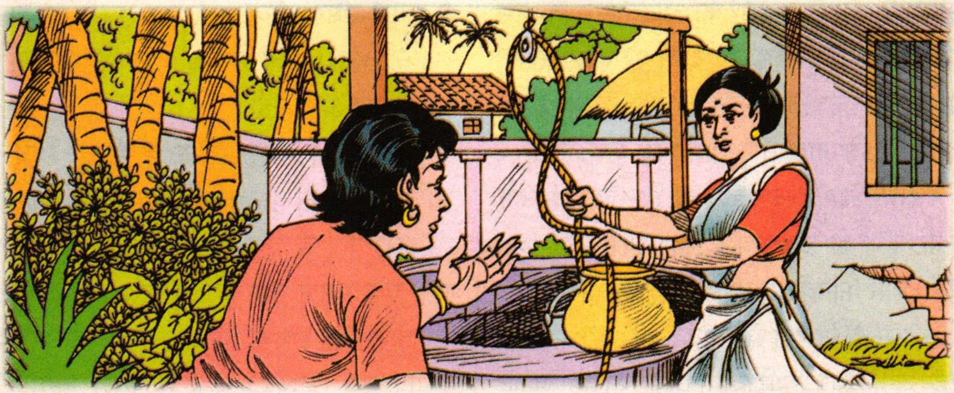

शिवराम लक्ष्मीपुर गांव का निवासी था। वह उस गांव के एक धनी परिवार का युवक था। उसके माता-पिता उसके बचपन में ही गुज़र चुके थे, इसलिए उसकी फूफी ने उसे पाला-पोसा। बचपन से ही वह अव्वल दर्जे का सुस्त था। खेत का काम खुद नहीं करता था। बल्कि और नौकरों पर छोड़कर गांव में मटरगस्ती करता रहता था।

एक दिन, अमावस्या की रात को जब खाकर खो गया, उसने एक अजीब सपना देखा।

उस सपने में उसने देखा कि दुर्गा के मंदिर के सामने सोने का एक सिंहासन है। उस सिंहासन पर वह खुद आसीन है। उसके सिर पर एक उल्लू बैठा हुआ है। गांव के सब लोग दुर्गा की पूजा किये बिना उसकी पूजा कर रहे हैं और नैवेद्य चढ़ा रहे हैं। दूर पर खड़ा एक कुत्ता उसे लगातार देखते हुए भौंक रहा है।

शिवराम जाग उठा। वह उस सपने को भूल नहीं पाया। उसने फूकी से इस सपने का मतलब पूछा। फूफी हँस पड़ी और बोली ''अरे शिव, सपने देव-रहस्या होते हैं। हम जैसे लोगों की समझ के बाहर होते हैं। हमारा ग्रमाधिकारी हरिनारायण बुद्धिमान है। उससे पूछो तो वह तुम्हें इसका रहस्य समझायेगा।''

शिवराम, हरिनारायण से मिला और अपने सपने के बारे में सविस्तार बताया। तब हरिनारायण ने कहा, ''तुम अपने आप को बहुत बड़ा आदमी समझ रहे हो। इसी कारण तुमने ऐसा सपना देखा।''

तब शिव ने कहा, ''मैंने अपने आपको कभी भी बहुत बड़ा आदमी नहीं माना। मैंने कल्पना भी नहीं की कि मैं किसी देवता से बड़ा हूँ। ठीक है, आपका कहा सच भी मान लूँ तो कुत्ता मुझे देखते हुए क्यों भौंकने लगा? उल्लू मेरे सिर पर क्यों बैठ गया?''

हरिनारायण ने अपना सिर खुजलाते हुए कहा, ''हमारे पड़ोसी गांव के श्रीधर ने सपनों के बारे में कई ग्रंथों का अध्ययन किया। उससे पूछना।''

शिव, श्रीधर से मिला और अपने संदेह व्यक्त किये। चकित होते हुए उसने उसे दो-तीन बार ग़ौर से देखा और कहा, ''तुम्हारे गांव में कोई अनर्थ होनेवाला है, इसीलिए गांव के लोग देवी की पूजा न करके तुम्हारी पूजा कर रहे हैं।''

शिवराम को उसका दिया विवरण पसंद नहीं आया। उसने पूछा, ''तो फिर कुत्ते और उल्लू के बारे में आपका क्या कहना है?''

''कुत्ता भूखा है, इसलिए वह भौंक रहा है। देवी की पूजा न कर, लोग तुम्हारी पूजा कर रहे हैं, इसलिए तुम्हारा अनिष्ट सूचक उल्लू तुम्हारे सिर पर बैठ गया है।'' श्रीधर ने कहा।

श्रीधर से अनुमति लेकर वह अपना गांव जाने निकल पड़ा। गांव में पहुँचने के बाद थकावट की वजह से वह एक पेड के नीचे बैठ गया। वहीं बैठे वैरागी ने उससे पूछा, ''अरे शिवराम, कुछ दिनों से दिख नहीं रहे हो। कहाँ गये थे?''

गांव के लोग उस वैरागी को पागल मानते हैं और जब देखो, उसकी हँसी उड़ाते रहते हैं। शिव को भी इसका पता है। फिर भी उसने बैरागी से कहा, ''मैंने एक अजीब सपना देखा। उसका मतलब जानने के लिए गावों में घूमता रहा। आज ही लौट रहा हूँ।''

बैरागी ने हँसते हुए कहा, "किसी ने भी उसका सहीं मतलब बताया नहीं होगा। है न?"

"हाँ, हाँ तुमने ठीक कहा। कोई भी उस सपने का मतलब समझा नहीं सका। पर, तुम्हें कैसे इस बात का पता चला?" शिवराम ने पूछा।

"अरे मूर्ख, तुम्हारे सपने का मतलब समझानेवाला इस भूमि पर एक ही मानव है। वह कोई और नहीं, मैं स्वयं हूँ।"

शिवराम ने लंबी सांस खींचते हुए कहा, "ठीक है, बताना कि इस सपने का क्या मतलब है?" फिर उसने उस सपने का पूरा विवरण दिया।

बैरागी ने ठठाकर हँसते हुए कहा, "सुनो। लोगों में दैव भक्ति दिन ब दिन कम होती जा रही है। लोगों में स्वार्थ और सुस्ती तीव्र रूप से बढ़ते जा रहे हैं। इसका जीता-जागता उदाहरण है, लोगों की, तुम जैसे निकम्मों और सुस्तों की पूजा करना। अब रही सुवर्ण सिंहासन की बात। वह तुममें भरे अहंकार व दुराशा का द्योतक है।

"कुत्ता क्यों भौंकता रहा? उल्लू मेरे सिरपर क्यों गिरा?" शिवराम ने पूछा। बैरागी ने कहा, "तुम्हारी फूफी तुम्हें हर रोज़ पेट भर खाना खिलाती है और साथ ही उस कुत्ते को भी। वह कुत्ता तुमसे घृणा करता है, क्योंकि अपने खेत के काम खुद न करके दूसरों से करवाते हो और गांव में बेकार घूमते रहते हो। अपनी घृणा को प्रदर्शित करने के उद्देश्य से ही वह भौंकता है। अब रही, उल्लू की बात। उल्लू को अंधकार बहुत पसंद है। सुस्ती व अज्ञान में ज़िन्दगी गुज़ारनेवाले तुम अंधकार से भी बढ़कर घोर अंधकार हो। इसी वजह से उल्लू ने प्यार से तुम्हारा आश्रय लिया।"

शिवराम ने हाथ जोड़कर कहा, "तुम पागल नहीं हो, महान बुद्धिमान हो। सपने के मतलब को समझाने की तुम्हारी शैली और पद्धति मुझे बेहद पसंद आयी। अब मेरी आँखें खुल गयीं।"

वह जब निकलने ही वाला था, बैरागी ने उसे रोकते हुए कहा, "देखो, जब पूरा गांव चिल्ला-चिल्लाकर मुझे पागल ठहरा रहा है, तो मुझे पागल न ठहरानेवाले तुम कौन होते हो? जा, जा, अब मुझे इस गांव में नहीं रहना है," कहता हुआ बैरागी वहाँ से चला गया।

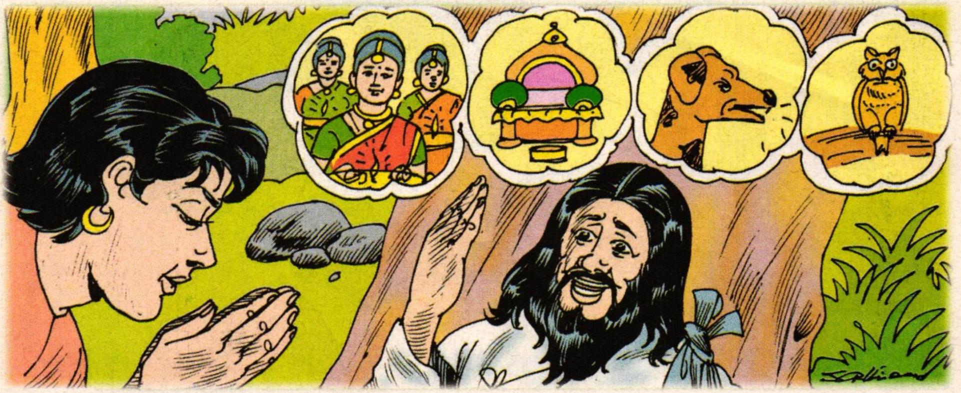

विनय का शास्त्र ज्ञान

वेणु शर्मा प्रसिद्ध वैद्य हैं। अपने गाँव में ही नहीं, आसपास के गाँवों में भी उनकी बड़ी ख्याति है। हर कोई उनकी चिकित्सा-पद्धति की खूब प्रशंसा करता है। एक दिन रोगियों की जांच और उन्हें स्वास्थ्य संबंधी आवश्यक सलाह देने के बाद घर के अंदर जाने ही वाले थे कि बीस साल का एक युवक वहाँ आया। उसने शर्मा को सविनय प्रणाम किया।

वेणु शर्मा ने सोचा कि वह शायद किसी रोग से पीड़ित है और दवा लेने आया होगा। वे उससे पूछने ही जा रहे थे कि इतने में उस युवक ने आगे बढ़कर कहा, ''मेरा नाम विनय है। पिछले दस सालों से प्रसिद्ध वैद्यों की सेवा में रह चुका है और वैद्य शास्त्र संबंधी बहुत-से ग्रंथों का पठन भी किया। वैद्य शास्त्र के बारे में अच्छी जानकारी भी पायी। आपकी सेवा करते हुए यहाँ भी रहना चाहता हूँ और स्वयं वैद्य बनकर रोगियों की चिकित्सा करना चाहता हूँ। कृपया आप मुझे इसकी अनुमति और आशीर्वाद दें।''

उसकी बातों को सुनते हुए वेणु शर्मा को लगा कि उसमें विद्या की मात्रा कम है और आवश्यकता से अधिक दंभ है। उन्होंने उस युवक से कहा, ''मेरी सेवा-शुश्रूषा तुम किसी भी दिन शुरू कर सकते हो। अभी-अभी ख़बर मिली है कि शरभ ने अपने घर के पिछवाडे के केले के पेड़ के पत्तों को काटते हुए अपना हाथ काट लिया। उसकी फ़ौरन चिकित्सा होनी चाहिये। तुम ही बताओ कि अब क्या करें?''

विनय घबराता हुआ बोला, ''सब ग्रंथ अपने अतिथि गृह में छोड़ आया हूँ। ऐसी दुर्घटनाओं की चिकित्सा कैसी हो, यह चरक में या सुश्रुत में क्या लिखा हुआ है, देखकर आता हूँ।'' कहकर वह जाने लगा।

वेणु शर्मा ने उसे रोकते हुए कहा, ''तुम अगर चरक व सुश्रुत ग्रंथों को पढ़ने लगोगे और उसके बाद ही चिकित्सा करोगे तो तब तक शरभ का पूरा का पूरा रक्त बह जायेगा और वह परलोक सिधार जायेगा। एक काम करना। अच्छा यही होगा कि कुछ और समय तक उन ग्रंथों का अध्ययन गंभीरतापूर्वक करते रहना।''

- रमेश पाठक

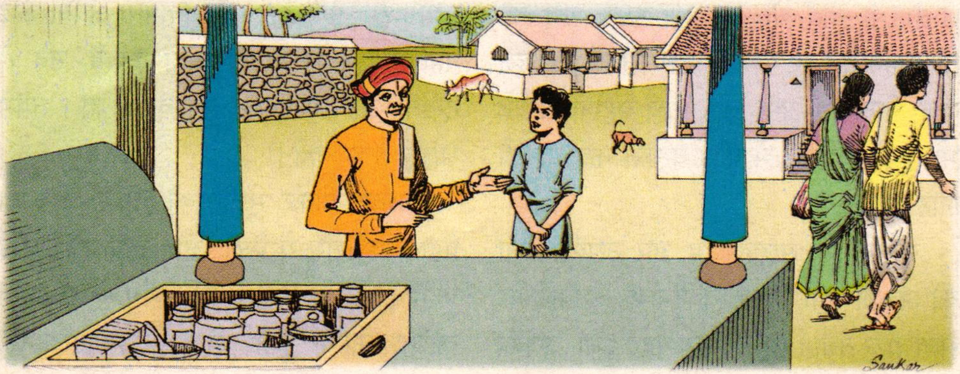

सुधीर शहर गया !

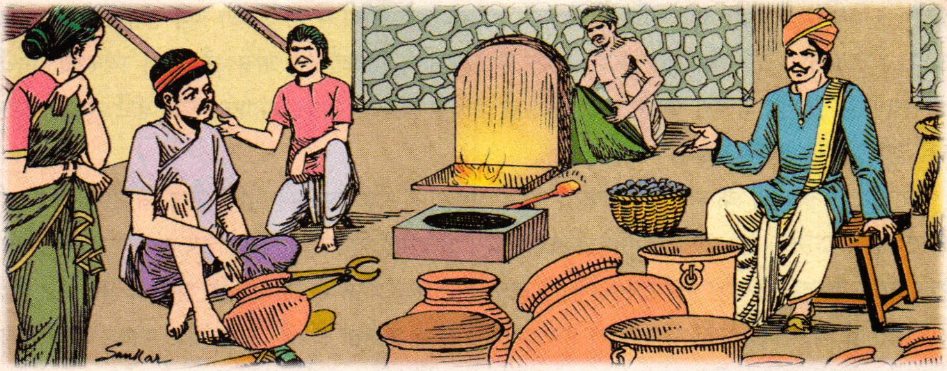

सुधीर और शंभु एक ही गाँव के निवासी थे। सुधीर बढ़ई तो शंभु लोहार। दोनों अपने - अपने पेशों में मोहर थे। एक बार एक व्यापारी उस गाँव में आया, जो कांसे व तांबे के बरतनों का व्यापार करता था। शंभु के बनाये कांसे व तांबे के बरतनों का काम उसे बहुत अच्छा लगा। उसने तगड़ा वेतन देने का आश्वासन देकर उसे शहर बुलाया।

शंभु जाने को उतावला था, पर उसकी पत्नी ने एतराज जताया। उस समय उसका साला भी वहाँ मौजूद था। उसने शंभु को प्रोत्साहन देते हुए कहा, ''ज़रूर जाना। अच्छा वेतन मिलेगा। अगर चार-पांच महीनों कर्ँाद भी तुम्हारी कमाई में कोई बरकत नहीं हुई तो लौट आना।''

उसकी यह सलाह शंभु और उसकी पत्नी को अच्छी लगी। दूसरे ही दिन वह व्यापारी के साथ शहर गया। यह जो सब कुछ हुआ, उसकी पूरी जानकारी बगल की गली में रहनेवाले बढ़ई सुधीर की पत्नी भानुमति को मिली। उसका पक्का विश्वास था कि आसपास के गाँवों में उसकेपति की बराबरी कोई बढई नहीं है। उस दिन से वह अपने पति से कहती रही, ''हम भी शहर जायेंगे। खूब कमायेंगे और वहीं एक घर बनाकर आराम से ज़िन्दगी बितायेंगे।''

सुधीर की पत्नी की जिद जोर पकड़ती गयी। वह उससे कहने लगी, ''शंभु ने अपना परिवार छोड दिया और कमाने शहर चला गया। हम तो निस्संतान हैं। हमारा अपना कोई नहीं है। जबसे हमारी शादी हुई है, तब से देखती आ रही हूँ कि तुम कायर हो। तुममें साहस है ही नहीं।''

लाचार होकर सुधीर को भी शहर जाना पडा। वहाँ शंभु से मिला और अपने लिए कोई काम ढूँढने की विनती की। शंभु ने भी बहुत कोशिश की पर सुधीर को कोई काम दिला नहीं

Wednesday बुधवार बुधवार Marathi बुधवार

सका। सब यही कहते थे कि शहर में बढइयों की भरमार है। जो बढई हैं, उन्हीं के पास जब काम नहीं है - तो नये बढई को कहाँ से काम दिलायें।

सुधीर चार महीनों तक शहर में काम की खोज में लगा रहा। जो रक़म वह गाँव से लाया था, वह भी ख़त्म होने को थी। आख़िर उसने तंग आकर गाँव वापस जाने का निर्णय लिया। परंतु उसे इस बात का डर था कि उसे एक कौडी के भी बिना लौटे देखकर उसकी पत्नी ताने कसेगी। उसने खूब सोचा और नाक से लेकरे सर तक का भाग कपड़े से ढक लिया और रात को घर पहुँचकर दरवाज़ा खटखटाया।

पत्नी भानुमति दरवाजा खोलते ही उस्रा देखकर घबराते हुए पूछा, ''यह क्या? न ही नाक दिखायी दे रही है, न ही कान। अपने चहरे को यों क्यों छुपा रहे हो?''

सुधीर ने आत्मविश्वास के साथ जवाब दिया, ''शहर में मैंने जो रक़म कमायी, उसे एक थैली में बंद करके ला रहा था। गाँव की सरहदों पर चोरों ने मुझपर हमला कर दिया। पसीना बहाकर कमाया, इतनी आसानी से वह रक़म उन्हें थोड़े ही दूँगा! मैं भी उनपर टूट पडा। इतने में चारों में से एक ने तलवार निकाली और कहा, ''तुम्हें धन चाहिये या प्राण, इसका फ़ैसला अभी कर लेना। चुपचाप वह थैली हमें दे दोगे तो तुम्हें छोड़ देंगे। अगर तुमने हमारी बात नहीं मानी तो हम तुम्हारी नाक और कान काट डालेंगे।''

''इतनी बडी नाइन्साफी! वह रक़म उन्हें दे डालते तो कितना अच्छा होता। इससे पढकर अपमान की बात क्या हो सकती है?'' कहकर भानुमति अपने पति के चेहरे का कपड़ा खींचने ही वाली थी कि सुधीर ने खुद ही खींचते हुए कहा, ''तुमने अभी जो कहा वही काम मैंनें किया है। शहर में जितना भी कमाया, उन बदमाशों ने छीन लिया। अच्छा हुआ कम से कम इस नाक और कान को बचाकर तो लौट पाया।,'' स्वर को कंपाते हुए उसने कहा।

''उन्होंने आपसे धन ही तो छीना है न कि आपके बढ़ई का काम। चिंतित मत होइये।'' कहती हुई भानुमति ने पति को ढाढस बँधाया।

Wednesday बुधवार ಬುಧವಾರ Kannada बुधवार

Avail the loyalty bonus!

Chandamama Subscribers will get flat 10% off on subscription renewals! (All Editions)

Chandamama!

Because stories make the world go round...

Choose your Chandamama!
Go to www.chandamama.com & subscribe Now!!

Chandamama is available in English and 12 regional languages. Junior Chandamama for children below 9 years is available only in English.

I want to subscribe to / gift / renew subscription for the following editions of Chandamama:

☐ English ☐ Telugu ☐ Tamil ☐ Kannada ☐ Hindi
☐ Marathi ☐ Gujarati ☐ Oriya ☐ Bengali ☐ Sanskrit
☐ Santali ☐ Malayalam ☐ Assamese ☐ Junior

Name: ....

Date of Birth: .... Sex : ....

Address: ....

....

....

.... City: ....

State: .... Pin: ....

Telephone: ....

Mobile: ....

Email: ....

Subscription Number 9for renewals): ....

Gift Subscription to the following address:

....

....

....

....

Enclosed Cheque/DD* for Rupees..........................

Cheque/DD No ....

favouring Chandamama India Ltd on..........................

....bank.

Please mail the subscription form to:
Chandamama India Limited,
B-3, Lunic Industries, Cross Road 'B', MIDC, Andheri (East),
Mumbai-400093. Phone +91 22 28312872 / 28311849
Email: subscription@chandamama.com
You can also subscribe online at: www.chandamama.com

Get surprise gifts by subscribing this month **

Take Your Pick!	1 YEAR	2 YEARS	3 YEARS	4 YEARS	5 YEARS
ENGLISH (Rs. 25/- per copy)	Rs. 300	Rs. 540	Rs. 765	Rs. 960	Rs. 1125
You Save		Rs. 60	Rs. 135	Rs. 240	Rs. 375
REGIONAL (Rs. 20/- per copy)	Rs. 240	Rs. 430	Rs. 610	Rs. 770	Rs. 900
You Save		Rs. 50	Rs. 110	Rs. 190	Rs. 300
JUNIOR (Rs. 15/- per copy)	Rs. 180	Rs. 325	Rs. 460	Rs. 575	Rs. 675
You Save		Rs. 35	Rs. 80	Rs. 145	Rs. 225

** conditions apply

Annual Subscription Overseas : US $40 for English Chandamama, US $30 for Regional Languages, US $25 for Junior Chandamama (including shipping and handling charges) by air mail.

बदसूरत दिखने का दर्द

अरुणाचल प्रदेश में आज भी अपतनिस एक ऐसी जनजाति है जो सूर्य एवं चंद्रमा को अपने भगवान के रूप में पूजती है। भूत भगाने वाले ओझा उनके तथा भगवानों के बीच मध्यस्थ होते हैं। अगर कोई बीमार पड़ जाता है तो ओझा व्यक्ति को रोग मुक्त करने के लिए सब प्रकार के बलिदान और धर्मानुष्ठान करते हैं।

अपतनिस अपना परिश्रम से कमाया हुआ धन धार्मिक मठमंदिर बनाने में नष्ट नहीं करते। टैटू बनवाना और विशेष प्रकार से चीखना, नाक लौंग छिदवाना स्त्रियों में कभी बहुत प्रचलित था। एक बूढ़े अपतनिस की मौत जश्न का कारण होती है ऐसे अवसर पर नाचना गाना होता है तथा उपहारों का आदान-प्रदान होता है। ये उपहार मृतक के साथ ही दफना दिए जाते हैं।

बिना दरवाजों के घर वाला गाँव

तुम्हें अत्यंत आश्चर्य होगा न! अगर तुम इस गाँव को देखना चाहते हो तो आपको शिरडी से ६५ किमी दूर शनि शिंगनापुर की यात्रा करनी होगी। यह गाँव हिन्दु भगवान शनिग्रह के प्रसिद्ध मंदिर के लिए भी जाना जाता है।

शिंगनापुर में घरों में दरवाज़े नहीं हैं इनमें केवल चौखटें हैं। इसके बावजूद गाँव में चोरी की घटनाएँ नहीं होतीं। गाँववाले अपनी कीमती वस्तुएँ ताले चाबी में नहीं रखते। लोगों का विश्वास है जो चोरी की कोशिश करेगा उसे शनि महाराज दण्डित करेंगे।

श्रद्धालु, भक्तगण और यात्री शिंगनापुर में आने पर अपना कीमती सामान गाड़ियों में बिना दरवाज़े को ताला लगाए और बिना किसी सुरक्षा की चिंता के छोड़ सकते हैं। एक घर में घुसने का एकमात्र अवरोध परदा है जो सड़क के जानवरों को अंदर आने से रोकने के लिए है।

वारिस

दिल्ली शहर, १५ अप्रैल १२३६ ईसवी

शम्शुद्दीन इल्तुतमिश का वारिस, दिल्ली सल्तनत का शहज़ादा, रुक्नुद्दीन फिरोज़ शाह बेहद गुस्से में था।

फिरोज़ दर्द से कराहते हुए अपने बेहद कीमती साजोसामान से सजे हाथी पर सीधा बैठा हुआ था। वह घोड़े की पीठ पर सफ़र नहीं कर सकता था; उसका बदन दुख रहा था। यहाँ तक कि एक हाथी की सवारी भी तक़लीफदेह थी।

उसके फौजदार ने ज़मीन की ओर किसी पर दरवाज़ा खोलने के लिए चिल्लाते हुए बहुत सावधानी से देखा। फिरोज़ ने बड़े से दरारों वाले लोहे के पलड़ों को ग़ौर से देखा - उसे खुद की काफी लंबी गैरहाजिरी के बाद खुशी से चिल्लाती अवाम द्वारा उसके इस्तक़बाल की उम्मीद थी।

लेकिन दिल्ली बिल्कुल सुनसान नज़र आयी।

उसने अपने जवाहरात जड़े लबादे को ठीक करते हुए बेगानगी से कंधे उचकाए। उसके अब्बा मौत के क़रीब थे; शायद इसी से ऐसा था। हालांकि उसे यह समझ नहीं आया कि एक मरता हुआ बादशाह किसी को उसकी कदमबोशी करने से क्यों रोकेगा।

शाही महल के ठंडे गलियारे में पहुँचते ही उसने सुकून की साँस ली। बड़े हकीम उसे तुरंत ही मिल गए, खामोशी से उसके अब्बा की तबियत का तेज़ी से ब्यौरा दिया जो कि दुरुस्त नहीं थी।

फिरोज़ ने गहरी साँस ली। वह एक सादा कमरे के बाहर रुका, उसके चौखट पर कदम रखते ही पहरेदार बाहर चले गए।

अंदर पीला और नाकारा हो चुका बहादुर सैनिक बादशाह, इल्तुतमिश लेटा था - दवा लेते हुए उसके हाथ काँप रहे थे। अपने अब्बा के पास परेशानी से खड़े होने में वह झिझका।

इसका कुछ आभास फिरोज़ के दिमाग के पार गया; वह खुशफहमी में बैठा। "मैं आपकी इज्जत अफ़ज़ाही का एहसानमंद हूँ, अब्बा। मैं अपनी ओर से सब अच्छा करूँगा"-

इल्तुतमिश ने अपनी आँखों में चिढ़चिढ़ाहट व मौजी नाराज़गी लाते हुए एक हाथ हिलाया। "मेरे लख्तेजिगर, तुम्हारे यकीन को तोड़ने के लिए मुझे मुआफ करना, लेकिन मैंने अपना वारिस तय कर लिया है और वह तुम नहीं हो।"

फिरोज़ खामोश एकटक बैठा रह गया। "लेकिन - नसीरुद्दीन महमूद के बाद मैं ही सबसे बड़ा हूँ," वह हकलाया। "मेरा हक़ है -"

"हक़ - लेकिन क़ाबलियत नहीं।" इल्तुतमिश कराहा, उसकी बीमारी अपना कर्ज़ वसूल कर रही थी। "वह रजिया में है"

इस बार के झटके से फिरोज़ बेज़ुबान हो गया। "रजिया!" वह रुक कर चीखा। "मेरी आपा- एक औरत-"

"साफगोई से," इल्तुतमिश ने रूखेपन से कहा। "लेकिन बहादुरी और दिलेरी में एक आदमी का दिल है उसमें" वह खाँसा। "एक आदमी से कहीं ज़्यादा।"

"मुझे मालूम है!" फिरोज़ कूद कर खड़ा हो गया, कमरे में बेचैनी से चहलकदमी करने लगा। मैं इस पर यकीन करने की हिम्मत नहीं कर पा रहा। एक औरत, हरम के बाहर कदम रखेगी-

"बहुत हुआ। वह दिल्ली के तख़्त की चढ़ेगी जब मैं अपने बुज़ुर्गों से मिलने चलूँगा। तुम उसकी ज़रूरत के मुताबिक़ मदद करोगे।"

"इसी के लिए आपने मुझे दिल्ली बुलाया है।"

"यक़ीनन।"

एक मरते हुए आदमी से लड़ाई करने के बावजूद फिरोज़ को, उसकी कायरता ने अपने अब्बा, जिसने दिल्ली को सुरक्षित बनाया, पर वार करने से रोक लिया। इल्तुतमिश के पीले चेहरे पर फैली तकलीफ का यकीन होने पर वह अपनी एड़ियों पर घूमा और कमरे से तेज़ी से निकला। उसके अब्बा पूरी रात नहीं जी पाएँगे।

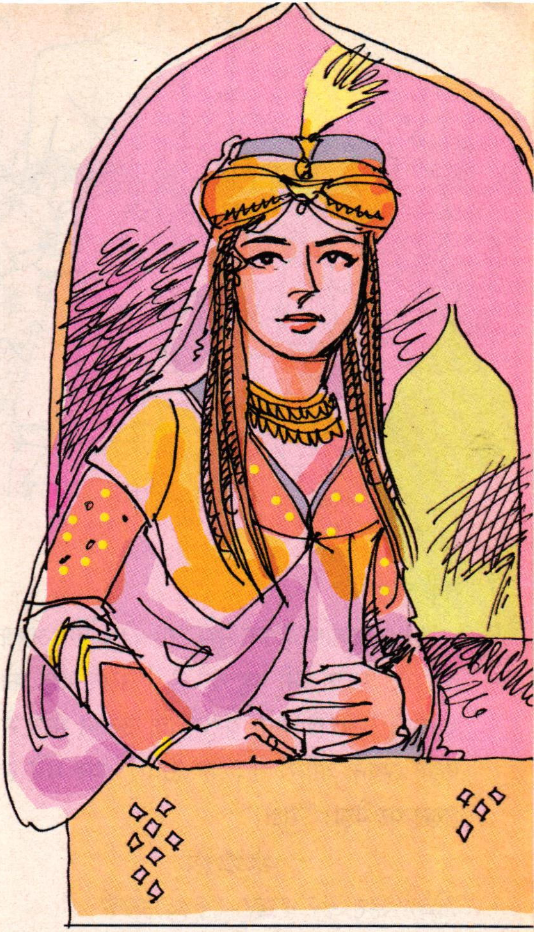

***

सुबह से ठीक एक घंटा पहले खबर आ गयी। शम्सुद्दीन इल्तुतमिश शांति से अपनी नींद में ही सुबह से एक घंटा पहले गुज़र गए, उनकी प्यारी दुख़्तर उनके पास ही खडी.थी।

रुक्नुद्दीन फिरोज़ शाह शाही दरबार गया, जहाँ सभी दरबारी इकट्ठा थे। वह धीरे-धीरे शाही तख़्त

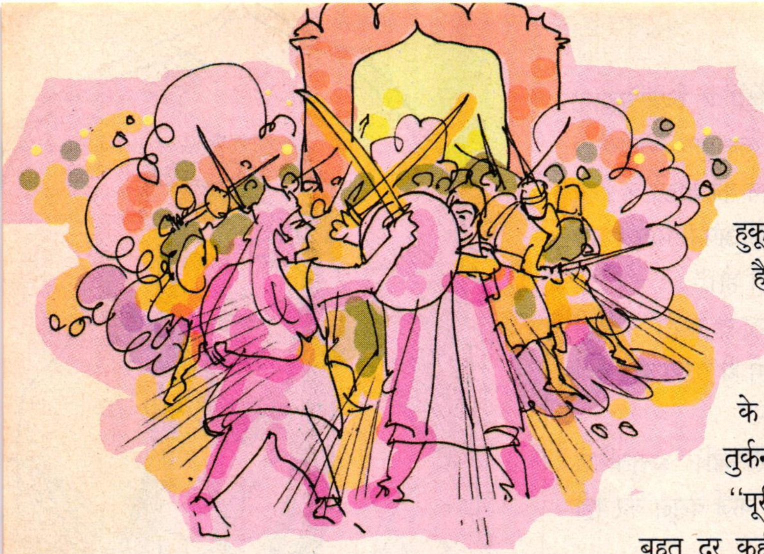

"अपने शराब के दौर, तवायफों और कमज़ोर फौजी हुकूमत के साथ। हाँ, मुझे मालूम है।"

"तब तुम्हें यह भी मालूम होगा कि इस सब के पीछे उसकी अम्मी, शाह तुर्कन उस की असल ताकत है।"

"पूरी दिल्ली यह जानती है।"

बहुत दूर कहीं दुहाई की लंबी और तेज़ आवाज़ सुनाई देती है। याकूत बेचैन हो उठता है।

"रजिया, लोग आपकी ओर ताक़ रहे हैं।"

"मैं एक औरत हूँ, याकूत।"

"आप ही उनकी एक उम्मीद हैं।"

रजियाउलद्दीन, इल्तुतमिश की दुख़्तर, उनकी दुख़्तरेदिल, साधारण सी चौकी पर से उठी जिस पर वह बैठी हुई थी।

धीरे-धीरे खिड़की तक टहलते हुए वह अब उठ चुकी थी। दिल्ली सुबह के सूरज की रोशनी में झिलमिलाने लगती है।

उसके अब्बा की मौत के बाद के सात महीने उसके लिए आसान नहीं थे।

उसने नीचे जमा हुई, शोर करती और चिल्लाती अवाम पर नज़र डाली। दिल्ली। यह शांत थी। बेचैन। जोशीली, सुन्दर।

याकूत के मुड़ने से पहले रजिया ने आसमान को घूर कर देखा।

"हम शाह तुर्कन से मिलने हरम जा रहे हैं।"

***

तक चला।

"मेरा दुर्भाग्य है कि मुझे आपको अपने अब्बा की मौत खबर देनी पड़ रही है," उसने भीड़ को बताया। "अच्छी बात यह है कि उन्होंने मरने से पहले अपना वारिस तय कर दिया।" वह धीरे से तख़्त पर बैठा। "मुझे।"

***

दिल्ली शहर, २२ नवंबर, १२३६ ईसवी

"**ह**में क्या करना है ?" जलालुद्दीन याकूत ने अपने हाथ मले। लाहौर, मुल्तान, हंसी, बदाउँ और अवध के नवाबों ने शहर पर हमला कर दिया है। वे दिल्ली को तबाह कर देंगे - यह आप जानती हैं और आपका भाई -"

"फिरोज़ मेरा भाई नहीं है। उसका यह हक़ तो तभी खत्म हो गया जब उस ने मुझसे दिल्ली हथिया ली थी।"

"यह समय भाई-बहन के झगडे. का नहीं है। फिरोज़ ने दिल्ली ऐसे बर्बाद की है जैसे कुछ ही लोग कर सकते हैं।"

दिल्ली के सीमान्त प्रदेश, १४ दिसंबर १२३६ ईसवी

"**मु**झे इस पर यकीऩ नहीं होता। मैं नहीं कर सकता!" आवाज़ एक गूँज के साथ उठी। हंसी का नवाब निराश था - उसके लोगों ने उसे अपनी आँखें मींचे, काँपते हाथों और लड़खडाती आवाज़ के साथ देखा।

खब़र मिनटों में जंगल की आग की तरह फैल गयी। उसके प्रांत को बाँधे हुए, दिल्ली के चारों ओर की अंतहीन घेरा बंदी अब खात्मे पर थी। बदाउँ और अवध के नवाब दिल्ली की रजिया सुल्ताना से मिल गए थे। उसने उन्हें अपनी ओर किस तरह मिलाया था कोई नहीं जानता था - लेकिन इसका मतलब यह था कि उसने असंभव कर दिखाया था बिना फौज के आगे आए अपने दुश्मनों को तोड़कर और अपनी ताकत मज़बूत की।

हंसी का नवाब घेराबंदी के लिए केवल इसलिए राज़ी हुआ था क्योंकि उसे औरों की मदद मिली हुई थी। अब वह सब खत्म हो चुका था।

***

आधी रात बीत चुकी थी लेकिन जश्न अभी जारी था। शाही दरबार विजयोल्लास और हंसी के ठहाकों के साथ रौनक से चमक रहा था। दरबारी और सैनिक आपस में गले मिल रहे थे, वे सुरक्षित हैं इस का बड़ी ही मुश्किल से यकीऩ कर पा रहे थे।

याकूत अपने पास बैठी जवान औरत की ओर देख कर मुस्कुराया। "आपने असंभव को हासिल किया।"

रजिय़ा मुस्कुरायी। "शाह तुर्कन को हिरासत में लेना ही इसका उपाय था। मैं जानती थी कि फिरोज़ टूट जाएगा।"

"लेकिन पाँचों गवर्नर्स में फूट पैदा करना और घेराबंदी तोड़ना? वह एक बढ़िया चाल थी, सुल्ताना।"

"ऐसे सुल्ताना कहकर कभी मत पुकारना, याकूत। मैं एक सुल्तान की बीवी या रखैल नहीं हूँ - मैं जलालतुद्दीन रजिय़ा, दिल्ली की सुल्तान हूँ और मैंने वही किया जो दिल्ली का एक शासक करता।"

"दुश्मनों को एक हाथ से हरा देना?"

"नहीं। अपने लोगों पर यकीऩ और बदले में उनका यकीऩ हासिल करना। रजिय़ा मुस्कुराई।

बाहर दिल्ली में सुबह हो चुकी थी।

- पवित्रा श्रीनिवासन

चूँ चूँ का डिब्बा

आप कितनी भाषाएँ जानते हैं? अब *चन्दामामा* के साथ कई भाषाएँ सीखिए और आत्म विश्वास से भारत भ्रमण कीजिए!

English	Sunday	Monday	Tuesday	Wednesday	Thursday
Hindi	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार
Telugu	ఆదివారం आदिवारम	సోమవారం सोमवारम	మంగళవారం मंगलवारम	బుధవారం बुधवारम	గురువారం गुरुवारम
Tamil	ஞாயிற்றுக்கிழமை न्यायित्रु किज़्हामाइ	திங்கள்கிழமை थिन्गाल किज़्हामाइ	செவ்வாய்க்கிழமை सेव्वाइ किज़्हामाइ	புதன்கிழமை भुथान किज़्हामाइ	வியாழக்கிழமை वियाज़्हाक किज़्हामाइ
Bengali	রবিঁবার रबिबार	সোমবার सोमबार	মঙ্গলবার मंगलबार	বুধবার बुधबार	বৃহস্পাথিঁবার बृहस्पथिबार
Marathi	रविवार रविवार	सोमवार सोमवार	मंगळवार मंगलवार	बुधवार बुधवार	गुरुवार गुरुवार
Kannada	ಭಾನುವಾರ भानुवार	ಸೋಮವಾರ सोमवार	ಮಂಗಳವಾರ मंगलवार	ಬುಧವಾರ बुधवार	ಗುರುವಾರ गुरुवार
Oriya	ରବିବାର रविवार	ସୋମବାର सोमवार	ମଙ୍ଗଳବାର मंगलवार	ବୁଧବାର बुधवार	ଗୁରୁବାର गुरुवार
Gujarati	રવિવાર रविवार	સોમવાર सोमवार	મંગળવાર मंगलवार	બુધવાર बुधवार	ગુરુવાર गुरुवार
Assamese	ৰবিবাৰ रोबिबार	সোমবাৰ क्षोमबार	মঙ্গলবাৰ मोगोलबार	বুধবাৰ बुधबार	বৃহস্পতিবাৰ बृहोस्पोतिबार
Malayalam	ഞായർ न्जयार	തിങ്കൾ थिन्गाल	ചൊവ്വ चोवा	ബുധൻ बुधान	വ്യാഴം व्याझम
Santali	ᱥᱤᱝᱜᱮ सिंगे	ᱚᱛᱮ ओते	ᱵᱟᱞᱮ बाले	ᱥᱟᱜᱩᱱ सागुन	ᱥᱟᱨᱫᱤ सारिदेइ
Sanskrit	रविवासरः रविवासर:	सोमवासरः सोमवासर:	भौमवासरः भौमवासर:	बुधवासरः बुधवासर:	बृहस्पतिवासरः बृहस्पतिवासर:

कोष्ठक में दी गयी भाषाओं में सप्ताह के दिनों के नाम लिखिए :

रविवार (असमिया) :

सोमवार (तेलगू) :

मंगलवार (मलयालम) :

Wednesday बुधवार बुधवासरः Sanskrit बुधवासर:

English	Friday	Saturday	Time	Date	Day
Hindi	शुक्रवार	शनिवार	समय	दिनांक	दिन
Telugu	శుక్రవారం सुक्रवारम	శనివారం सनिवारम	సమయం समयम	తేది थेदि	రోజు रोजु
Tamil	வெள்ளிக்கிழமை वेल्लिक किज़्हामाइ	சனிக்கிழமை सानिक किज़्हामाइ	நேரம் नेरम	தேதி थेधि	நாள் नाल
Bengali	শুক্রবার शुक्रबार	শনিঁবার शनिबार	সময় समय	থারিঁখ थारिख	ধিঁন धिन
Marathi	शुक्रवार शुक्रवार	शनिवार शनिवार	वेळ वेल	तारीख तारिख	दिवस दिवस
Kannada	ಶುಕ್ರವಾರ शुक्रवार	ಶನಿವಾರ शनिवार	ಸಮಯ समय	ದಿನಾಂಕ दिनांक	ದಿನ दिन
Oriya	ଶୁକ୍ରବାର शुक्रवार	ଶନିବାର शनिवार	ସମୟ समय	ତାରିଖ दिनांक	ଦିନ दिन
Gujarati	શુક્રવાર शुक्रवार	શનિવાર शनिवार	સમય समय	તારીખ तारीख	દિવસ दिवस
Assamese	শুক্রবাৰ क्षुक्रोबार	শনিবাৰ क्षनिबार	বাৰ क्षोमोय	তাৰিথ तारिख	সময় बार
Malayalam	വെള്ളി वेल्लि	ശനി सनि	സമയം समयम	തീയതി थियाथि	ദിവസം दिवसम
Santali	ᱡᱟᱨᱩᱢ जारुम	ᱱᱩᱦᱩᱢ नुहुम	ᱚᱠᱛᱚ ओकुतो	ᱢᱟᱦᱤᱛ माहित	ᱢᱟᱦᱟ माहित माह
Sanskrit	शुक्रवासरः शुक्रवासर:	शनिवासरः शनिवासर:	समयम् समयम्	तिथिः तिथि:	दिवसः दिवस:

बुधवार (संस्कृत) :

बृहस्पतिवार (संथाली) :

शुक्रवार (गुजराती) :

शनिवार (बंगाली) :

१. रिक्त स्थान भरिए :

अभी समय .... है ।

आज .... दिनांक है ।

सोमवार वह दिन है जो .... के बाद है ।

Thursday गुरुवार గురువారం Telugu गुरुवारम

पाताल दुर्ग-२०

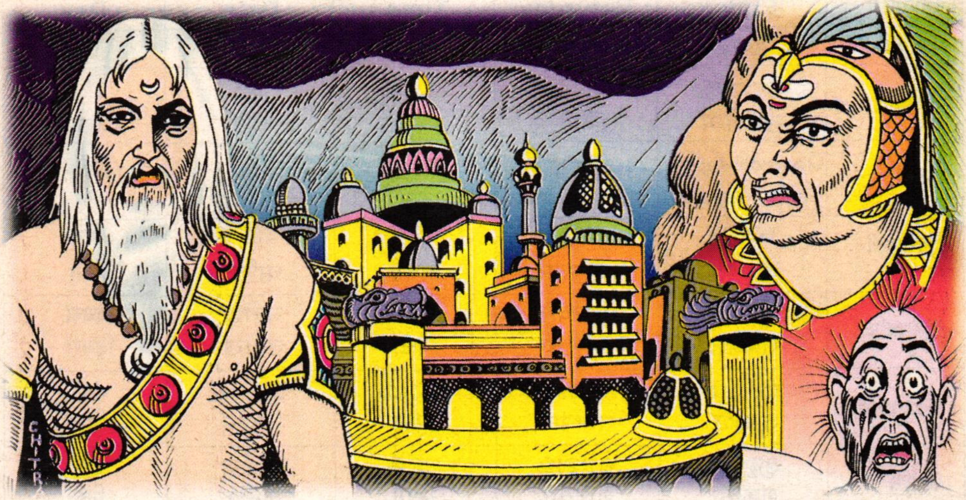

(राक्षस जब काले गरुड़ को देखकर साष्टान्ग कर रहे थे, तो मान्त्रित ने पहाड़ के सरोवर के जल को पाताल दुर्ग की ओर छोड़ दिया। उस पानी में डूबकर कई राक्षस मर गये। जो बच गये थे, उनके साथ महाकलि सुरन्ग की ओर निकला और उस सुरंग की शशिकान्त और कुम्भीर अपने साथियों के साथ रक्षा कर रहे थे। बाद में-)

सुरन्ग के मार्ग पर आते ही कालशम्बर मान्त्रिक ने कुम्भीर से चिल्लाकर कहा ''कुम्भीर! अब तुम्हारे पाताल दुर्ग का राजा होने के समय आ गया है। तुम्हारे राहु वंशवाले कई पीढ़ियों तक दण्डकारण्य में राज्य कर सकते हैं। केतु वंश के राक्षसों का सर्वनाश हो रहा है।''

मान्त्रिक अभी यह कह ही रहा था कि धूमक ने उसके कन्धे पर हाथ रखकर, पीछे की ओर मोड़ते हुए कहा - ''महाकलि सुरन्ग के रास्ते पास आ रहा है।''

''वह क्या करना चाह रहा है, यह मैं जानता हूँ। आने दो, जब वह पास आये, तो उस पर ये बड़े-बड़े पत्थर धकेल देना। एक दो उस तरफ जाकर कुम्भीर'' को खबरदार कर दो।'' कालशम्बर ने कहा।

मान्त्रिक यह कह ही रहा था कि महाकलि और उसके कुछ साथी सुरन्ग के पास आये।

''जय कुम्भवती! कहकर महाकलि ने अपनी गदा से हाथी पर धीमे से मारा। तुरन्त हाथी पानी में चला गया। इसके साथ वह हाथी भी जिस पर उसके अंगरक्षक थे, आगे बढ़ा। तुरंत बड़ा शोर हुआ। मान्त्रिक और

उनके मित्र जब उस तरफ गये, जिस तरफ से शोर आया था, तो उन्होंने देखा कि महाकलि हाथी से सुरन्ग के द्वार के पत्थर हटवाकर बाहर आ गया था। उसके पीछे अंगरक्षक का हाथी आया। तुरन्त सुरन्ग से जोर से शोर करते हुए पानी बह निकला।

कुम्भीर और उसके साथियों द्वारा पकड़े हुए शेर, चीते वगैरह उस पानी को देखकर बिदक उठे। वे उनको वश में कर रहे थे कि कहाकलि ने उसे देखकर पूछा "कुम्भीर ! तुम यहाँ क्या कर रहे हो? द्रोही, तुमने ही सुरन्ग के द्वार पर पत्थर रखवाये थे।" उसने हाथी उस पर दौड़ाया।

चूँकि कुम्भीर पहिले ही जानता था कि इस प्रकार की परिस्थिति पैदा हो सकती है, उसने अपना शेर महाकलि के हाथी की ओर दौड़ाया। फिर वह "राहु वंश की जय" कहता आगे बढ़ा। उसने अपना भाला निशाना लगाकर महाकलि पर फेंका। पर उसका निशाना चूक गया और वह जाकर हाथी को लगा। इससे हाथी डर गया। महाकलि को लगा। इससे हाथी डर गया। महाकलि ने उसे रोकना चाहा। पर वह चिंघाड़ता जंगल की ओर भाग गया।

महाकलि के साथी उसके पीछे-पीछे गये। कुम्भीर ने अपने साथियों को लेकर शेर के साथ महाकलि का पीछा किया। परन्तु इस बीच शशिकान्त में महाकलि का रास्ता रोका और उस पर बाण फेंकने लगा।

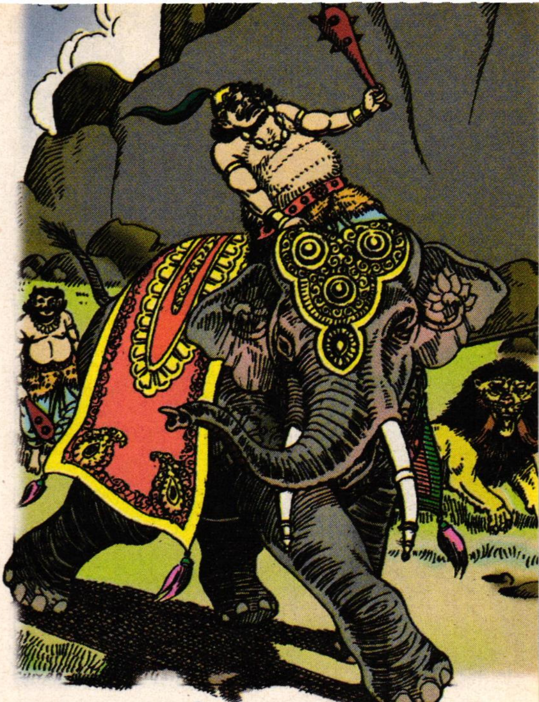

कालशम्बर मान्त्रिक "शाम्भवी" जोर से चिल्लाता, "उस दुष्ट का नाश करो, मैं आ रहा हूँ।" वह सुरंग से नीचे कूदा और तेजी से महाकलि की ओर दौड़ा। धूमक, सोमक और भद्र आदि भी मान्त्रिक के साथ भागे।

सुरन्ग से पानी की धारा में जो राक्षस बाहर बह आये थे कुम्भीर के लोगों नें उन्हें आसानी से मार दिया। वे तैरते-तैरते इतने थक गये थे कि वे उनका मुकाबला न कर सके। बाघ और चीतों ने उन पर कूदकर उनको चीर फाड़ दिया।

यह देखकर कि परिस्थिति प्रतिकूल थी महाकलि ने सोचा कि खड़े होकर लड़ने से भाग जाना अच्छा था। पर कालशम्बर और उसके साथियों ने उसका रास्ता रोक रखा था।

Thursday गुरुवार বৃহস্পাথিঁবার Bengali बृहस्पथिबार

"चाहो, तो उसे पहाड़ की ओर जाने दो। अगर वह जंगल में एक बार जा घुसा, तो हमें नहीं मिलेगा।"

महाकलि और उसके दोनों साथियों को चारों ओर से घेर लिया गया। जंगल की ओर से कुम्भीर और उसके साथी उस पर पत्थर और बड़ी-बड़ी टहनियाँ फेंक रहे थे और दूसरी ओर से शशिकान्त और सोमक बाण चला रहे थे। धूमक अपने दो साथियों को लेकर राजकुमारी कान्तिसेना और भामासिन्नी को वहाँ से कहीं दूर सुरक्षित ले गया था।

महाकलि जान गया कि वह बुरी तरह फंस गया था। वह गदा लेकर कुछ देर तक लड़ा। फिर वह अंगरक्षकों को खबरदार करके, शशिकान्त की ओर लपका। अपने बाणों से शशिकान्त हाथी को न रोक सका। महाकलि इस प्रकार शत्रुओं के घेरे को तोड़कर, पहाड़ों की ओर भागने लगा। उसके पीछे उसके अंगरक्षकों का हाथी था।

महाकलि जानता था कि बिना रास्ते के हाथी को लेकर पहाड़ पर चढ़ना असम्भव था। फिर उसे एक ऐसी गुफा दिखाई दी, जिसमें वह हाथी के साथ जा सकता था। उसने रुककर, अपने अंगरक्षकों से कहा - "हम शत्रुओं से बहुत दूर चले आये हैं। हम जिस गुफा में छुपने वाले हैं, उसका वे पता नगीं लगा सकते। वह जो सामने गुफा दिखाई दे रही है, हम उसी में जायेंगे। तुम भी आस पास किसी गुफा में छुप जाओ।"

महाकलि के अंगरक्षक, अपने सरदार के एक गुफा में पहुँच जाने के बाद अपने हाथी को पास की एक गुफा के पास ले गये। यह जानने के लिए कि कहीं शत्रु उनका पीछा तो नहीं कर रहे थे उन्होंने ध्यान से उस मार्ग की ओर देखा, जिससे वे आये थे। फिर उन्होंने हाथी को धीरे-धीरे गुफा की ओर चलाया। पर वे बड़े अभागे थे। वे होशियारी से हाथी को गुफा के अन्दर ले जाने वाले ही थे कि गुफा के उपरी भाग से एक पत्थर का लंगर, तेजी से घूमता- घूमता उनके गले पर लगा। उनको इतनी जबर्दस्त चोट लगी कि उनका सिर चकरा गया। वे चिल्ला भी न सके। वे हाथियों पर से धड़ाम से नीचे गिरे।

तभी ऊपर से अट्टाहास हुआ। कुछ और पत्थर उनके सिर पर गिरे। अंगरक्षकों के सिर फूट गये और वे वहीं ठंडे हो गये।

"राहु केतु वंशों का सर्वनाश हो।" कहता एक बौना राक्षस पत्थरों के पीछे से बाहर निकला और पत्थर के लंगर को जोर-जोर से धुमाने लगा।

उसकी बगल में उसकी जंगली पत्नी पीछे मुड़कर ताली बजाने लगी। दो तीन पल गुजर गये। कुन्तल देश का मन्त्री गंगाधार कुछ साथियों के साथ राक्षस के पास आया। राक्षस ने उसे वह गुफा दिखाई, जिसमें महाकलि छुपा हुआ था। वह जोर-जोर से चिल्लाने लगा, ताकि उस तरफ भागकर आनेवाले मान्त्रिक कालशम्बर और उसके साथी और तेजी से भागकर आये।

कुछ ही देर में मान्त्रिक, शशिकान्त, कुम्भीर गुफाओं के पास आये। मन्त्री गंगाधर पहाड़ से उतरकर आया। अपने लड़के से गले मिला। फिर आनन्द में उसके आँसू बह उठे। "शशि ! मैं शुरु से ही जानता था, कि तुम जीवित हो। यह बौना राक्षस दो तीन महीने पहिले हमारे राज्य में आया और उसने पाताल दुर्ग के भेदों के बारे में बताया। मैं थोड़ी सेना लेकर कुछ दिन पहिले ही यहां पहुँचा। मैने पाताल दुर्ग का सर्वनाश अपनी आँखों से देखा। अच्छा ही हुआ। राजकुमारी कान्तिसेना कहाँ है?"

कान्तिसेना और भामासिंगी थोड़ी देर बाद

वहाँ आये। मन्त्री गंगाधार ने राजकुमारी को उसके पिता उग्रसेन के बारे में कुशल समाचार बताये। "इस समय कदम्ब राज्य का कोई राजा नहीं है।" पर तुम्हारे उस राज्य में पहुँचते ही, लोग तुम्हें रानी बनाने के लिए तैयार हैं। फिर इसके बाद तुम जिससे विवाह करोगे वह कदम्ब राज्य का राजा होगा।"

"विवाह? शशिकान्त और राजकुमारी एक दूसरे से प्रेम करके बहुत पहले ही विवाह कर चुके हैं। मैं जब उसे उठाकर लाया था, तब मैने उसे जो वचन दिया था, आज पूरा कर दिया है। क्यों राजकुमारी?" कुम्भीर ने पूछा।

कान्तिसेना यह सुनकर लजा गई। कालशम्बर ने मन्त्री गंगाधर के सामने आकर कहा- "महामन्त्री! सब सुखान्त ही हुआ है।

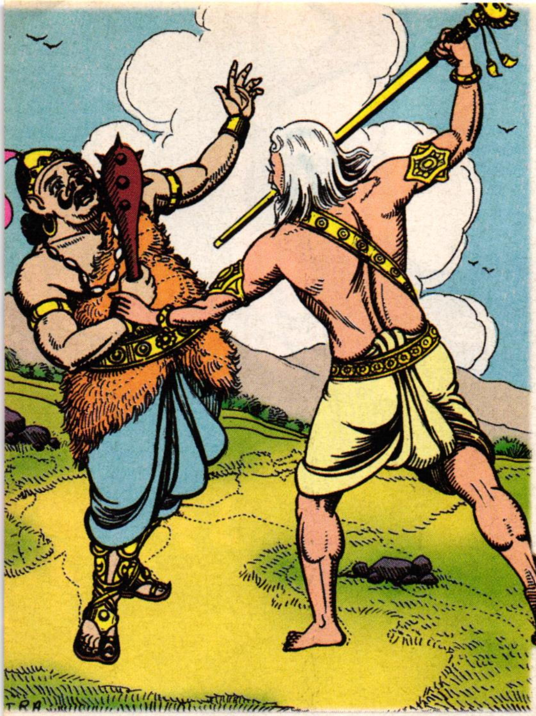

धूमक और सोमक की सहायता मत भूल जाइयेगा। भद्र तो आपका है ही।

मैने भी कुम्भीर को वचन दे रखा है। उसे यहाँ का राजा बनाकर मैं महाकाली की पूजा करने के लिए पहाड़ों में चला जाऊँगा।'' फिर उसके बौने राक्षस से पूछा - ''वह गुफा कौन सी है, जिसमें दुष्ट महाकलि छुपा हुआ है?''

बौने राक्षस ने गुफा दिखाई। मान्त्रिक गुफा के सामने गया। उसने मन्त्रदण्ड ऊपर उठाकर कहा - ''महाकलि ! बाहर निकलो, तुम्हारी मौत नजदीक आ गई है। मुझ से द्वन्द्व युद्ध करो। मेरे साथी तुम पर हथियार नहीं उठायेंगे। अगर तुमने मुझे जीत लिया, तो मेरे आदमी जहाँ तुम जाना चाहोगे, वहाँ जाने से तुम्हें नहीं रोकेंगे।''

तुरन्त महाकलि कन्धे पर गदा रखकर, गुफा से बाहर निकला। ''तो आओ हम द्वन्द्व युद्ध करें। मैने हाथी को गुफा में छोड़ दिया है, आओ ।'' वह मान्त्रिक की ओर लपका।

कालशम्बर ने उसकी चोट को पहले अपने मन्त्रदण्ड से रोका। ''पापी, मैं पहिले ही बताये देता हूँ, तुमने जिसको छुपकर मारा था, वे मेरे पिता थे यह उनका ही मन्त्रदण्ड है। यह तुम्हारे शरीर पर लगा नहीं कि पानी के बुलबुले की तरह तुम फूट जाओंगे। तो अब देखें, तुम्हारी का गदा का हुनर ।'' वह आगे बढ़ा।

मान्त्रिक की यह बात सुनते ही महाकलि घबरा गया। भय से काँपने लगा। गदा से मन्त्रदण्ड की चोट को बचाता, वह धीरे-धीरे पीछे हटने लगा। पर कालशम्बर ने महाकलि को भागने नहीं दिया।

महाकलि पर प्रहार करता गया और जब वह थक गया, ''दुष्ट अब मर'' यह कहकर उसने महाकलि के बायें हाथ से उसकी गदा ली और मन्त्रदण्ड को उसकी छाती में भोंक दिया। तुरन्त चौंधियाने वाला प्रकाश और कानफोड़ ध्वनि हुई। महाकलि का शरीर टुकड़े-टुकड़े हो गया और वह आकाश में जा उछला।

मन्त्री गंगाधर ने कालशम्बर की जय जयकार किया। मान्त्रिक ने कहाकलि की गदा कुम्भीर को देते हुए कहा- ''कुम्भीर तुम दण्डकारण्य के राजा हो। अगर पाताल दुर्ग कुछ बाकी रह गया है, तो वह तुम्हारी ही है।''

''महामान्त्रिक ! मैं आपका बड़ा कृतज्ञ हूँ। मैं प्रार्थना करता हूँ कि सरोवर के जल को पाताल दुर्ग के ऊपर न बहने दीजिये।'' कुम्भीर ने मान्त्रिक को नमस्कार करते हुए कहा।

''वह काम मैं पहिले करूँगा। पत्थर को यथास्थान पर रख देने से प्रवाह रूक जायेगा। घबराओ मत।'' कालशम्बर ने कहा।

मन्त्री गंगाधार उनके साथी और कुम्भीर के साथियों ने वह शाम खुशी और दावत में काट दी। गंगाधर दो दिन तक मान्त्रिक और कुम्भीर का अतिथि बन कर रहा। फिर वह शशिकान्त और कान्तिसेना को लेकर, कुन्तल देश की ओर निकल पड़ा।

जब सब जा रहे थे, तो कुम्भीर ने विरूप को अलग बुलाकर कहा - ''भामासिंगी के बारे में जरा सम्भलकर रहना। वह महाकलि पर मुग्ध हो गई थी और अन्तिम क्षण में उसने न आने की जिद भी पकड़ी। उसका मुख बन्द कर मैं जबर्दस्ती उसे अपने कन्धे पर डाल कर उठा ले आया था। यदि तुमने उसे ले जाकर, भीलों के सरदार पुलिन्द को न दिया, तो तुम दोनों की जिन्दगी भर की दुश्मन बन जाएगी।''

''वह उसकी दसवीं जवान पत्नी है। यदि उसे हाथ पैर बाँधकर उठाकर भी ले जाना पड़ा, तो उसे ले जाकर मैं उसे दे दूँगा। महाकलि को तो जीत लिया गया है। पर मुझे कोई खास खुशी नहीं हो रही है, चूंकि इस गड़बड़ी में काला गरुड़ कहीं चला गया है।'' विरूप ने दुखी होकर कहा।

''उस काले गरुड़ को इन पहाड़ों पर ढूँढ़ कर तुम्हारे पास भेजने की जिम्मेदारी मेरी है। ठीक है न?''

कुम्भीर ने, विरुप की कमर पकड़कर प्रेम से, उठाकर नीचे उतारा।

''आहा .. शाम्भवी मैं तो भूल ही गया था कि तुम एक राक्षस हो।'' विरूप जोर से हँसा और वह अपने साथियों से, जो काफी आगे चले गये थे, मिलने के लिए भागने लगा। *(समाप्त)*

Thursday गुरुवार ગુરુવાર Gujarati गुरुवार

अनुनिर्वा

वापसी

(रंगों का एक अद्भुत समुद्र मेरी आँखों के आगे फैला हुआ था। सर और पूँछें। टाँगें और दाँत। एक अनंत चित्रखंड पहेली। आँखें .....आँखें हज़ारों खतरनाक जानवरों की। सूर्य की रोशनी में चमकती हुईं। प्रतीक्षारत। देखते हुए। मेरी प्रतीक्षा करते हुए।)

चित्र लिखित सा मैं चाइनीज़ हाथी की औदार्यपूर्ण सहायता से पेड़ से नीचे उतर आया और इस सब को अंदर समाए जड़वत् खड़ा रह गया। अपने दादाजी सलाह सुनना मेरे लिए तसल्लीदायक और योजना के साथ चलने में सहायक रहा। दोबारा खूँखार जानवरों के समुद्र से रूबरू होना था जिनमें से हरेक बहुत ही कड़वा, बहुत ही न्यायोचित एक पुराने वैमनस्य को समेटे हुए था।

"तो हम चलें?" चाइनीज़ हाथी ने खींसे निपोरते हुए कहा। "मैं" ...मैं लड़खड़ाया। बेचैनी से मेरा पेट जकड़ गया। "चलो आओ, यह मात्र एक खेल जैसा ही होने वाला है! पूरा संसार एक रंगमंच है!" उसने खुशी से टिप्पणी की। इससे पहले कि मैं कुछ कह पाता, उसकी लंबी सूँड़ मेरे पैरों से लिपट गयी और मैं एक पल में उसकी पीठ पर था।

"हम अपनी यात्रा पर हैं!"

मैंने अपनी आँखें ज़ोर से बंद कर लीं। मैंने स्वयं को कायर महसूस किया। मैं भागने ......भाग जाने के और सामना न करने के अतिरिक्त कुछ नहीं करना चाहता था।

नगाड़े पिटने की आवाज़ें तेज़ और तेज़ हो गयीं ....और तब ....एक मौत जैसी खामोशी।

"मानव आ गया है।" मैंने मयूरी की ऊँची तथा ठंडी आवाज़ सुनी। "उसे नीचे बिठाओ!" एक रूखी आवाज़ का धमाका हुआ।

वह एक राजा की भाँति हम जैसों में से एक

के ऊपर बैठा हुआ है! दाँत पीसते हुए निकली आवाज़ बेशक नील मगरमच्छ की थी। मैंने स्वयं को आँखें खोलने के लिए राज़ी किया और अचानक डर से चाइनीज़ हाथी पर से नीचे गिर पडा। मैंने स्वयं को सबसे बुरे के लिए तैयार किया। लेकिन किसी बात से मुझे तसल्ली नहीं मिली। सबसे पहला तर्कपूर्ण विचार जो मेरे दिमाग में कौंधा वह था, वाह!

मेरे समक्ष बिखरी हुई जिंदगी इतनी विविध, इतनी विस्तृत, इतनी जीवन्त थी कि ईश्वरीय कृपा के उस महान क्षण में मैं स्वयं को .....आखिरकार .....पशु साम्राज्य में से ही एक महसूस करने लगा। जानवरों तथा मानवों के बीच का दुराव जो मेरे अंदर वर्षों से निहित था, मनुष्य की महानता, सभ्यता की गरिमा, चिकने सर्पों की तरह सब सरक कर बाहर आ गया। मैं एक जानवर था। ये मेरे लोग थे और मैं उन में से एक था।

खुशी की जो झलक मेरे चेहरे पर छलक उठी थी वह मेरे दर्शकों पर से गायब हो गयी।

एक विस्तारित व तेज़ सींग युक्त गाय जैसे दिखने वाले (प्रागैतिहासिक किस्म की गाय, मैंने अनुमान लगाया) विशालकाय प्राणी ने आगे कदम बढाया। वह मयूरी के बगल में शांति से खड़ी थी। मुझे उसके नथुने गुस्से से फूले हुए दिखाई दिए। यहाँ कोई था जो शक्ति से परिचित था। अपने समय में छत के ऊपर अपना एक खुर रख कर किसी भी घर का पापड़ बना सकती होगी। मैंने स्वयं को बिना श्रद्धा के नीचे झुकता हुआ महसूस किया।

"तुम पहले जाना चाहती हो?" मयूरी ने गाय से पूछा। मुझे आश्चर्य हुआ कि इसका मतलब क्या था। क्या जाना से मतलब उसके सींगों को मेरे

अंदर घुसेड़ देना था? यह कोई अच्छी खबर न थी। यह बिल्कुल भी अच्छी खबर नहीं थी।

"मयूरी", मैंने कहा। एक बहरा होने का अहसास देने वाली खामोशी पसर गयी। वह धीरे से मेरी ओर घूमी उसकी आँखें चमक रहीं थीं। उसने मुझे पहले ही शांत रहने की चेतावनी दी थी और मैं जानता था कि जैसे ही मैंने उसके चेहरे की ओर देखा उसने मुझे दोबारा कोशिश करने के लिए मुझे बेवकूफ समझा।

नील मगरमच्छ ने कुछ कहने के लिए अपना जबड़ा खोला ....बेशक मयूरी को नाम लेकर पुकारने की हिम्मत पर डाँटने के लिए, लेकिन मैं पहले से ही ध्यान रखे था। मैं उसकी ओर मुड़ा और बोला, चाटुकारिता बाद के लिए बचा लें।

मैंने सोचा मैंने मयूरी के आनंद लेते मुस्कान से

Thursday गुरुवार വ്യാഴം Malayalam व्याझम

खिंचे हुए होंठ देखे पर एक पल में वह गायब हो गयी। उसने सीधे मेरी आँखों में झाँका। ''बोलो, मानव'', उसने कहा।

''मैं अपने अपराधों को स्वीकार करता हूँ'', मैंने एक सपाट आवाज़ में कहा। मेरी आवाज़ बिना किसी कंपकपाहट के, मजबूत थी। मैं स्वयं इसकी बुलंदी पर चकित था।

उसने अपनी भँवें प्रशंसा में उठायीं। ''यह कहने के लिए तुम्हें किसने सिखाया?'' उसने पूछा।

''क्या?''

वही कहने के लिए।

''किसी ने नहीं।'' मैंने अपने अपराध की गंभीरता को महसूस किया। मैं वापस अपनी शांत आवाज़ पर आ गया। अचानक वह मुस्कुराई।

''अपराधी अपना गुनाह कुबूल करता है। न्याय सभा क्या कहती है?'' उसने मैमथ, नील मगरमच्छ, रैंगलर की ओर ..और जो मैं समझता हूँ सिंध नदी की डॉल्फिन की ओर देख कर पूछा।

वह एक शीशे बड़े बर्तन में शांति से आँखों वाले एक सोए हुए बबूले के पास लेटा था। वह विलुप्त प्राणी क्या था मुझे बिल्कुल नहीं मालूम था।

''हम साक्ष्यों की जाँच करना चाहते हैं'', नील मगरमच्छ बुरा मानते हुए बोला।

''क्या साबित करने के लिए?'' मयूरी ने पूछा।

''हम जो देने वाले हैं उस सज़ा की मात्रा साबित करने के लिए।''

''लेकिन उसका विरोध कौन करने वाला है? मानव, हम तुम्हें जो सज़ा देने वाले हैं क्या तुम उसे बिना किसी शर्त स्वीकार करते हो?'' उसने मुझे संबोधित किया।

भीड़ में एक धीमी फुसफुसाहट शुरू हो गयी।

''हाँ, मैंने कहा।'' आश्चर्यजनक रूप से मुझे बिल्कुल डर नहीं लगा।

''लेकिन हम उसके अपराध से पूर्णतया आश्वस्त होना चाहते हैं!'' नील मगरमच्छ ज़ोर से चिल्ला पडा।

''मैंने सोचा कि तुम उसके अपराध से किसी और की अपेक्षा अधिक आश्वस्त हो?'' मयूरी ने ठंडेपन से पूछा।

''मैं हूँ ....'' .सरीसृप पीछे घिसट गया। उसकी जालीदार आँखें एक पल के लिए टिमटिमाईं।

''लेकिन मुझे निश्चित रूप से नहीं लगता कि

और सभी हैं।''

''कौन विरोध प्रकट करना चाहता है?'' मयूरी ने पुकारा। वे आपस में खुसरपुसर करने लगे।

हवा में एक विचित्र सी बेकरारी थी जिसे मैं समझ न सका। क्या ऐसा था कि कुछ जानवरों मुझे वास्तव में दोषी नहीं मानते थे? नहीं चाहते थे कि मैं सज़ा पाऊँ? अनुनिर्वा में मेरे अनुभवों से याद करके तथा अभी जो सुना उसके आधार पर यह समझ पाना अतुलनीय दिखा और फिर भी उस संपूर्ण समग्र में उनकी हिचक ने यह जता दिया कि मैं एक दोषी मानव नहीं हूँ। मैंने स्वयं को फिर से जिंदा महसूस किया।

अचानक भारी गुर्राहट के साथ कुछ हवा में कूदा। एक सफेद साइबेरियन चीता। मैंने उसकी तरफ आश्चर्य से देखा। उसकी सहनशीलता निश्चय ही महान थी। बिल्लियों द्वारा मानवों की उपेक्षा करने तथा उन्हें निकृष्ट होने का अहसास कराने की अद्भुत योग्यता के साथ उसने मंच को पार किया और मयूरी की ओर मुँह करके खड़ा हो गया। वह बुरी तरह हाँफ रहा था जैसे कि किसी ने उसे शिकार के बीच में ही रोक दिया हो। उसकी असमान्य रूप से नीली आँखें समुद्र की भाँति शांत व धमकी भरी थीं।

''मुझे है'' उसने कहा।

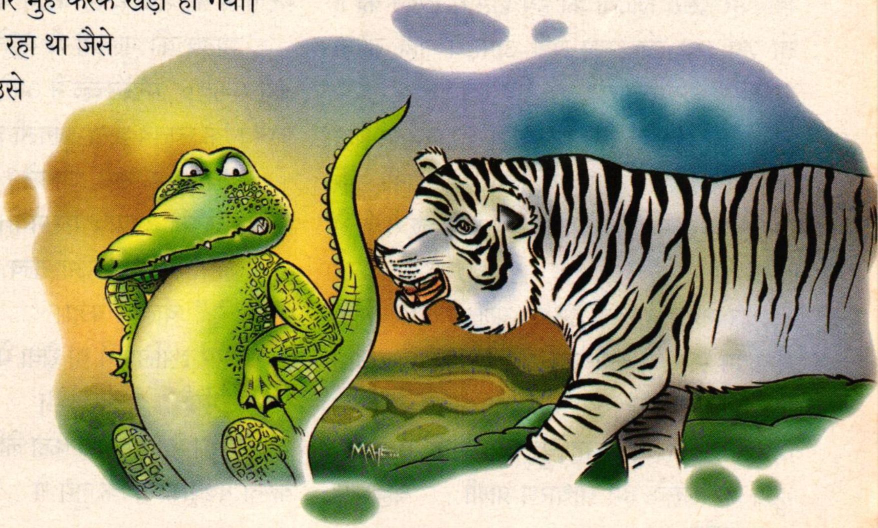

उसकी आवाज़ बहुत ही शालीन और गंभीर थी। इसमें ज्ञान का ओज़ भरा था। यह वह नहीं था जिसके बीच में कोई हस्तक्षेप करना चाहता, मैंने उसकी कमान सी तनी हुई पीठ को देख कर सोचा।

''किस आधार पर?'' नील मगरमच्छ की उपहास भरी आवाज़ आयी। ''क्या तुम इसे अनुग्रह समझते हो कि तुम शिकार हुए थे। यह हम जो कहते हैं, हो सकता है तुम्हारे लिए गर्व की बात हो कि तुम्हारी खाल मानव घरों में गलीचे के तौर पर इस्तेमाल की जाती है।''

चीते ने मगरमच्छ की चिड़चिड़ी आवाज़ को उपेक्षित कर दिया वह मयूरी की ओर शांति से लगातार देखता रहा और बोला - ''मैं कहता हूँ कि यदि मानव को सज़ा देनी है तो हमें एक जनमत लेना चाहिए।''

यह उम्मीद से परे था। मैंने गरिमामय खूँखार जानवर को आश्चर्य से देखा।

''अगर हम सभी सहमत हैं कि समस्या यदि

मानव द्वारा प्राणी विशेष के मध्य बिना कोई भेद किए हर दूसरी ज़िंदगी को हेय दृष्टि से देखने की है तो हम सब को स्वयं वही अपराध नहीं करना चाहिए,'' उसने कहा।

रेंगलर एक तीखी चीख के साथ शाख पर बैठा और गहरी सोच में डूब गया। चीते ने उसकी ओर अत्यधिक घृणा से देखा और अपनी पूँछ तेज़ी से हिलायी।

''मानवों को सज़ा देने का प्रण उनके अनुनिर्वा में कदम रखने से वर्षों पहले ही पारित हो गया था। शायद चीता भूल गया है,'' मगरमच्छ ने तल्ख आवाज़ में कहा। ''यह युद्ध की सभा में पारित हुआ था जिसके हम साधारण प्राणी...'' वह रुका और किसी एक भी प्राणी ने यह सोचने की भूल नहीं की कि चीते ने स्वयं को साधारण समझा है ...हिस्सा नहीं हैं। और फिर भी, बालों वाले मैमथ की भारी आवाज़ आयी, ''तुमने औपचारिक रूप से इसे रद्द करने की पूरी कोशिश की। मुझे याद है तुम्हारी यात्रा।''

चीते ने अपना लंबे घने बालों वाला सर झुकाया और कहा - ''मैंने कोशिश की। अपने समय में मैं कुछेक ही मानवों को जानता था और मैंने सोचा कि यदि हम संपूर्ण जाति को एक ही छड़ी से हाँकें यह अन्यायपूर्ण है।''

वह कैद में लाया गया! हवा में एक फुस्कार सुनायी दी।

''ऐसे ही मैं भी था। लेकिन इससे क्या?'' चीते ने शांति से कहा। ''अगर किसी को मेरे पंजों पर शक है तो कदम बढ़ाओ।''

''मानव की गुलामी में बढ़ते जीवन रूप बोल नहीं सकते!'' मगरमच्छ ने आरोप लगाया। वे नहीं जानते कि स्वतंत्र होना, जंगली होना क्या होता है!

''क्या हम नहीं जानते? यह गाय थी।'' मगरमच्छ की आवाज़ मर गयी।

''औरोच अपना अस्तित्व मानवों को प्रदान करता है,'' चीते ने कहा।

''और इसलिए मैं भी सेवा में अर्पित हो जाऊँ? ''गाय रंभाई ... ''औरोच''।

''नहीं। मैंने यह नहीं कहा लेकिन यह अस्वीकार करना बेवकूफी है कि तुम थे ...''

Friday शुक्रवार శుక్రవారం Telugu सुक्रवारम

"बस करो!" औरोच चिल्लाया। मैं उनके खेल का एक मोहरा बनाया गया था! यह कहने की हिम्मत भी न करना कि मैंने उसकी सेवा में कुछ भी प्रदान किया था!

चीते ने औरोच को क्षण भर के लिए दुख से देखा। उसने हल्के से अपना सर झटका और पीछे मयूरी की ओर देखा।

"सभासदों, आपकी क्या मांगें हैं?" उसने पूछा।

"हम अपराधों की सूची बनाएँगे।"

"हम प्रत्येक सदस्य को आरोप के साथ आगे आने तथा सज़ा देने के लिए आमंत्रित करेंगे।"

"हम अपने अपमान का बदला लेंगे।"

मैंने थूक निगला। चीता बिना एक पलक झपकाए सभासदों की ओर शांति से देख रहा था।

"यह यही था।"

"मैंने अपनी मुट्ठियाँ कस लीं और कहा," मैं तैयार हूँ।

आसमान से एक अजीब आवाज़ सुनायी दी। पंखों के फड़फड़ाने के जैसी आवाज़। मैंने सूर्य की रोशनी में चौंधियाते हुए ऊपर देखा। खूँखार जानवरों ने भी वही किया।

हमें एक छोटा सा काला बिंदु अपनी ओर आता दिखाई दिया। क्या यह एक चिड़िया थी? या एक हवाईजहाज़ था? क्या सुपरमैन था?

यह ...एक अंतरिक्षयान था! आसमान से लाल रोशनियाँ खुशी से चमक उठीं। क्या यह वही होगा ...क्या यह वही होगा जो लोगों ने भागने के लिए प्रयोग में लाया था व चकनाचूर हो गया था? लेमन और ओमेन ने कहा था अगर यह होगा तो वे अपनेआप अनुनिर्वा में लाए जाएँगे क्योंकि मानव किसी भी प्रकार से विलुप्त हो जाने वाले थे।

"वे आ रहे हैं, मयूरी की साँप जैसी कोमल आवाज़ मेरे कानों में रेंगी।"

"वे आ रहे हैं," नील मगरमच्छ ने कहा। उसके हरे शल्क भयानक रूप से चमके। "वे आ रहे हैं!, खूँखार जानवरों ने फुसफुसाते हुए कहा।"

रुपहले गोलक जैसी तश्तरी आसमान से एक वादे के चाँद की भाँति उतरी। तब जाकर मुझे अहसास हुआ कि मैं मानवों को कितना याद कर रहा था। *- आगे है*

- सौम्या राजेन्द्रन

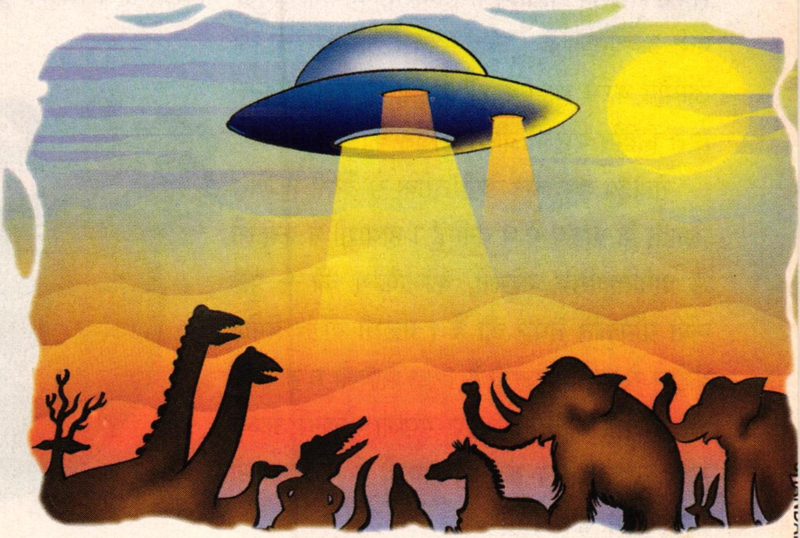

समाचार झलक

७३ वर्षों से पानी के अंदर कार

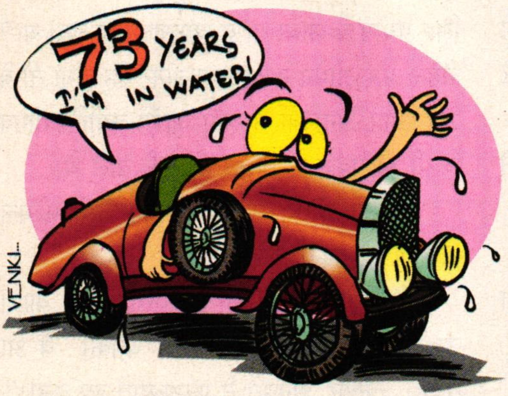

दुर्लभ ब्रैस्का बुगटी, एक प्राचीन कार, स्विट्ज़रलैंड की एल झील के तल में ७३ वर्षों के उपरान्त पायी गयी। कार १९३६ मे एक परेशान स्विस अफसर द्वारा फैंक दी गयी क्योंकि कार का मालिक बिना आयातकर दिए छोड़ दिया था।

कार की कीमत देय राशि से कम थी और व्यापार अधिकारी इसे नष्ट करने को मजबूर हो गया। वह इसे इटालियन सीमा पर मैगिओर झील तक चला कर लाया और इसे गहरे पानी में धक्का दे दिया। आश्चर्यजनक रूप से पानी में ७३ वर्षों तक पड़ी रहने के बावजूद इसके पहियों में हवा मौजूद है और इसकी बॉडी पर असली नीले रंग की आभा ज्यों की त्यों है!

बच्चों को पढाऩे के लिए रोबोट मछली

रोबोट मछली, मासामिची हायाशी, जापानी समुद्री जीवशास्त्री व शिक्षक द्वारा विकसित की गयी एक नयी अवधारणा है। उन्होंने पुनर्चक्रित वस्तुओं का उपयोग करते हुए एक सौ से भी अधिक जीवन्त, हस्त निर्मित मछली बोट्स सृजित की हैं।

रोबोट्स हमशक्ल उसी तरीके से तैरती हैं जिस प्रजाति के प्रारूप में वे बनीं हैं। हायाशी ने कछुओं से प्रागैतिहासिक मछली, कोलाकैन्थ की ५ फुट लंबी प्रतिकृति तैयार की है। मछली बोट्स रिमोट कंट्रोल से चलायी जाती हैं। कुछ मामलों में हायाशी खुद चलाते हैं जैसे कि बड़ी मछली मॉडल्स अपना खोल सकती हैं व बंद कर सकती हैं तथा नकली शिकार खा सकती हैं!

Friday शुक्रवार শুক্রবার Bengali शुक्रबार

उदीयमान सितारा

छोटी सी बात -

- क्या आप टी वी पर ड्रैगन बॉल्ज़ कार्यक्रम के शौकीन हैं? रामन भी है!

उपलब्धियाँ -

- खेलों के लिए प्रोत्साह उगडी, २००५ पुरस्कार विजेता
- कैडिट बॉयज़ डिविज़न में राष्ट्रीय चैंपियनशिप - सिल्वर मेडल विजेता, २००५.
- ताइयुन्ग जूनियर अंतर्राष्ट्रीय टूर्नामेंट, चीन, २००६ के कैडिट बॉयज़ टीम इवेन्ट में कांस्य पदक विजेता.
- फाजिर अंतर्राष्ट्रीय चैंपियनशिप, ईरान की कैडिट सिंग्लस में रजत पदक, डबल्स तथा कैडिट बॉयज़ डिविज़न टीम इवेंट में कांस्य पदक विजेता
- ४ वर्षों तक स्टेट चैंपियनशिप विजेता

वेंकट रामन

विशाखापटनम का टेबल टेनिस स्टार वेंकट रामन मात्र १५ वर्ष का है लेकिन वह हमारे देश के उच्चकोटि के खिलाड़ियों में से एक माना जाता है। केवल १० वर्ष की उम्र में ही वह कैडिट टीम का कैप्टन बनाया गया! जब वह ७ वर्ष का था तब अपनी बहन प्रनीथा को खेलते देखकर उसे यह खेल खेलने की प्रेरणा मिली। वह प्रतिदिन दो घंटे अभ्यास करता है और उसे टाटा राव, अशोक कर्माकर, अच्युत कुमार तथा अपने पिता द्वारा प्रशिक्षण दिया जाता है!

रामन कहता है, खेल में मेरे पिता मेरे प्रशिक्षक हैं तथा पढाई में मेरी माँ मेरी प्रशिक्षक हैं। लिटिल एंजिल हाईस्कूल भी उसकी थोडी. मदद करता है: जब भी उसे टूर्नामेंट में भाग लेना होता है वह छुट्टी ले सकता है। उसके मित्र उसकी परीक्षाओं की तैयारी करने में मदद करते हैं। वह कहता है, इसने मुझे सिखाया कि किसी भी खिलाडी. को कम नहीं समझना चाहिए। भारत के उच्चकोटि के खिलाडी.शरथ कमल उसके आदर्श हैं।

अपने भविष्य के लिए रामन की महत्वाकांक्षी योजनाएँ हैं - IIT में प्रवेश तथा साथ ही टेबल टेनिस खेलते रहना! उसका कहना है, अगर आप एक खेल को पसंद करते हैं तो उसके प्रति पूरी तरह समर्पित होना चाहिए!

चन्दामामा की ओर से पिंग पोंग चैंप को बहुत-बहुत शुभकामनाएँ!

हँसते - हँसते हो जा लोट पोट

रौनक - मैंने यह नया लहसुन संतुलित भोजन इस्तेमाल किया, जो मेरे डॉक्टर ने दिया। मुझे लहसुन नाश्ते, दोपहर के भोजन तथा रात के भोजन में खाने हैं।

विशाल - क्या तुम्हारा वज़न कुछ कम हुआ।

रौनक - नहीं। पर मेरे मित्र काफी कम हो गए।

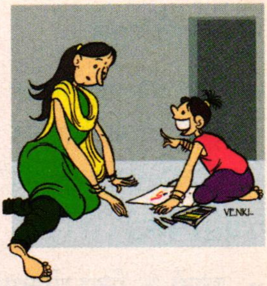

माँ - तुमने अपने विद्यालय में पहले दिन क्या सीखा?

बेटी - कुछ नहीं!

माँ - क्या तुमने संख्याओं तथा अक्षरों के बारे में सीखा?

बेटी - माँ, क्यों न तुम एक बच्चे की तरह विद्यालय चली जाओ?

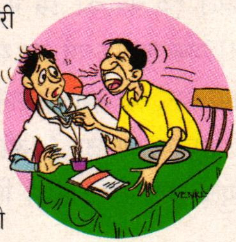

मरीज़ - डॉक्टर, मेरी मद कीजिए मैं बहुत दबाव में हूँ। मैं लोगों पर बहुत जल्दी आपा खो बैठता हूँ।

डॉक्टर - मुझे अपनी समस्या के बारे में बताओ।

मरीज़ - मैंने अभी बतायी। अरे मूर्ख, क्या मैंने नहीं बतायी !!

दो मनोवैज्ञानिक बीस साल बाद मिले। एक बहुत बूढ़ा दिखता था।

उसने जवान दिखने वाले से पूछा, तुम्हारा रहस्य क्या है? लोगों की समस्याएँ सुनने से मैं बूढ़ा हो गया।

जवान दिखने वाले ने कहा, कौन सुनता है?

दत्तू

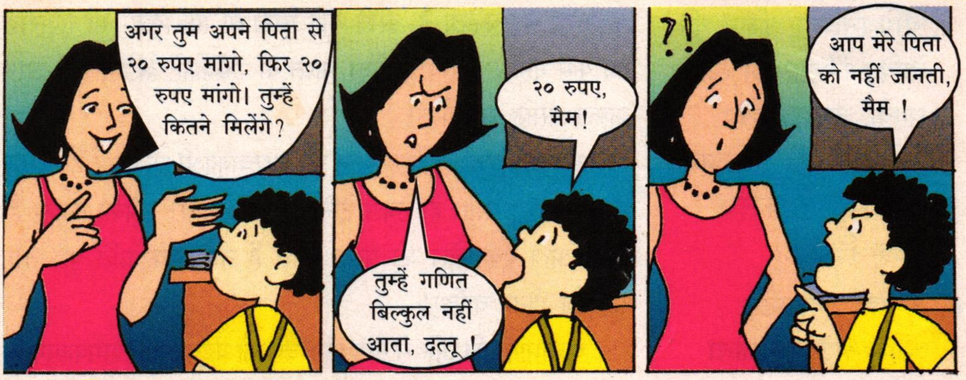

Friday शुक्रवार ಶುಕ್ರವಾರ Kannada शुक्रवार

Coal can be mined with green fingers too

As an extensive drive to maintain ecological balance, we restore mined out areas to the pre-mining conditions, sometimes better than before. Coal India Limited ensures an eco-friendly world. ***Today and forever.***

कोल इंडिया
Coal India

COAL INDIA LTD.
A Navaratna Company
www.coalindia.nic.in

CHANDAMAMA (Hindi) March 2010 Registrar of Newspapers of India No. 1087/57. Regd No. TN/CH(C)/217/09-11
Licensed to post WPP - Inland No.TN/CC(S)Dn/92/09-11, Foreign No. 93/09-11 MH/MR/N/ 130 /MBI/10-12